CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Jawahar Dhoni

Not-Book

Jha Shatt Katra

Sivath Bhatt

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदह विद्या

चौसठ कला

सम्पादक

राजेन्द्र कुमार बी. ए

प्रकाशक

गुप्ता एण्ड को०, थोक पुस्तकालय

खारी बावली दिल्ली-६

मूल्य ४)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक :

गुप्ता एण्ड को०, थोक पुस्तकालय

खारी बावली, दिल्ली-६

नवीन परिवृद्धित व संशोधित संस्करण

प्रताप प्रन्टिग प्रेस, लौहरी गेट दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची

प्रस्तुत पुस्तक चौदह विद्या व चौसठ कलाओं का नवीनतम संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत है। समय के अनुसार परिवर्तन अनिवार्य है। वर्तमान समय में चौदह विद्या व चौसठ कला एक वाक्य न होकर केवल प्रायवाची शब्द ही रह गया है। इस पुस्तक में हमने वो तमाम विद्याये व कलायें दी है जो कि किसी भी मनुष्य को जीने के लिये आवश्यक हैं। आज के युग की अत्यन्त प्रमुख विद्या व कला है जो कि सुख धन, धान्य लाती है व है कमाने की विद्या। इसमें ही तमाम विद्याओं व कलाओं का समावेश है। धन सुख लाता है व निर्धनता—विपत्ती और दुख इस बदलते हुये युग में इन्सान साईकिल व रेल के युग से आगे निकलता हुआ ऐटोमिक व स्पुतनिक युग में प्रवेश कर चुका है। इसलिए हमें भी पुरानी परम्पराये त्याग कर आगे बढ़ना चाहिये। हमें विश्वास है यह पुस्तक आपको उन कलाओ व विद्याओं से परिचय करायेगी।

अपने पाठकों की जानकारी के लिये हमने अनेक विद्याये व कलाये भी इस पुस्तक में दीं है। उन कलाओं व विद्याओं की सूची निम्न है।

धन कमाना	योग की अष्ट विद्याये	सूर्य्यो पासना
खाद्य	ईश्वर उपासना	वीजमन्त्र
योग विद्या	संयम	चन्द्रोपासना
कामकला	समाधि	यन्त्र वीसवाँ
सम्भोग	इन्द्रिय आठ सिद्धियाँ	
ऐलोपैथिक	हिटनाटिज्म	
होम्योपेथिक	मृत आत्मा बुलाना	
प्रकृति चिकित्सा	मिस्मरेजम	
प्रणायाम विद्या	विराट सिद्धियाँ दर्शन	
स्वाध्याय	छाया मन्त्र विद्या दर्शन	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हारमोनियम गाइड—आज तक छपी तमाम हारमोनियम विषय पर छपी पुस्तकों में उत्तम व परिमाणिक है। इस पुस्तक की सहायता से आप स्वयं हारमोनियम बजाना सीख सकते हैं। इस पुस्तक में नए-नए तर्ज के सिनेमा संगीत की पूरी सरगम व गायन तर्ज रागनी, गजल, दादरा, ठुमरी, कव्वालीयां आदि सरगम नम्बर के साथ दी गई हैं। ४०० पृष्ठ बढ़िया कागज पर छपी पुस्तक। मूल्य ५) डाक खर्च १।) पृथक।

इलैक्ट्रिक गाइड-(नवीन संस्करण) केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों द्वारा स्वीकृत इलेक्ट्रिक सुपरवाइजरी परीक्षा के सिलेबस के अनुसार लिखी गई है इस पुस्तक में इलैक्ट्रिकसिटी के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान इलैक्ट्रिक बेट्रीज, ए० सी० डी० सी० मोटर्स, स्विचबोर्ड, आर्मेचर वाइंडिंग, ट्रांसफार्मर का पूरा वर्णन किया गया है। साथ ही वे परीक्षा पत्र व इलैक्ट्रिक सिटी रूल्स भी दिये गये हैं। सजिल्द बढ़िया पेपर पर छपी पुस्तक, सैकड़ों चित्रों सहित मूल्य केवल ४) डाकखर्च १।)

रेडियो गाइड—परीक्षा के सिलेबस के अनुसार इस पुस्तक में ए० सी० डी० सी० रेडियो की पूरी व मरम्मत ओवरहालिंग ट्रांसमीटर सिगनल, आक्सीलेटर व रेडियो सम्बन्धी अनेक बातें चित्रों सहित दी गई हैं। रेडियो इंजीनियर्स, व रेडियो का काम सीखने के कार्य में दिलचस्पी रखने वालों के लिये उपयोगी है। मूल्य ३) डाक खर्च १।)

खराद व वर्कशाप ज्ञान—इस पुस्तक में खराद व वर्कशाप सम्बन्धी तमाम जानकारियां चूड़ियों का हिसाब, नाप तौल का ढंग, डलाई मिलिंग मशीन के तरीके वर्कशाप सम्बन्धी तमाम जानकारियां, टांका लगाना, फिटिंग के लाभ, धातुओं की किस्में सब चित्रों के साथ समझाया गया है, सैकड़ों चित्रों सहित सजिल्द पुस्तक का मूल्य ६) डाक खर्च १।।) पृथक।

गुप्ता एण्ड को०, थोक पुस्तकालय (B 64), खारी बावली, दिल्ली-6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदह विद्या

चौंसठ कला

दारिद्र्याद्धि ह्रीमेति ह्रीपरिगतः सत्वत्परिभ्रश्यते
निः सत्वः परिभूयते परिभवान्नि वेर्दरा पद्यते ।
निर्विण्णः शुचमेति शोकनिहतो बुद्धया परित्यज्यते
निर्बुद्धिः क्षयमेत्यदो निर्धनता सर्वाप्रदामास्पदम् ॥

निर्धनता से मनुष्य को लज्जा होती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट होता है, पराक्रम न होने से अपमान होता है, अपमान होने से दुःख पाता है, दुःख से शोक करता है, शोक से बुद्धिहीन हो जाता है और बुद्धि न होने से नाश हो जाता है ! अहो निर्धता सब आपत्तियों का स्थान है ।

संसार के समस्त सुखों का साधन धन है । धन की महिमा कौन नहीं जानता ? धन लोक-परलोक दोनों का बताने वाला है । धन की निन्दा करने वाले धन का नहीं वरन् धन के दुरुपयोग की निन्दा किया करते हैं । अनेक प्रशंसनीय और उच्च से उच्च गुण धन से ही सम्बन्ध रखते हैं । धन के बिना दान पुण्य यज्ञ दया न्याय त्याग आदि शब्द निरर्थक हो जाते हैं । धन ही सब कुछ हो, जीवन का लक्ष्य ऐसा तो नहीं, किन्तु गृहस्थ के लिए धनहीन होना सब दुःखों का मूल और पाप है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम अपनी निर्धनता का दोष राजनैतिक परिस्थिति के मत्थे मढ़ा करते हैं। एक समय था कि हमने देश देशान्तरों को अपने मालसे पाट दिया था। रोम के फैशनेबिल औरतों के घरों में सारी सजावट की चीजें भारतवर्ष की बनी हुई दृष्टि-गोचर होती थीं। सीनेट को आये दिन यह चिन्ता रहती थी कि भारत के माल को कैसे रोका जाय। विलायत को ही बड़े-बड़े भयंकर कानून जुर्माने और सजाओं द्वारा भारत के माल से छुटकारा मिला था। आज हमारी उल्टी ही स्थिति है। हमें पिन और सुई तक के लिए विदेशों का मुँह ताकना पड़ता है। इसका कारण क्या है? राजनैतिक परिस्थति नहीं, खुद हमारी उद्योग हीनता। हम ज्यों-ज्यों आलसी और उद्योगहीन होते गए त्यों-त्यों ही विदेशियों की कूटनीति हम पर सफल होती गई और हम स्वामी से दास बन गए। जब तक हम अकर्मण्य, आलसी और निराशावादी बने रहेंगे, परिस्थिति कदापि हमारे अनुकूल न होगी।

मनुष्य अपना वातावरण खुद बनाता है और राज्य व्यक्ति-गत जीवन का ही प्रतिबिम्ब होता है। जब तक हमारे व्यक्ति-गत जीवन में उद्योग और क्रियाशीलता न आयेगी तब तक हम निर्धन ही बने रहेंगे। चीन हमारे देखते-देखते क्यों छिन्न-भिन्न हुआ जा रहा है? व्यक्तिगत आलस्य से। जापान की अद्भुत सफलता का कारण क्या है? व्यक्तिगत उद्योग।

ऐलिजाबेथ के काल में अंग्रेज प्रजा की इतनी आजादी प्राप्त न थी जितनी आज है। किन्तु उस समय की प्रजा परि-श्रमशील अधिक थी। उसने रात दिन के अथक श्रम से उन समुद्रों को मझार डाला था जिन पर कि परिन्दा भी पर न मारते थे। इसके फलस्वरूप उसको मिला संसार का महान् साम्राज्य।, अरब, पुर्तगाल, स्पेन, हालैण्ड तथा फ्रान्स उसे रोक न सके। आज उसी अंग्रेजी प्रजा के उद्योग में थोड़ी ही कमी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आई है जिसका परिणाम यह है कि वह जो वस्तु कनाडा आदि देशों में १२ शिलिंग में प्रस्तुत करती है जापान उसी तरह की चीज १३ पैंस में उन्हीं देशों में बेच रहा है। जापान की पुलिस अंग्रेजी नाविकों को निरपराध पीटती और अपमानित करती है किन्तु अंग्रेजी प्रजा जापान से केवल न्याय के लिए प्रार्थना करके ही रह जाती है।

हमारे देश के निरुत्साह नवयुवक जो स्कूल और कालिजों की जनानी शिक्षा की डिग्रियों से तो विभूषित हैं परन्तु जिनको आता जाता खाक नहीं, जो किसी आजाद व्यवसाय की अपेक्षा क्लर्की अधिक पसन्द करते हैं जो हजारों रुपये में ग्रेजुएट की पदवी प्राप्त करने के बाद छोटी से छोटी चपरासगीरी और कान्स्टेबिली के लिए अर्जियाँ देते फिरते हैं, जो केवल इस लोभ से कि हम हकूक के बाँट में से उनके हिस्से में आए हुए आने दो आने उनको मिल जाया करेंगे बरसों अनपेड ऐपरेन्टिस बने रहना स्वीकार करते हैं, किन्तु ईमानदारी से कोई मजदूरी करना गवारा नहीं करते, अनुकूल राजनैतिक परिस्थिति से क्या लाभ उठा सकेंगे। उनकी शिक्षा का उद्देश्य तो केवल अंग्रेजी अक्षर ज्ञान कराकर सरकारी दफ्तरों में क्लर्की आदि की योग्यता प्राप्त करा देना ही रहा है। फिर उनमें स्वावलम्बन महत्वाकांक्षा और कमाने गमाने का साहस कहां से हो। कठिनाइयों का सामना करने में ही सुख उन्हें कैसे प्रतीत हो? उन्होंने तो औरतों की तरह अपने को सँवारना ही सीखा है। उनका स्वभाव भी विलासप्रिय और क्षणिक स्वार्थ को देखने वाला बन गया है। उन्हें तो वही प्रिय लगता है जो आसानी से बिना परिश्रम के प्राप्त हो जावे। अतः वे अपने जीवन का अधिकांश तथा उत्तम भाग नौकरियों की निरर्थक खोज में ही नष्ट कर बैठते हैं। साफ निराशा तथा जीवन का उचित उद्देश्य न होने के कारण बिना पतवार की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाव के समान इधर-उधर टकराकर नष्ट हो जाते हैं। परिस्थिति ऐसे युवकों की क्या सहायता करेगी। और पौरुषी गुण धारण किये बिना परिस्थिति बदल भी कैसे सकती है ?

फूट और संगठन का न होना दास्ता के चिन्ह हैं। आलस्य दास्ता का मूल है। परिश्रमी स्वयं ही बिना चेष्टा संगठित हो जाते हैं। उन्हें बात-बात पर झगड़ने के लिए अवकाश ही नहीं होता। चींटी जैसे छोटे-छोटे जन्तु भी यदि संगठित दिखाई देते हैं तो केवल व्यक्तिगत उद्योग के कारण।

यदि आप चाहते हैं कि आप अपनी तथा देश की कंगाली को दूर कर उन्नति के मार्ग में अग्रसर हों, यदि आप सुख और धन की अभिलाषा रखते हैं तो आज ही से आपको उद्योग के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। धनोपभोग बिना तप के सम्भव नहीं। उद्योग ही का नाम तप है। वही जाति कंगाल बनी रहती है भूखी मरती है जो उद्योग नहीं करती। सेण्टपाल का कथन अक्षर २ सत्य है कि उद्योगरहित को खाने का अधिकार नहीं।

सच्चे प्रयत्न में बाहरी शिक्षा की भी आवश्यकता नहीं रहती। उद्योग स्वयं अपना गुरु है। आप आज ही से दृढ़-प्रतिज्ञ होकर जुटिए आवश्यक जानकारी अपने आप उपस्थित होती चली जायगी। यूरोप वालों ने बड़ी २ मशीनें ईजाद कर डालीं, क्या वे इनकी शिक्षा प्राप्त करने किसी अन्य लोक में गये थे ? आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ईजादों का अधिकांश भाग अपढ़ किन्तु उद्योगी मजदूरों द्वारा हुआ है। दिल लगाकर काम करते-करते उनको जैसी-जैसी आवश्यकता होती गई उनकी बुद्धि धीरे-धीरे उसकी पूर्ति करती गई और विशाल तथा शक्तिशाली कलें तैयार हो गईं। व्यक्तिगत उद्योग ही यूरोप की उन्नति का रहस्य है। उद्योग तथा व्यवसाय चातुर्य चारपाई में पड़े-पड़े नहीं प्राप्त हो जाते। वह तो आँखें खोलकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्य करने से ही प्राप्त होते हैं।

यदि आप बड़े-बड़े पूंजीपतियों की जीवनियाँ पढ़ें तो आपको ज्ञात होगा कि इनमें से अधिकतर पहिले पहल अत्यन्त निर्धन और कंगाल थे किन्तु वे अकस्मात ही धनी नहीं हो गए। वे दृढ़ता के साथ जीवनपर्यन्त अपने नियत किये हुए ध्येय का पीछा करते हुए धैर्य और साहस के साथ उन्होंने सारी कठिनाइयों का सामना किया। अन्त में सफलता उनकी चेरी बन गई। लक्ष्मी उनके पराक्रम पर मुग्ध होकर उनके पैर चूमने लगी। कोई मिट्टी के तेल का राजा बन गया तो कोई इस्पात का, और किसी ने जहाज इञ्जन या अन्य मशीन प्रस्तुत करके धन और यश प्राप्त किया। आप भी अपना कुछ ध्येय निश्चित कीजिए और साहस एवं दृढ़ता से कार्यक्षेत्र में उतर आइए। विजय आपके लिए दूर न होगी।

करें तो क्या करें यह प्रश्न आपको तब तक कठिन ही प्रतीत होगा जब तक आलस्य और हृदयस्थ निर्बलता के बोझे को निकालकर फेंक न देंगे। जब तक आप इनसे दबे हुए रहेंगे, आपको कुछ न सूझ पड़ेगा। आप जिस काम पर भी निगाह डालेंगे तो या तो काम आपके योग्य न जंचेगा या आप स्वयं काम के योग्य प्रतीत न होंगे। इनसे छुटकारा पाकर दृढ़ बनते ही आपकी आंखें खुल जावेंगी। फिर आपको उल्टी हुई कोयलों की गाड़ी पग-पग पर मिल जायेगी, आपमें मरे चूहे से भी सम्पत्ति बनाने की सामर्थ्य आ जायगी फिर आप भाग्य के भरोसे न बैठे रहेंगे, दैव को कोसना छोड़ देंगे। ईश्वर ने सब कुछ कर लेने योग्य सम्पत्ति आपके शरीर तथा बुद्धि के रूप में आप को दे रक्खी है। क्या आप इसका एक अंग नाक या कान सौ दो सौ या हजार, दो हजार रुपये में बेचना स्वीकार करेंगे, यदि नहीं तो आप कंगाल कहां हैं। आपकी कमजोरी ने ही आपको कंगाल बना रक्खा है। दिव्य से दिव्य गुण आपके पास मौजूद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं किन्तु आप उनसे काम नहीं लेते। नित्य नये अवसर आपको प्राप्त हैं किन्तु आप उनसे लाभ नहीं उठाते, इसमें भाग्य तथा विधाता का क्या दोष?

आप देखते हैं कि विदेश से व्यापारी कौड़ी पैसों के मोल में चीजें तैयार करके उनसे रुपये बना बनाकर ले जाते हैं। उनमें से बहुत सी वस्तुएं तो किसी मशीन, भारी पूंजी या बड़े अनुभवके बिना घर पर ही आसानी से तैयार की जा सकती हैं, उनसे हजारों रुपये कमाये जा सकते हैं और देश का धन बाहर जाने से रोका जा सकता है इतना ही नहीं, यहां की बहुत सी दस्तकारियों की (जैसे मुर्शिदाबाद, मैसूर, ट्रावनकोर का हाथी दांत का काम, ढाका का शंख और सीप का काम, काश्मीर सहारनपुर नैपाल राजपूताना, अहमदाबाद, मैसूर का लकड़ी की नक्काशी का काम, मुरादाबाद के कलई के बरतन और मुरादाबाद, जयपुर पोशावर, मुल्तान की नक्काशी और मीनाकारी का काम, लखनऊ का जरी का काम तथा मिर्जापुर की कालीन, आगरा, अमृतसर की दरियाँ आदि) विदेश के व्यापारों में अब भी वहाँ की रुचि के अनुकूल सामान बनाकर मांग पैदा की जा सकती है। यह सारा क्षेत्र आपके उतरने भर की बाट देख रहा है। आपको इसके लिए बहुत सी सामग्री, यदि आप ध्यान से पढ़ेंगे तो इस पुस्तक में मिल जायगी। साहस कीजिए और विजय लक्ष्मी आपके हाथ है। एवमस्तु।

यहां दो कहानियों की ओर संकेत है—(१) एक नवयुवक की सारी जायदाद ऋण में बिक गई थी। वह नित्य एक टीले से उस जायदाद को देखकर हाथ मसलता। यह सब कुछ करते हुए भी उसे यह न सूझ पड़ता कि क्या करे। एक दिन टीले पर से देखते हुए उसने प्रतिज्ञा की कि इस जायदाद को अवश्य वापिस लूंगा, और घर को वापिस चला दिया। रास्ते में कोयलों की गाड़ी उलटी हुई देखी। गाड़ी वाले और कोयले के मालिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में कुछ झगड़ा हो रहा था और गाड़ी वाला कोयला ले जाने के लिए राजी न था। नवयुवक ने कोयला सर पर लादकर डाल देने के लिए मजदूरी तय कर ली, और इतनी मेहनत और तेजी से कोयला ढो डाला कि मालिक ने खुश होकर मजदूरी के पैसों के साथ खाना भी खिला दिया। पहले उसको कुछ करने को दिखाई न देता था किन्तु अब पग-पग पर काम पैदा होने लगा। जो काम सामने आता वह कर लेता। इस तरह धीरे २ उसने कुछ धन एकत्रित करके कुछ भवेशी खरीद लिए, और बुद्धिपूर्वक काम करते २ अंत में अपनी जायदाद ही नहीं, किन्तु इतनी ही और जायदाद मोल ले ली।

(२) एक लड़के को जिसका पिता मर गया था उसकी मां ने अपने एक धनी रिश्तेदार के पास कुछ ऋण लेने को भेजा। उस धनी के फर्श पर एक मरा हुआ चूहा पड़ा था। कुछ आदमी और ऋण की याचना कर रहे थे। वह कह रहा था कि तुमने मेरा पहले सारा रुपया नष्ट कर दिया मैं और ऋण नहीं दूँगा। यदि तुम बुद्धि पूर्वक चलते तो इस मूषक से सम्पत्ति बना सकते थे। यह सुनकर लड़का मूषक लेकर चला आया। रास्ते में एक आदमी एक पालतू बिल्ली से खेल रहा था। लड़के ने कहा कि यदि तुम मुझे कुछ जौ दो तो मैं यह मूषक तुम्हारी बिल्ली को खाने के लिए दे दूं। सौदा पट गया और वह कुछ जौ के दाने लेकर घर आया। स्वयं ही उसने उन्हें भून कर और पीसकर एक घड़ा जल में मिलाकर थोड़ा नमक डाला और उसे लेकर रास्ते पर जहां से लकड़हारे शहर को लकड़ी बेचने के लिए जाते थे एक पेड़ के नीचे बैठ गया। वह नित्य जौ का पानी लकड़हारों को पिलाता और उनसे थोड़ी लकड़ी ले लेता और शाम को उन लकड़ियों को शहर में बेच डालता इसी तरह करते-करते अन्त में उसने इतना रुपया जमा कर लिया कि वह उन लकड़हारों की सारी लकड़ी मोल ले लेता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और वाजार में नफे से वेच देता। धीरे २ लकड़ी की टाल भी खुल गई। वड़े-वड़े ठेके भी मिलने लगे। अन्त में मकान और जायदाद भी हो गई। फिर वह सोने का चूहा वनवाकर धनी साहूकार के पास ऋण चुकाने गया और वह अवसर उसे याद कराया। साहूकार इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपनी पुत्री के साथ विवाह कर दिया और वहुत सी सम्पत्ति भी दे दी।

दूसरा अध्याय

आवश्यक सम्पत्ति

यह व्यापारिक युग हमको शिक्षा देता है कि जातियों तथा व्यक्तियों के लिए धन धान्य सम्पन्न बनने का एक उपाय व्यापार ही है यदि वह सही और वैज्ञानिक रीति से किया जाय। आज व्यापार क्षेत्र इतना लम्बा चौड़ा और अवसर इतने अगणित हैं कि यदि आप इनसे लाभ उठाने का साहस करें तो आपकी वड़ी से बड़ी आकांक्षायें पूरी हो सकती हैं। यदि आपकी अभिलाषा है कि सुख और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करें तो निराशा के गढ़े से निकाल कर अग्रसर हूजिये। दृढ़ता और परिश्रम से अपने अन्दर आवश्यक गुणों का विकास कीजिये। सफलता निश्चित है।

इन गुणों को प्राप्त करने के लिये आपको किसी नई यूनिवर्सिटी में जाने की आवश्यकता नहीं। साधारण जीवन की नित्य की चिन्ताओं और कठिनाइयों का सामना करने से ही जो अनुभव प्राप्त हो सकता है वह संसार के वड़े-बड़े काम के लिये काफी है। कठिनाइयों से दूर न भागिये सचेत होकर रहिये किसी भी काम को लापरवाही और जल्दबाजी के साथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न कीजिये। छोटी से छोटी बात पर ध्यान दीजिए। उच्च से उच्च गुण आपके अन्दर स्वतः विद्यमान हो जायेंगे।

सफलता उन साधारण बातों पर ही निर्भर है जिनको आपने तुच्छ और छोटी समझ रखा है। एक चित्रकला सीखने वाला अपने चित्र को ठीक कराने के लिए अपने गुरू के पास ले गया। गुरू ने जहां तहां थोड़ा २ शोध कर दिया। चित्र का भाव बिलकुल बदल गया। शिष्य चकित होकर बोला कि गुरू जी आपने बदली तो बहुत थोड़ी २ बातें हैं। गुरू ने उत्तर दिया हां पूर्णता छोटी बातों से ही प्राप्त होती है और पूर्णता एक छोटी बात नहीं है। एक बड़े रईस की एक जायदाद जिसमें कुछ कोठियां मय फर्नीचर के भी थीं नीलाम हुई। दखल लेने के दूसरे ही दिन खरीददार रईस के पास आया और एक अलमारी तलब की। रईस ने क्षमा मांगते हुए कहा यह अलमारी मैंने यह समझकर उठवाली थी कि आप इतनी बड़ी लम्बी चौड़ी जायदाद की इतनी छोटी बात पर ध्यान भी न करेंगे। खरीददार ने जवाब दिया, नवाब साहब गुस्ताखी मुआफ, अगर मैंने छोटी बातों पर ध्यान न दिया होता और अगर आप हर बात को छोटी न समझ बैठते तो इस जायदाद के बिकने की नौबत न आती।

यह उदाहरण कल्पित नहीं। वास्तविक जीवन में नित्य ऐसी घटनाएं मिलती हैं। कोई इमारत समय से पहिले गिरती है तो अवश्य कहीं छोटी बात पर ध्यान न रखने के कारण कमजोर रह गई थी। किसी के घर में आग लगती है तो छोटी बात पर ध्यान न रखने के कारण। छोटी बात पर ध्यान न रखना ही दुनियां की हर एक दुर्घटना का कारण है। सफलता और निष्फलता में यही एक बारीक अन्तर है। ताजमहल जैसे सुन्दर भवन छोटे-छोटे पत्थरों को ध्यान से लगाने के कारण ही बन सके हैं। छोटी बात पर ध्यान देना ही बड़े से बड़े आदमी के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़प्पन का मूल है।

जहां तक हो हर काम की खुद देख भाल कीजिये और जो काम खुद न कर सकें उसके लिये नौकर न रखिये। आज के काम को कल पर न टालिये और कभी ठाली न बैठिये। सदैव कुछ न कुछ करते रहने की आदत बना लीजिये। आपके हर काम में और हर बात में तरतीब होनी चाहिये। हर काम को हृदय से और पूरी शक्ति लगाकर कीजिये। किसी काम को अधूरा न छोड़िये। कोई काम शुरू करने से पहिले भलीभांति विचार लीजिये। जिस काम को करो उसकी पूर्ण जानकारी रखनी जरूरी है। जो काम करना हो उसको गाते न फिरिये, गरजने वाले बादल कम बरसा करते हैं जब आप कुछ करेंगे तो लोग अपने आप जान जायेंगे। अपनी रुचि तथा समय के अनुकूल एक व्यवसाय चुन लीजिये और उसी में लगे रहिये। कई नावों पर सवार होना जोखिम से खाली नहीं। एक ही काम में आपका तन मन धन लगेगा तो सफलता सुगम होगी।

हर काम का समय नियत कर लीजिये, समय को बेकार ताश वगैरह खेलनें या बुरे आदमियों के साथ गप लड़ाने में कदापि न खोइये। समय की कदर करना व्यापार करने वाले के लिये बहुत जरूरी गुण है। समय ही धन है पूंजी है, इससे बड़ा कोई नहीं है। गया धन मेहनत से हाथ आ सकता है, गया स्वास्थ्य चिकित्सा से मिल सकता है किन्तु गया समय फिर हाथ कभी नहीं आता। जब जब अवकाश मिले अपने काम को उन्नत करने के लिए विचार करिये। कोरे शेख चिल्लियों के से मनसूबे न बनाते रहिये।

व्यापारी को समय का बहुत पाबन्द होना चाहिये। जो समय जिसको जहां के लिये नियत किया है उस समय से कुछ पहले वहां पहुँच जाना चाहिये। यह एक साधारण बात है पर उसी से दुनियां के बड़े-बड़े काम बने बिगड़े हैं। बड़ी २ लड़ा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इयों का फैसला समय की पावन्दी ने ही किया है। नेपोलियन की हार का कारण उसके एक जनरल का नियत समय पर एक गांव पर पहुँच कर कब्जा न करना था। अमरीका की फौजों के नियत समय पर पहुँच जाने से ही गत युद्ध में मित्र राष्ट्रों की जान बच गई और जर्मनी का तख्ता पलट गया। व्यापारिक क्षेत्र में भी ऐसी अनेक मिसालें हैं कि समय के पावन्द न होने से बड़ी २ सम्पत्ति क्षणभर में नष्ट हो गई। समय की पावन्दी से ही आप दूसरों के विश्वासपात्र बन सकते हैं। पाबन्द न रहने से आपका कोई विश्वास न करेगा।

समय का असली मूल्य अन्त समय मालूम होता है जब सैकड़ों रुपये खर्च करके कोशिश करते हैं कि थोड़ा और जीवित रहें तो अमुक काम करलें। रोजाना के घंटा आधा घंटा व्यर्थ आलस्य में खो देने में तथा उसका प्रयोग किसी उन्नति के काम के लिए करने में कितना फर्क है यह उस समय तो ज्ञात नहीं होता किन्तु साल दो साल पीछे भलीभांति मालूम हो जावगा। समय को व्यर्थ गंवाने वाला खुद ही अपना महान् शत्रु और अपनी तरक्की का घातक है।

समय के समान ही पैसे की आपको कद्र करनी चाहिए। आय व्यय का हिसाब रखिये और सदा आमदनी से कम खर्च कीजिये। माया पैसे-पैसे से ही जुड़ती है जैसे फूई फूई करके तालाब भरता है। धनी वही है जो अपनी आय से कम खर्च करता है। धन कमाना कठिन है लेकिन उसका बचाना और ठीक रीति से व्यय करना और भी कठिन है। किसी भी आदमी की बुद्धि की जांच करने का यह एक उत्तम साधन है कि वह पैसा कैसे कमाता है, कैसे बचाता है तथा कैसे व्यय करता है।

अपनी पूंजी पर अधिक बोझा कभी न डालिये। रस्सी को इतना तानना ठीक नहीं कि वह टूट जाय। 'ऐते पांव पसारिये जेती लांबी सौर', इसी में चतुराई है। ऋण लेकर कभी कोई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काम न कीजिये। जितनी पूंजी आपके पास है उतनी बड़े से बड़े काम के लिये काफी है। हर बड़े काम की शुरूआत छोटी होती है। जैसे बड़ी से बड़ी नदी शुरू में इतनी छोटी होती है कि टिड्डी भी लांघ जाती है।

जो भविष्य पर भरोसा करके कर्ज ले बैठते हैं वे हमेशा धोखा खाते हैं। ऋणी खाली बोरी की भांति अपने पैरों खड़ा नहीं रह सकता। एक बार कर्ज ले लेने से दूसरी बार फिर कर्ज लेने की जरूरत होती है और लालच बढ़ जाता है। इस तरह वह दबता ही चला जाता है। अन्त में कहीं का कहीं रहता है उसे ऐसे वायदे करने पड़ते हैं जिनको वह कभी पूरा नहीं कर पाता। इस तरह उसकी साख, मान और प्रतिष्ठा सब धूल में मिल जाती है। यदि आप कोई काम करना चाहते हैं किन्तु आपके पास उसके लिए एक पाई भी नहीं है तो उसकी शुरूआत किसी दूसरे उसी काम को करने वाले की ऐजेन्सी, दलाली आदि से कीजिए। इसे आप यदि दिल लगाकर करेंगे तो अनुभव और पूँजी दोनों मिल जायेंगे।

पैसा बचाने और संग्रह करने का तात्पर्य कंजूसी नहीं है। वह धन जो किसी के काम न आए मिट्टी के समान है। संग्रह की आवश्यकता केवल इसलिए है कि बुरे समय हाथन फैलना पड़े। दर-दर न भटकना पड़े। समय पर अपना ही नहीं औरों का भी काम निकल जाये। दिखाने में तड़क भड़क में अनावश्यक चीजों के संग्रह में पैसा उठाना फिजूलखर्ची है किन्तु दूसरों की सहायता करना यज्ञ है। जो धन कमाया जाता है वह दूसरों की ही जेब से लिया जाता है। हमारा संग्रह असल में दूसरों की ही थाती है, धरोहर है। यदि उससे दूसरों की सहायता न की जाय तो यह चोरी के तुल्य है। तैर्दत्तान प्रदायैभ्यो यो भुक्ते स्तेन एव सः' उनका दिया हुआ उनको दिये बिना जो भोगता है वह चोर ही है। यह गीता का वचन है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दान और पुण्य इसीलिए परम आवश्यक हैं। इनसे कभी हाथ न खींचिए। किन्तु पात्र का सदा ध्यान रखिए धन दान से घटता नहीं बढ़ता चला जाता है। देने वाला तो भगवान् है हजार सूरत से देता है।

एक और परम आवश्यक गुण सचाई और ईमानदारी है। धोखा, बेईमानी, अत्याचार अल्प समय ही टिकते हैं। अन्त में कलई खुल जाती है। फिर कागज की हाँडी दूसरी बार नहीं चढ़ती। इसलिए सत्य और ईमानदारी ही सर्वोत्तम नीति है। लोग कहते हैं कि व्यापार में झूठ बिना काम नहीं चलता। यह उनका भ्रम है। वास्तव में झूठ से काम बनता नहीं बिगड़ता है। सम्भव है कि सचाई तत्काल फल देने वाली प्रतीत न हो पर इससे साख बनती है और जिसकी साख है उसकी जबान हिलाने भर में लाखों रुपये हैं। अतः कभी किसी के साथ धोखे से काम न लीजिए अपने वचन को सदा पूरा कीजिए कभी किसी वस्तु का बढ़ाकर दाम न बताइए और खराब चीजें कभी इस्तेमाल न करिए तब बालक तक आपका विश्वास करेंगे और आपसे व्यवहार करने में अपने को सुरक्षित समझेंगे। एक बार आपके पास आने वाला सदैव के लिए आपका ग्राहक बन जायगा।

नम्रता सचाई के साथ सोने में सुगन्ध का काम करती है। सत्य बोलिए किन्तु प्रिय हो। काने को काना कहने से काम नहीं चलता। माँ को बाप की जोरू कहने में कितना अन्तर पड़ जाता है। दूसरों से सदा ऐसा व्यवहार कीजिये जिससे किसी का दिल न दुखे। कभी कोई आपसे नाराज न होने पाये। आप स्वयं कभी क्रोध न कीजिए, ग्राहक की रुचि और आवश्यकता को ठीक २ जानने तथा समझने की चेष्टा कीजिए और शीघ्र से शीघ्र उसे पूरा कीजिए। यदि ग्राहक को पहिले से जानते हैं तो उसे अपने व्यवहार से जता दीजिए कि आप उसे भूले नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हैं। यदि वह बहुत दिन में आपके पास आया है तो नम्रता-पूर्वक कारण मालूम कीजिए। इस तरह ग्राहकों को प्रेम से आकर्षित कीजिए। किन्तु खुशामद से बचिये अपना मतलब निकालने के लिए झूठी प्रशंसा तथा जी-हुजूरी खुशामद न हो, ग्राहक इससे बनते नहीं बिगड़ते हैं।

आपका दफ्तर भी आपके नियमित जीवन के अनुसार बा-तरतीब होना चाहिए हिसाब के रजिस्टर या बहीखाते सही और अपटूडेट हों। हर कागज या चिट्ठे के लिए फायल और हर फायल के लिए स्थान नियत हो। ऐसा न हो कि मेज पर कूड़े का जैसा ढेर जमा रहे। जिस चीज की आवश्यकता हो घण्टों तलाश करने पर भी उसका पता न लगे कि कहां है। हर पत्र की नकल और हर कागज को अहतियात से रखिये।

नौकरों के साथ न्याय और प्रेम का बर्ताव कीजिये। हर एक की आदत को पहचानिये, जिससे पूरा और ठीक-ठीक काम उनसे चल सके। जिन कायदों की पाबन्दी आप उनसे कराना चाहते हैं उन पर खुद अमल करें। जो हुक्म या हिदायत करें साफ शब्दों में हो, जिससे भूल न हो। योग्य काम की तारीफ करो और उनको सदा प्रोत्साहन देते रहिये। बीमार या घरेलू संकट में यथा साध्य सहायता करो, उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि आप उनके सहायक रक्षक सगे तथा कुटुम्बी हैं। किन्तु जो आलसी हो, नियमों का उल्लंघन करता हो, आपकी कृपा से अनुचित लाभ उठाना चाहता हो या आपको अन्य किसी तरह धोखा देता हो उसके साथ रियायत न करो और उसे अति शीघ्र अलग करदो।

यदि आपको एजेन्ट रखने पड़ें तो हर एजेन्ट के लिए हल्का नियत कर लीजिए जो अति बड़ा न हो। हर एजेन्ट के लिये चार्ट तैयार कर दीजिए जिसमें यह दिखाइये कि क्या माल किस स्थान पर कितना निकल सकता है। एजेन्टों से भी ऐसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार्ट तैयार कराइये। एजेन्टों को एक-एक नोट बुक और डायरी दीजिये और हिदायत कीजिये कि वह नोट-बुक में नित्य पुराने ग्राहकों तथा अन्य जरियों से ऐसे पते मालूम करके साफ २ दर्ज करते रहें कि जो नये ग्राहक बनाये जा सकते हैं। डायरी में रोजाना नियम से तारीख वार नोट करें कि वह किस किस ग्राहक से मिले हैं। समय २ इसकी जाँच करते रहिये और इस तरह ग्राहकों के लिये गली २ और घर २ की खोज करा डालिए नोट-बुक और डायरी खत्म हो जाय तो पुरानी उनसे लेकर फिर नई दे दीजिये।

एजेन्टों से उचित जमानत ले लीजिये और पेशगी रुपया यदि दिये बिना काम न चले तो उतना ही दीजिये जितना यदि वह आपका काम न भी करे तो आप उनसे निकालने की पूरी आशा रखते हों।

ग्राहकों की शिकायतों पर पूरा ध्यान दीजिए। उनकी सहूलियत, रुचि और आवश्यकता की जानकारी प्राप्त करते रहिये इसके लिये कुछ सवाल बना लीजिये और उन सवालों की सूची हर एक एजेन्ट को दीजिये और एजेन्टों से कहिये कि उनके उत्तर ग्राहकों से पूछकर नोट करें अथवा ऐसे सवालों के सरक्यूलर छपवाकर ग्राहकों के पास भेजते रहिये। सवाल साफ हों जिनका जवाब हाँ या ना या थोड़े शब्दों में दिया जा सके जिससे ग्राहक का समय नष्ट न हो। सवालों के आगे जवाब के लिये जगह हो ऊपर यह छपा हो कि इन सवालों के जवाब से ग्राहकों का हित होगा तथा आप उनकी सेवा ठीक तरह से करने में समर्थ होंगे। इस तरह पुराने ग्राहकों में बिक्री बढ़ाइये, नये ग्राहक बनाइये और खोये ग्राहक फिर से वापिस लीजिये। यह कुछ नियम संक्षेप में लिखे गये हैं यही आवश्यक सम्पत्ति है। यदि आप इस पर अमल करेंगे तो जरूर लाभ उठायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरा अध्याय

डाक व्यापार

भारतवर्ष का विस्तीर्ण क्षेत्र अगणित जाति के लोगों से भरा हुआ है जिन्हें अपनी रोज की जरूरतें कहीं न कहीं पूरी करनी होती हैं। इन अनेक गांव और कस्बों में वसी हुई जन संख्या तक पहुँचने का अति सुगम और सच्चा साधन डाक व्यापार है। पश्चिम में इस तरह के व्यापार का वहुत प्रचार है। अमेरिका और इङ्गलैंड में छोटी-छोटी डाक व्यापार की दुकानें थोड़े ही काल में माला-माल होती दिखाई देती हैं। इस देश में भी डाक व्यापार के लिए वहुत बड़ा क्षेत्र है। इस ढंग के व्यापार में कम्पिटीशन का भय कम से कम है। आरम्भ इसका छोटी सी पूंजी से ही किया जा सकता है। शोरूम सजाने, शाखायें खोलने और ट्रेनिंग एजेन्ट रखने की अपेक्षा डाक व्यापार के लिए आवश्यक स्टेशनरी छपाई पैकिंग आदि में कहीं कम धन से काम चल सकता है। सबसे बड़ी वात यह है कि डाक व्यापार अपना अन्य कार्य क्लर्की स्कूल मास्टरी आदि करते हुए भी किया जा सकता है। आरम्भ किसी भी चीज से हो जो या तो खुद तैयार करली जावे या आस पास तैयार होती हो या किसी थोक दुकानदार के यहां मिलती हो।

डाक व्यापार में सबसे अधिक खर्चीली मद विज्ञापन या एडवरटाइजमेंट है। विज्ञापन में जितना अधिक खर्च किया जाय उतना ही लाभ होता है विज्ञापन का असर उस समय ही होता है जब कि स्थाई रूप से निकाला जाय। एक बार विज्ञापन निकालकर बन्द कर देने से पढ़ने वाली जनता का यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचार बन जाता है कि अब विज्ञापन छपवाने वाली फर्म का अन्त होगया। यदि आप अधिक खर्च न करें तो विज्ञापन दैनिक पत्रों में न निकलवाकर मासिक पत्रिकाओं में निकलवाइये। दैनिक पत्रों को अधिक आदमी पढ़ते हैं और उनमें नित्य पढ़ने वाले विज्ञापनों का चित्त पर असर स्थाई हो जाता है। नित्य विज्ञापन करते रहने के लिए बहुत धन की जरूरत है। एक साल दैनिक-पत्र में रोज विज्ञापन निकलवाने के लिए जितना धन चाहिए उतने में यदि बुद्धिपूर्वक उसका खर्च किया जाय तो कई पत्रिकाओं से कहीं अधिक जन संख्या के पास अपना विज्ञापन पहुँच सकता है।

दैनिक-पत्र की कुल आयु २४ घन्टे की होती है, पिछली तारीख का पत्र कोई उठाकर नहीं देखता। एक मासिक पत्रिका दो महीने तक सामने रहती है। अतः दैनिक-पत्र की अपेक्षा मासिक पत्रिका के विज्ञापन का पढ़ने वाले की आंखों के सामने आने का साठ गुना अधिक असर होता है दैनिक पत्र विशेषकर अपने प्रांत ही में पढ़ा जाता है किंतु अच्छी पत्रिकायें देश भर में समान आदर पाती हैं। दैनिक पत्र तथा मासिक पत्रिका के विज्ञापन की भाषा में बहुत बड़ा फर्क होता है। दैनिक पत्र के विज्ञापन की भाषा ठीक सीधी व समयानुकूल होती है। किन्तु पत्रिका के पाठकों से विज्ञापनदाता को एक महीने तक फिर कुछ कहने का अवसर नहीं मिलता इसलिये पत्रिका के विज्ञापन की भाषा ऐसी स्थाई रूप की होनी चाहिए जो छपने से सालभर बाद भी उतना ही प्रभाव डालने वाली हो जितना छपने के समय।

विज्ञापन का मुख्य अङ्ग उसका हैडिंग है। उसकी सफलता बहुत कुछ इसी पर निर्भर है। वही हैडिंग सुन्दर कही जा सकती है कि जिस पर दृष्टि पड़ते ही हर मनुष्य ठहर जावे और समस्त विज्ञापन पढ़ने के लिए उत्सुकता हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विज्ञापन की भाषा सरल, चुभती हुई और विश्वास पैदा करने वाली होनी चाहिये। "आप इसका प्रयोग क्यों न करें" "इससे लाभ क्यों न उठावें" इस प्रकार की भाषा से पढ़ने वाले पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसी शंका में डालने वाली भाषा से यह टपकता है कि विज्ञापनदाता को स्वयं अपनी चीज पर यकीन नहीं है। विज्ञापन में थोड़े और चुने हुए शब्द होने चाहियें जिनमें साफ-साफ यह बतलाया गया हो कि आपकी वस्तु से क्या लाभ है अथवा वह किस काम की है और उसमें क्या विशेषता है। भाषा का उद्देश्य यह होना चाहिये कि हर पढ़ने वाला जरूर ही कुछ न कुछ लिखा पढ़ी करे।

किस पत्र में विज्ञापन कितना सफल हुआ, यह जानने के लिए विज्ञापन में कोई इशारा होना चाहिए जिसे ग्राहक अवश्य ही अपने पत्र में लिखे।

विज्ञापन के दूसरे साधन कैटलौक (सूची-पत्र) और सरक्यूलर होते हैं। कैटलौक में हर चीज का नम्बर होना चाहिए जिससे ग्राहक को आर्डर भेजते समय यह विश्वास रहे कि वह जिस चीज का आर्डर देता है फर्म उस चीज को ठीक-ठीक समझ लेगी। कैटलौक तथा सरक्यूलर में उचित ब्लौक होने चाहियें। चीजों का हाल पढ़ने की अपेक्षा उनकी तस्वीरें देखकर ग्राहकों को विश्वास जल्दी होता है और आर्डर देने की रुचि पैदा होती है।

कैटेलौक के साथ ग्राहक की सुविधा के लिए छपा हुआ आर्डर फार्म भी हो जिसमें आवश्यक खाने इस प्रकार हों कि ग्राहक को लिखने का कम से कम कष्ट उठाना पड़े। इस आर्डर फार्म पर माल नापसन्द होने पर दाम वापिस कर देने की गारन्टी हो जिससे ग्राहक को आपकी ईमानदारी में पूरा विश्वास हो जावे। आवश्यकता होने पर और फार्म सप्लाई करने की बाबत भी नोट हो तथा ग्राहक को पता, डाकघर,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्टेशन आदि साफ-साफ लिखने की भी सूचना हो। पीछे की ओर पारसल के डाक व रेलवे के संक्षेप से रेट भी हों जिससे ग्राहक को हिसाब लगाने में सुवधा हो या आर्डर फार्म कैटलौक के कागज से भिन्न रंग के कागज का हो, फर्म के नियम कैटलौक के कवर पर अन्दर की तरफ शुरू में या बाद में रखें जा सकते हैं।

नया काम करने वाले के सामने एक प्रश्न यह उपस्थित होता है कि वस्तुओं का मूल्य किस तरह रखा जाय। साधारणतया मूल्य लागत के दामों से दूना रखा जाता है जिससे रिटेलर या एजेन्ट को २५ प्रति सैकड़ा कमीशन तथा विज्ञापन करने, छपाई, दफ्तर आदि का व्यय निकाल कर कुछ थोड़ा लाभ बचा रहे। किन्तु डाक व्यापार के आरम्भ में विज्ञापन और छपाई का व्यय बहुत होता है अतः ऐसी चीजें ही छांटनी चाहियें जिनमें लाभ का अंश अधिक हो और मूल्य लागत से तिगुना या चौगुना रखा जाय। जैसे—यदि क्रीम या मंजन की शीशी दो आने में तैयार होती है तो उसके दाम छः आने या आठ आने रखने चाहियें। मूल्य कायम करने की भी दो विधि हैं : एक तो लागत पर खर्चा मुनाफा लगाकर मूल्य निश्चित करते हैं। दूसरी विधि में उल्टे चलते हैं अर्थात् पहिले यह निश्चय कर लेते हैं कि अमुक चीज इस मूल्य में अच्छी तरह चल सकेगी और फिर उसी के अनुसार उस चीज की लागत घटा बढ़ाकर कायम करते हैं, जो सब खर्च करके मुनाफा हो सके। हेनरी फोर्ड की सफलता इस सिद्धान्त पर ही अवलम्बित है।

कैटलोक के साथ एक सरक्यूलर पत्र हो जिसमें आपकी चीजों की प्रशंसा ग्राहक के दृष्टिकोण के अनुकूल हो। यदि इसका कोई उत्तर न आवे तो दस पन्द्रह दिन ठहर कर फिर पत्र डाला जाय जिसमें उस चीज को भली प्रकार से पेश किया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाय और कुछ मूल्य में कमी या कमीशन एक नियत समय तक आर्डर आने पर बचत हो या माल नापसन्द होने पर वापिस लेने और दाम वापिस करने पर जोर हो और दूसरे ग्राहकों की उस चीज के बारे में राय भी हो। अमेरिका आदि देश के डाक व्यापारी एक बार इन्क्वायरी आने पर बरसों अपनी चीज को तरह-तरह से पेश करते हुए सरक्यूलर भेजते रहते हैं और अन्त में कभी न कभी ग्राहक बना ही लेते हैं। हमने इस विषय पर इतना इसलिए लिखा है कि नये और तजुर्बेकार पाठकों को भली प्रकार समझ में आ जावे कि बिना इन तरकीबों के आर्डर आने की आशा करना निरर्थक है। कारण यह है कि ग्राहक बहुधा कैटलौक आने पर किसी फुरसत के समय भली प्रकार देखने के लिये उसे रख लेते हैं फिर उसे या तो खो देते हैं या भूल जाते हैं या अन्य फर्म के कैटलौक से तुलना करने के लिए रुक जाते हैं और दुविधा में पड़ जाते हैं कि किस फर्म से मंगावें। ऐसी सूरत में आपका फिर से आया हुआ पत्र अवश्य कुछ नतीजे से खाली न रहेगा।

ऊपर के बयान से आपको यह ज्ञात हो गया होगा कि डाक व्यापार कम से कम कठिनाई तथा पूंजी के साथ चालू किया जा सकता है। इसमें होने वाले आवश्यक व्यय का ब्यौरा इस प्रकार है :—

[१] किसी पत्र में छोटे से विज्ञापन निकालने का खर्च।
[२] सूचीपत्र, आर्डर फार्म, सरक्यूलर, लेटरपेपर, लिफाफे बीजक, रसीद बही आदि की छपाई व कागज का खर्च।
[३] सूचीपत्र व सरक्यूलर भेजने का डाक व्यय।
[४] कच्चा अथवा तैयार माल की कीमत।
[५] पैकिंग का सामान, डिब्बे, लेबिल आदि का खर्च।
[६] माल ग्राहकों को भेजने का खर्च।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्डर भेजने के दस-पन्द्रह दिन बाद ही यह रुपया बढ़कर वापिस होना आरम्भ हो जाता है जिससे आप धीरे-धीरे व्यापार बढ़ा सकते हैं। सम्भव है कि पहले छोटे पैमाने पर काम करने में आपको अधिक लाभ न हो परन्तु साल दो साल बाद आप देखेंगे कि यदि लगे रहे और होशियारी से काम करते रहे तो आपका व्यापार बहुत उन्नति पर हो जावेगा फिर एक-एक दिन में इतने आर्डर आ जाया करेंगे कि उनका सप्लाई करना भी कठिन हो जायगा।

अब हम दफ्तर के आवश्यक सामान की सूची देकर इस अध्याय को समाप्त करते हैं। अगले अध्याय में कुछ चालू चीजों के घर पर तैयार करने के फार्मूले लिखेंगे।

व्यापार सम्बन्धी अन्य बात जैसे जौइन्ट स्टाफ कम्पनी खोलने, ट्रेड मार्क व पेटेण्ट रजिस्ट्री कराने, अन्य देशों से माल मंगाने तथा उनको भेजने के नियम, बिक्री पैदा करने तथा बढ़ाने के नवीन विचार, जोखिम व घाटे से बचने की विधियां, ग्राहकों के पते मालूम करने, ग्राहक पैदा करने और बांधने के नये-नये उपाय, विज्ञापन तथा सरक्यूलरों के नमूने, व्यापार फैलाने, एजेण्ट बनाने तथा प्रशंसापत्र इकट्ठे करने के सरल ढंग, पत्र लिखना, चढ़ाना, नकल करना, फायल करना, इंडेक्स बनाना, हिसाब-किताब रखना आदि दफ्तर सम्बन्धी तथा बैंक के हिसाब-किताब की समस्त बातें जिनकी जानकारी व्यापार में पैर रखने वाले के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं, विस्तारभय से इस पुस्तक में न लिखी जाकर दूसरी पुस्तक व्यापार विधि में लिखी जायंगी।

डाक व्यापार के दफ्तर के आवश्यक सामान की सूची—

(१) लैटर फायल—जिनमें चिट्ठियां आर्डर शिकायत आदि लगाई जावें। इसी प्रकार के अन्य फर्मों के सरक्यूलर आदि की भी एक फायल रखनी चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) स्टेशनरी व लेबिल—यह सब सुन्दर कागज पर किसी बढ़िया छापेखाने से छपवाने चाहिए।

(३) टाइप राइटर—यह एक कीमती किन्तु एक आवश्यक चीज है। टाइप की हुई चिट्ठियां फर्म की शान बनाने के लिए आवश्यक हैं, बस जितना जल्द हो सके टाइप की मशीन का प्रबन्ध किया जाय। जब तक ऐसा न हो सके किसी टाइप करने वाले से शहर में चिट्ठियां टाइप करा ली जाया करें।

(४) रबर स्टाम्पें—फर्म के नाम की तथा तारीख की और अन्य तरह की स्टाम्पें होनी चाहिए।

(५) रेलवे गाइड—जिससे रेल द्वारा माल भेजने के नियम तथा स्टेशनों के सही नाम आदि मालूम हों तथा इसी प्रकार—

(६) पोस्ट आफिस गाइड भी आवश्यक है जिससे पारसल सूचीपत्र आदि भेजने के रेट, डाकखाने के नियम और समस्त डाकघरों की सूची तथा डाकखाने सम्बंधी अन्य समस्त बातें मालूम हो जावें। डाकखाने में तार का सूक्ष्म पता भी रजिस्ट्री कराना आवश्यक है।

चौथा अध्याय

चालू चीजें

विदेशी लोग बेकार अथवा निकृष्ट और हीन पदार्थों से तरह २ की चीजें प्रस्तुत कर भड़कीले लेबिल लगाकर हमारे देश का धन खींच रहे हैं और हम केवल चमक दमक पर लट्टू होकर अपना धन ही नहीं खो रहे बल्कि देश की बेकारी को बढ़ा रहे हैं। थोड़े ही अनुभव से विलायती चीजों के समान ही नहीं बल्कि उनसे भी बढ़कर द्रव्य घर बैठे तैयार किये जा सकते हैं और उनसे रौक फैलर रौप चाइल्ड और कारनेगी के समान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनवान बना जा सकता है। इन ऐसी चीजों के चुनीदा फार-मूले यहां देते हैं। जितना धन, काल और श्रम नौकरियों की टटोल में लगाया जाता है यदि उतना इधर लगाया जावे तो आवश्यक अनुभव प्राप्त हो ही जावेगा।

किसी पदार्थ के तैयार करने में बड़ी सावधानी की आव-श्यकता होती है। सर्दी गर्मी तथा तौल के थोड़े से अन्तर से प्रस्तुत पदार्थ बिल्कुल भिन्न प्रकार का बन जाता है अथवा खराब हो जाता है, इसलिए तौल नाप ठीक करनी चाहिए और जहां गर्मी की आवश्यकता हो धीरे २ देनी चाहिए। तौल में देश-काल के अन्तर से अन्तर पड़ जाता है, इसलिए पहले थोड़ा अनुभव करना अनिवार्य है।

चीज तैयार हो जाने पर उसको सुन्दर पैकिंग में बन्द करना चाहिए। बन्द चीजों की जाँच तो हो ही नहीं सकती। इसलिए ऊपरी पैकिंग से ही अन्दर की क्वालिटी का अनुमान किया करते हैं। यदि वस्तु अच्छी भी हो और पैकिंग अयोग्य हो तो कोई न पूछेगा, अतः लेबिल तथा पैकिंग अत्यन्त सुन्दर होना चाहिए।

जो फार्मूले यहाँ दिये गये हैं वह नमूने के तौर पर हैं। किसी भी चीज को छाँटकर हमारे फार्मूले से प्रारम्भ किया जा सकता है। फिर निरन्तर यह जाँच करने की आवश्यकता है कि अमुक पदार्थ के बदले क्या चीज डाली जाय कि चीज अच्छी और सस्ती बन जावे। जो चीज छाँटी जावे उसका उचित नाम रखकर निकालना चाहिए। हमने जो हैडिंग फार्मूलों के दिये हैं वह केवल गुण बतलाने के लिए हैं।

१—चेहरे का चमड़ा सुन्दर करने का प्रयोग

लेक्टिक एसिड	२० औंस
ग्लेसरीन	३५ औंस
डिस्टिल्ड वाटर	२॥ गेलन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सबको मिलाकर टिंचर वेनजाइन १॥ औंस धीरे-धीरे मिला दो और कारमाइन १५ ग्रेन मिलाकर रंग दे दो। फिर ग्लेसरीन चौथाई औंस, पानी २ औंस इनको मिलाकर गरम करो जिससे एमोनियाँ गैस उड़ जाय। फिर पहले घोल को इसमें मिलाकर छान लो इसके बाद उसमें आयोनून सोलोशन आधा ड्राम और थोड़ा सा काउलीन मिलाकर फिर दुबारा छान लो। इसको चेहरे पर लगाने से धब्बे व काले निशान आदि सब साफ होकर चेहरा सुन्दर और गोरा हो जाता है।

२—हाथ पैर फटने का मरहम

सफेद वैसलीन	डेढ़ औंस
लैनोलीन	१ औंस
बोरिक एसिड	६० ग्रेन
कपूर	१२० ग्रेन

इन सबको मिलालो और आवश्यकता के समय काम में लाओ।

३—ब्यूटी क्रीम

फिटकरी पिसी हुई ६ ग्राम, दूध इतना कि फिटकरी घुल जाय और गर्म करो खोया करके धूप में सुखा लो और बारीक पीस लो, फिर बोरिक एसिड डेढ़ ग्राम, टिंचर वेनजाइन २५ बूंद, बबूल का गोंद पानी में गलाया हुआ ३ बूंद, जैतून का तेल २५ बूंद मिलाकर घोटो और आवश्यकतानुसार चावल का आटा व इत्र गुलाब डाल लो। इससे चेहरे का चमड़ा चिकना सुन्दर और ताजा हो जाता है तथा मौसम की सर्दी गर्मी के असर से बचा रहता है।

४—चेहरे पर लगाने की खीरे की क्रीम

खीरे का रस	सवा सेर
बादाम का तेल	२ पौंड

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रीन आयल	२ औंस
मोम	२ औंस
स्पर्म	२ औंस
खीरे का एसेन्स	३ औंस

इन सबको मिलाकर घोटो और काम में लाओ। इसको लगाने से चेहरा खूबसूरत हो जाता है।

५—चेहरे पर दाग धब्बे व झांई इत्यादि दूर करने का प्रयोग

जिंक ऑक्साइड	२ औंस
शुद्ध गन्धक	४ औंस
लेनोलिन	४ औंस
आयल आफ इमाइड	४ औंस
इत्र गुलाब	१० बूंद

मिलाकर काम में लाओ।

६—चिकनाहट रहित क्रीम

सुहागा	४ औंस
स्टीयरीन	४ औंस

सोडियम कारबोनेट आधा औंस में ६ औंस ग्लेसरीन और चार पाइंट पानी मिलाकर वाटरबाथ में औटाओ जब गाढ़ा हो जावे और झाग उठना बन्द हो जावे तो फिर उसे घोटकर इत्र गुलाब १० बूंद डालकर शामिल करदो और काम में लाओ। यह चिकनाई रहित क्रीम गर्द इत्यादि नहीं पकड़ता और न कपड़े ही खराब करता है।

७—स्नो क्रीम

नारियल का तेल	२ छटाँक
बादाम का तेल	आधा सेर
सफेद मोम	डेढ़ छटाँक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सबको वाटरबाथ में गर्म करके पिघलाओ, फिर उतार कर चीनी के बर्तन में इस तरह घोटो कि गाढ़ा और सफेद हो जावे, फिर गन्ध रहित ग्लेसरीन एक छटाँक मिलाकार २५ मिनट तक घोटो, फिर २० बूंद बढ़िया इत्र गुलाब मिलालो और शीशियों में भरलो। यह क्रीम चमड़े को ठण्डा ताजा और तर रखता है।

८—बाल उड़ाने का तेल

आयोडीन	आधा ग्राम
एलकोहल	१० ग्राम
अण्डी का तेल	डेढ़ ग्राम
तारपीन का तेल	१ ग्राम

इन सबको मिलाओ और शीशियों में भरलो। पानी में घोलकर लगाने से बाल उड़ जाते हैं।

९—बाल उड़ाने का पाउडर

स्टार्च	१५ औंस
चूना	आधा सेर
सोडियम सल्फाइड	५ औंस

इन सबको मिला पीसकर बारीक करलो। पानी में घोल कर लगाने से बाल उड़ जाते हैं।

१०—बाल उड़ाने की क्रीम

सोडियम कार्बोनेट	१५ औंस
चूना पिसा हुआ	८ औंस
लाई	२ सेर

इन सबको मिलाओ और डिब्बियों में भरलो। इसको लगाने से ५ मिनट में बाल उड़ जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११—शेविंग क्रीम

कर्ड सोप	१०० भाग
बादाम का तेल	२० भाग
ग्लेसरीन	१२ भाग
इम्परमैसिटी	६ भाग
कार्बोनेट पुटेशियम	३ भाग
पानी	२०० भाग

सोप को बारीक टुकड़ों में करके तीन चौथाई पानी में वाटरबाथ पर गर्म करो, इम्परमैसिटी को बादाम के तेल में घोलो और थोड़ा गर्म करके ग्लेसरीन पुटाश तथा बकाया पानी डाल दो, फिर ऊपर वाला घोल धीरे २ मिलाओ जब लेई माफिक हो जावे इच्छानुसार सुगन्धि मिला दो। यह हजामत बनाने के समय लगाया जाता है।

१२—शेविंग पेस्ट

ह्वाइट सोफ्ट सोप	१०० भाग
इम्परमैसिटी	१० भाग
जैतून का तेल	१० भाग

इन सबको मिलाकर गर्म करो और उतारकर खूब चलाओ और खुशबू मिलादो।

१३—कपड़े पर न धुलने वाली रोशनाई (मार्किङ्ग इंक)

क्यूप्रिक क्लोराइड	१०० भाग
सौल इमोनियम	७० भाग
सोडियम कोरेट	१४० भाग
स्वच्छ या बरसाती पानी	७०० भाग

इन सबको मिलाकर एक शीशी में रख दो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बबूल का गोंद	१४० भाग
एनीलीन	१६० भाग
ग्लेसरीन	साढ़े तीन भाग
बरसाती पानी	३०० भाग

इन सबको मिलाकर दूसरी शीशी में रखलो और जब लिखना हो दोनों शीशियों में से थोड़ा एक प्याली में रखकर काम में लाओ।

१४—अन्धेरे में चमकने वाली रोशनाई

फासफोरस	१० ड्राम
आयल सिनेमन	११ औंस

दोनों को मिलाकर लिखो और अन्धेरे में पढ़ो।

१५—खुशबूदार साबुन

मोमबत्ती का मोम पांच सेर, नारियल का उम्दा तेल ६ छटाँक, सोडा लाई ४॥ सेर, पुटाश लाई १ सेर सबको मिलाकर कोई सा रंग और खुशबू डालकर साबुन बनालो।

१६—बाल उड़ाने का बढ़िया साबुन

ह्वाइट स्टार्च	१० भाग
पानी	५० भाग
सोडियम सल्फाइड	१५ भाग
बेरियम सल्फाइड	१५ भाग
पानी	७५ भाग
नारियल का तेल	१५ भाग
ग्लेसरीन	१० भाग

पहिले नं० १ के पानी को गर्म करके स्टार्च मिलाकर रखलो दूसरे बर्तन में सोडियम सल्फाइड को पानी में घोलकर ऊपर से बेरियम सल्फाइड मिलादो फिर औटाओ और नं० १ वाला घोल मिलादो और चलाते रहो जब तक कि गाढ़ा न हो जावे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर नं० ३ को पिघलाकर मिलादो और इच्छानुसार खुशबू भी डालदो फिर टिकियां बनाओ।

१७—बारबर पाउडर

स्टार्च	९ पौंड
पैरीसीपीटैड चाक	६ पौंड
टैल	४ पौंड
तेल निरौली	२ ड्राम
तेल सिटरौन	२ ड्राम
तेल सन्तरा	५ ड्राम
एक्सट्रेक्ट आफ जैसमाइन	२ औंस

सबको मिलालो और हजामत के बाद लगाओ।

१८—रोज फेस पाउडर

स्टार्च	१००० ग्राम
रोज आयल	१ ग्राम
बरगेपोट आयल	१० बूंद
इत्र गुलाब	८ बूंद
रोज गिरेनियम आयल	२५ बूंद

सबको अच्छी तरह मिलाकर बारीक छान लो और डिब्बों में भरलो।

१९—फिटकरी का व्यवसाय

हमारे देश में प्रायः नाई लोग साधारण फिटकरी इस्तेमाल करते हैं परन्तु अन्य देशों में जिस प्रकार की फिटकरी इस्तेमाल की जाती है वह इस प्रकार बनाई जाती है।

फिटकरी	२०० भाग
पानी	२०० भाग
ग्लेसरीन	२० भाग
जिंक आफ साइड	१० भाग
बोरिक एसिड	१० भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहिले फिटकरी को पानी में हल करें और फिर अग्नि में पकावें जब लेई सा गाढ़ा होने लगे तब शेष तीनों वस्तुएँ मिलाकर साँचों में भर टिकियाँ बनालो हजामत बन जाने के बाद इस टिकिया को मुँह पर मल देने से चेहरे की सम्पूर्ण खराबियाँ दूर हो जाती हैं बोरिक एसिड खून को बन्द करता है जिंक आफ साइड जख्मों को भरता है और ग्लेसरीन चेहरे को कोमल करती है।

२०—नाखून साफ और चमकदार बनाने का प्रयोग

पहिले ४ छटाँक पानी में २ ड्राम टारटेरिक एसिड मिलाओ फिर ४ ड्राम कौलीन वाटर में टिंचर आफ मिरथ २ ड्राम मिलाओ फिर दोनों घोलों को एक जगह करके डिब्बियों में भरलो इनको नाखूनों पर लगाने से साफ और चमकदार हो जाते हैं। इसमें नाखून डुबोकर पोंछ करके मुलायम कपड़े या फुलालेन से रगड़ कर चमका दो।

२१—मुंह की बदबू दूर करने का प्रयोग

क्लेराइड आफ लाइम ४ ड्राम, गर्म ट्रेंगे केन्थ ४ औंस और सफेद शक्कर डेढ़ पाव। सबको मिलाकर १ ड्राम पिपरमेंट का तेल मिलाओ और आवश्यकतानुसार गुलाबजल मिलाओ। इसकी एक बार कुल्ली कर साफ जल से मुँह धो डालो, निगलना ठीक नहीं।

२२—खिजाब का पाउडर

लिथार्च	२ औंस
चूना हाल का बुझा हुआ	४ औंस
स्टार्च	२ औंस

इन सबको भली प्रकार घोटकर मिलाओ बाद में सुखाकर शीशियों में भरलो। पहले बालों को इस प्रकार साबुन से धो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिया जाये कि तेल का अंश न रहे फिर इसको पानी में घोल कर ब्रुश या उंगलियों से लगाकर मलदो जिससे जड़ तक पहुँच जावे थोड़ी २ देर बाद गर्म पानी से तर करते रहो बाद में धो डालो।

२३—बाल काला करने का तेल

सिलवर नाइट्रेट	आधा ड्राम
निकिल सलफेट	६ ग्रेन
डिस्टिल्ड वाटर	२ औंस

स्ट्रौंग एमोनिया सेलोशन इतना कि कुल ६ औंस हो जाय पहले ऊपर की दोनों चीजों को डिस्टिल्ड वाटर में घोलकर बाद में नं० ४ की दवा मिला दी जाय और शीशियों में भर लिया जाय।

२४—एन्टीपलोंजिस्टिक पेस्ट

काउलीन	११३० भाग
बोरिक एसिड	९० भाग
थाई मौल	एक भाग
मिथिल सेली सिलेट	चार भाग
पिपरमेंट का तेल	एक भाग
ग्लेसरीन	७७४ भाग

पहले काउलीन को थोड़ा गर्म कीजिये ताकि उसकी सील निकल जाय फिर ठंडा कर पीस डालिए और बोरिक ऐसिड मिला लीजिए, फिर ग्लेसरीन को गरम करके इसमें मिलाइये फिर शेष चीजें एक जगह अच्छी तरह मिलाकर सबको एकत्रित कर खूब घोटिये ताकि सब मिल जाय और एयर टाइट डिब्बों में बन्द कर दीजिये। यह निमोनियां, सूजन, फोड़े, फुन्सी व जोड़ों के दर्द आदि पर लगाने में अधिक लाभ करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२५—मच्छर भागा पाउडर

पाउडर्ड चार कोल	८ भाग
पोटेशियम नाइट्रेट	एक भाग
वेनजोइन	दो भाग
हार्डटोल वेलसम	एक भाग
इन्सेक्ट पाउडर	एक भाग

इन सबको खूब बारीक पीसकर मिलालो। इसको शरीर पर मलने से मच्छर नहीं काटते।

२६—मच्छर भागा साबुन

नारियल के तेल का बना हुआ साबुन	एक हजार भाग
सन्दल का तेल	डेढ़ भाग
सीडार का तेल	डेढ़ भाग

साबुन को पीसकर उसमें सब तेलों को मिला दुबारा फिर से सांचों में भरकर टिकियां बना लो। इस साबुन को लगाकर स्नान करने से मच्छर नहीं काटते।

२७—गुलाल बनाना

गुलाबी रंग पानी में घोलकर उसमें सिंघाड़े का आटा गूंद कर सुखा लो, खुश्क होने पर पीसकर काम में लाओ। यह होली पर बहुत बिकता है।

२८—कपड़ा धोने का पाउडर

कारबोनेट आफ सोडा	२७ तोला
सल्फेट आफ सोडा	९ तोला
सुहागा	३ तोला

इन तीनों चीजों को अलग-अलग पीसकर मिलालो, पाउडर तैयार हो गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब कपड़े धोने हों तो एक वर्तन में थोड़ा सा कपड़ों के अन्दाज का पाउडर डालकर पानी करदो और कपड़े अन्दर रखकर आग पर गरम करो, पकने पर उतार करके नियमानुसार गरम पानी से धो डालें, कपड़े खूब साफ और सफेद हो जायेंगे।

२९—नीम का साबुन

तेल गोला	ढाई सेर
तेल नीम	आधा सेर
पानी	एक सेर
कास्टिक सोडा ७२ डिग्री का	आधा सेर
विक्टोरिया ब्ल्यू	डेढ़ माशे
यूरेनाइल यलो	चौथाई माशा

पहले कास्टिक सोडा को पानी में डालकर उसे ठण्डा होने दो और दूसरे वर्तन में तेलों को मिलाकर सोडा मिले हुए पानी को छोड़ते जाओ और चलाते रहो। जब गाढ़ा होने पर आवे तब रंग छोड़ दो और सांचों में भरकर टिकियां बना लो।

३०—टर्किश बाथ सोप

तेल नारियल	७० तोला
तेल अरण्डी	१० तोला
सुगन्ध टर्किश बाथ कम्पाउण्ड	१ तोला
लाई सोडा कास्टिक ३६ डिग्री वाली	४० तोला
रंग	इच्छानुसार

दोनों तेलों को मिलाकर सम्मिश्रण करके छान लो और लाई को छानकर धीरे २ पतली धार बांधकर तेल में डालते जाओ जब गाढ़ा लेई-सा हो जावे तब उसमें प्रथम रंग मिलाकर फिर सुगन्धि मिलादो कड़ा होने पर ठीक साँचों में भरकर टिकियां बनालो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३१—सनलाइट के मुकाबिले का साबुन

आपको मालूम होगा कि आजकल सनलाइट के कारखाने का सनलाइट साबुन कितना खपता है। इस साबुन की उन्नति को देखकर लोगों ने बहुत से साबुन नाम बदल बदल कर बनाये मगर माल का मुकाबिला न कर सके, आज हम उनके मुकाबिले का सच्चा नुस्खा दर्ज करते हैं।

तेल नारियल	१६ तोला
तेल महुआ	१२ तोला
अरण्डी का तेल	२॥ तोला
लाई नम्बर ३५ की	१५ तोला
पानी	५ तोला

तेलों को लोहे के बर्तन में इतना गर्म करो कि पानी के चन्द कतरे डालने से तड़कने लगे फिर धीरे-धीरे लाई में पानी मिला तेल में छोड़ते जाओ। जब ठण्डा हो जावे तो इसमें दस तोला पानी डालो और खूब हिलाओ, साँचों में भरकर टिकियाँ बनालो।

३२—वाशिंग सोप बनाना

सोडा कास्टिक नं० ५८ का	३२ तोला
नमक पिसा हुआ	५ छटाँक
तेल नारियल	सवा सेर
मैदा	आधा सेर
पानी	साढ़े सात सेर

पहिले पानी, सोडा, नमक मिलाओ और मैदा तथा तेल को एक जगह मिलाकर पहले मिले हुए को इसमें डालते और चलाते जाओ जब गाढ़ा हो जावे तो फ्रेम में भर दो। यदि इसको सस्ता बनाना हो तो पानी पाँच-छः गुना बढ़ाकर साबुन बनाया जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३३—बढ़िया दन्त मञ्जन

मस्तंगी	दो तोला	कपूर चीनी	दो तोला
दालचीनी	दो तोला	नीलाथोथा भुना	दो तोला
इलायची	दो तोला	माजूफल	१० दाना
सोंठ	दो तोला	सफेद जीरा भुना	दो तोला
कत्था	दो तोला	नमक लाहौरी	४ तोला
काली मिर्च	दो तोला	कपूर कचरी	दो तोला

इन सब चीजों को कूट-पीस कर कपड़छन करलो और शीशियों में भर कर रख लो।

इस मञ्जन को दाँतों पर धीरे-धीरे मलने से दांत खूब साफ होकर मोती के समान चमकने लगते हैं कुछ दिन रोजाना इस्तेमाल करने से पत्थर के समान दृढ़ हो जाते हैं।

३४—टूथ सोप

हाथ मुँह धोने का उम्दा सफेद साबुन दो सेर, परेसीपीटेड चाक दो सेर, ओरिस रूट पाउडर आधा सेर, जेरेनियम आयल सौ बूंद, लौंग का तेल सौ बूंद, इलायची की खुशबू दो तोला, अलावा सुगन्धों के सबको पीस छानकर फिर सुगन्ध डालकर दुबारा टिकियां बनालो और काम में लाओ।

३५—मुँहासे दूर करने का लेप

धनियां	१ तोला
बच	१ तोला
लोध	१ तोला

इन तीनों चीजों को जौ कुट कर लिया जाय और थोड़ा-सा सिल पर पानी के साथ बारीक पीसकर मुँहासों पर लेप किया जाय, आठ-दस दिन में मुँहासे साफ हो जायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Nagaland

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३६—बढ़िया उबटन

लाल चन्दन	१ तोला
केशर	आधा तोला
अगर	१ तोला
लोध	१ तोला
सुगन्धवाला	१ तोला

इन सबको सिल पर पानी के साथ महीन पीसकर उबटन की तरह शरीर में बराबर कुछ दिन लगाने से शरीर खूबसूरत हो जाता है।

३७—हर प्रकार के सिर दर्द के लिए पेन बाम

सत्व पोदीना	३ तोला
दालचीनी का तेल	१ तोला
कपूर	आधा तोला
मोम मौहर का	२० तोला
नारियल का तेल	४० तोला
लौंग का तेल	आधा तोला
लेवेण्डर	आधा तोला

मोम और नारियल का तेल पिघला कर खरल में डालें फिर शेष वस्तुएँ भी खरल में डालकर खूब घोट लें और डिब्बियां भर कर काम में लावें।

३८—कीड़े मारने का तेल

आयल आफ पेनीरोयल	१ ड्राम
टर्पेनटाइन	८ औंस

इन दोनों वस्तुओं में इतना मिट्टी का तेल मिलाइये कि कुल एक गैलन हो जाय और इच्छानुसार शीशी या डिब्बियों में भर लीजिये। यह तेल मक्खी, मच्छर, खटमल, झींगुर व अन्य इसी प्रकार के कीड़े मारने में उपयोगी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३९—घूंघर वाले बाल बनाने का तेल

एमोनिया कारबोनेट	४ ड्राम
स्ट्रौङ्ग सोलूशन आफ अमोनिया	२ ड्राम
सीलेज आफ एकेशिया	४३ ड्राम
एलकोहल ७० फीसदी	१२ औंस
गुलाब जल	१२ औंस

इन सबको मिलालो और शीशियों में भरलो इसको बाल धोकर लगाने से सूखने पर बाल घूंघर वाले हो जाते हैं।

४०—फ्यास डेन्ड्रफर दूर करने का तेल

रेसोरसिन	दो ड्राम
कास्ट्रायल	४ ड्राम
वलसम आफ पीरू	१ ड्राम
आयल जरेनियम	वीस बूंद
आयल लेवेण्डर	वीस बूंद

एलकोहल ४५ फीसदी इतना कि कुल मिलाकर १६ औंस हो जाय। इन सबको मिलाकर शीशियों में भरलो। इसको सिर के बालों पर इस कदर मला जावे कि बालों की जड़ों तक पहुँच जावे फिर ठण्डे पानी से धो डाला जावे फ्यास दूर हो जावेगी।

४१—ब्लीचिंग पाउडर अर्थात् रंग उड़ा देने वाला पाउडर

सोडियम कारबोनेट	१२ पौंड
पोटेशियम कारबोनेट	३६ पौंड
पोटेशियम सिलीकेट	१० पौंड
चारकोल	आधा पौंड

सबको पीसकर मिलालो। इस पाउडर को पानी में घोलकर रंगे हुए स्थान पर लगाकर थोड़ा ठहर कर धो डालिए कपड़े का रंग छूट जावेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४२—पीतल पालिश

पाउडर्ड ट्रपोली	डेढ़ औंस
टारटैरिक एसिड	आधा ड्राम
पाउडर्ड प्यूमिस	चौथाई औंस
गेसोलीन	७ एफ आई औंस

इन सबको मिश्रित कर डिब्बियों में भरदो और प्रयोग करो।

४३—रबर सीमेंट

देशी रबर को चाकू से काट-काट कर बहुत बारीक रेशे करो, फिर थोड़े रखकर बेनजीन मिश्रित करदो, रबर फूल २ कर घुल जायगी, अगर कमी रह जाय तो बेनजीन और मिश्रित करो अगर अधिक बारीक हो जाय तो रबर को और मिश्रित करदो और शहद जैसा करो, इसको दो तीन बार लगाकर रबर के दोनों हिस्से जोड़ दो, हर तरह का रबर कटा हुआ जुड़ जायेगा।

४४—गटापार्चा सीमेंट

पिच	दो औंस
गटापार्चा	१ औंस

दोनों को लोहे की कढ़ाई में पिघलाकर मिश्रित करो और ठण्डा करके शीशियों में भरलो।

इसको गरम करके पिघलाकर गटापार्चा की चीजें, ग्रामोफोन रिकार्ड, हाथीदांत तथा हड्डियों की बनाई हुई चीजें और कांच की चीजें जोड़ी जा सकती हैं।

४५—पैरों में जूते से हुए छालों का तेल

सेलीसिलक एसिड	२ औंस
लेकटिक एसिड	२ औंस
कोलोडोइन	१५ औंस

सबको मिश्रित कर शीशियों में भरो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४६—बाल गिरने का तेल

टिंचर रोजमरी	दो औंस
टिंचर संकोना	दो औंस
टिंचर जैवररेंडी	दो औंस
अण्डी का तेल	डेढ़ छटाँक
रम	पन्द्रह औंस

इन सबको मिश्रित करके रख लो, इसके चन्द दिन के प्रयोग से बाल गिरना बन्द हो जाता है।

४७—होठों की सुर्खी

वैसलीन	एक हजार भाग
पेराफीन	सौ भाग
लेमन आयल	डेढ़ भाग
आयल आफ वायलेट	डेढ़ भाग

कारमाइन आवश्यकतानुसार मिलाकर सबको एक जगह करदो और डिब्बियाँ भरलो।

४८—महावर बनाना

गोली का रंग दो औंस लेकर हल किये हुए ४ सेर नौसादर के पानी में मिलावें, फिर ४ औंस रेक्टीफाइड स्प्रिट मिला दें, बाद को ग्लेसरीन ८ औंस, इत्र गुलाब २० बूंद लेकर उसमें अच्छी तरह मिलादें और शीशियों में भरलें। यह स्त्रियों के शृङ्गार की एक आवश्यक चीज है। यह महावर पैरों पर लगाते ही बहुत जल्द खुश्क हो जाती है।

४९—गालों की गुलाबी

गुलाब जल	एक छटाँक
कारमाइन नं० ४	आधा ड्राम
वाटर एमोनिया	१ ड्राम
इत्र गुलाब	१५ बूंद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सबको मिलाकर मरलो और दो-तीन दिन बाद काम में लाओ।

५०—गुप्त रोशनाई

१—तूतिया को पानी में मिलाओ और लिखो, यह लिखा हुआ किसी के पढ़ने में नहीं आवेगा, फिर जरा आग की गर्मी दूर से दो, हरूफ लाल हो जावेंगे।

२—एसेटिक एसिड में कोबाल्ट ऑक्साइड को मिलाओ, उसमें अगर नमक डाल दिया जावे तो नं० १ की विधि से हरूफ हरे हो जावेंगे और अगर शीशा मिलाया जावे तो पीले हो जावेंगे।

३—आइस सल्फेट के सोलूशन में गेलिक एसिड जो कि पानी में घोल लिया गया हो, मिलाओ इससे हरूफ काले हो जावेंगे।

४—डायलूट टिंचर आफ आइरन से लिखो और खूब गर्म चाय में ब्लाटिंग भिगोकर लिखे हुए कागज पर रखदो हरूफ पढ़ने में आ जावेंगे।

५—एसिड सोलूशन आफ क्लोराइड आइरन से लिखकर सुखा देने से हरूफ नहीं दीखेंगे। सल्फोसइनाइड आफ पोटेशियम पर गन्धक का तेजाब डालकर जो भाप निकले उस पर कागज रखने से हरूफ लाल हो जावेंगे। इसके बाद एमोनिया दिखा देने से कागज कोरा हो जायेगा। इसी क्रम से इच्छानुसार करते रहो।

५१—कैमीकल ब्लोटिंग पैड

जियसम	७० पौंड
आलू का आटा	१० पौंड

इन दोनों चीजों को आटे की तरह पानी में गूंध लो और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैड के उचित सांचों में दवा दो, सूखने पर बहुत बढ़िया ब्लोटिंग पैड तैयार हो जायेगा।

५२—हैक्टोग्राफ अथवा कौपिंग पैड

हाथ के लिखे हुए की अधिक संख्या में नकलें किये जाने के लिये यह एक अधिक लाभदायक वस्तु है। इसके बनाने की विधि यह है—

जैलटीन	११ भाग
ग्लेसरीन	४० भाग
काउलीन	४० भाग
पानी	५॥ भाग

पहिले जेलेटीन को पानी में भिगोकर गला लो फिर ग्लेसरीन को मिलाकर वाटरबाथ पर गरम करो और चलाते रहो। फिर काउलीन भी मिला दो उतारकर ठंडा कर लो, फिर किसी चौकोर टीन या लकड़ी के चौखटे में रखकर फैला लो, लेबिल ठीक होने के लिए रौलर फेर दो। बस पैड तैयार हो गया।

लिखने की विधि—एक अलहदा कागज पर हैक्टोग्राफ रोशनाई से लिखकर उसको उलटा इस पैड पर रख दो जिससे कागज पर के लिखे हुए तमाम अक्षर पैड पर आ जावें, फिर जितनी नकलें आपको दरकार हों प्रति कागज के पैड के ऊपर रखकर हाथ से या रौलर से दबा दिया जावे, और ध्यानपूर्वक एक किनारे से धीरे से उठा लिया जावे, इसी प्रकार कई मर्तबा नकलें उतारी जा सकती हैं। पैड को लिखने के पश्चात् आवश्यकता होने पर साफ पानी से मुलायम कपड़े द्वारा धोया जा सकता है।

(नं० २)

सरेश	३०० भाग
ग्लेसरीन	१५० भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेरियम सलफेड	७५ भाग
पानी	१०५० भाग

इन सब को मिलाकर नं० १ की तरह पैड बना लो।

५३—हैम्टोग्राफ की रोशनाई

मिथिल वाइलेट	१०० भाग
नाईग्रो सीन	१८० भाग
ग्लेसरीन	२७० भाग
बबूल का गोंद	२५ भाग
एलकोहल	५४० भाग

सबको एक जगह घोट लो।

(नं० २ नीली स्याही)

रेसोरसिन व्ल्यू	६ भाग
एसेटिक एसिड डाइल्यूट	११ भाग
ग्लेसरीन	१०० भाग
पानी	६०० भाग
एलकोहल	६६ भाग

गरम करके सबको मिला लो।

(नं० ३ हरी स्याही)

ग्लेसरीन	१०० भाग
एनीलेन ग्रीन	१४० भाग
पानी	७०० भाग
एलकोहल	१४० भाग

सबको एक जगह मिला लो।

(नं० ४ सुर्ख स्याही)

ग्लेसरीन	१०० भाग
फ्यूसिन	६० भाग
एलकोहल	६० भाग
पानी	४५० भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सबको एक जगह मिला लो।

५४—गंजेपन का इलाज

कोकोनट आइल	४ औंस
आइल आफ रोजमरी	५० बूँद
आइल आफ ओरेगेनम	५० बूँद
आइल आफ लवेण्डर	२५ बूँद
आइल आफ क्लोयज	८ बूँद

इन सबको मिश्रित कर शीशियों में भरलो।

५५—कांच व चीनी इत्यादि जोड़ने का सीमेंट

(१) सुहागा	१०० भाग
केसीन	२२५ भाग

इनको मिश्रित कर रखदो और पानी या दूध में सानकर कांच अथवा चीनी के बरतन जोड़े जा सकते हैं।

(२) लाख	५५ भाग
तारपीन का तेल	१२ भाग

इन दोनों को लोहे की कढ़ाई में पिघला कर ठण्डा होने पर बत्तियां बनाओ, जब कोई बरतन इत्यादि जोड़ना हो तो बत्ती और उस बरतन को आग पर कुछ गरम करके जोड़ दो।

५६—वारनिश

८ पौंड कोपाल, २ गेलन तेल कोई-सा लेकर दोनों को चार घंटे तक गरम करो, जब तेल में कोपाल मिश्रित हो जाय उसके साढ़े तीन गेलन तारपीन का तेल मिश्रित करो और छानकर भरो। यह लकड़ी की वारनिश है।

५७—पौलसिंग पाउडर

दस पौंड खड़िया मिट्टी, आध पौंड क्रीम आफ टारटर और ३ औंस कैलस्वण्ड मैगनेशिया इन सब को एक जगह पीस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

छान कर रख दो। इससे सोना, चांदी, पीतल, तांबा, काँच, शीशा, लोहा, टीन व इलैक्ट्रोप्लेटेड चीजों पर मलकर पोंछ देने से बड़ी तेज चमक आ जाती है।

५८—पतला ब्राउन बूट पालिश

यलो वेक्स (पीला मोम)	१०० भाग
सौंफ	४५ भाग
नेकिन यलो	६० भाग
तारपीन का तेल	३५० ग्राम
एल्कोहल	४५ भाग
पानी	३५० भाग

मोम को पिघलाकर तारपीन के तेल में और साबुन को पानी में तथा नेकिन यलो को एल्कोहल में घोलो और तीनों को एक जगह मिश्रित करो, यह बढ़िया बूट पालिश है।

५९—पतला काला बूट पालिश

सूखा काजल	१०० भाग
ब्राउन शूगर	८० भाग
जैतून का तेल	१२ भाग
स्टेल बीयर	४०० भाग

शूगर व काजल को जैतून के तेल में मिश्रित कर स्टेल बीयर मिला दो। २४ घन्टे बाद शीशियों में भरो और काम में लाओ।

६०—काली बढ़िया पालिश

बोन ब्लैक	१०० भाग
सलफ्यूरिक एसिड	२० भाग
मछली का तेल	२० भाग
पतला सरेश	४५ भाग
खाँड	४० भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोडियम कार्बोनेट क्रस्टल	५० भाग
पानी	आवश्यकतानुसार

सरेश को ४ घण्टे तक पानी में भिगो दो, फिर धीरे २ गरम करो, उसमें थोड़ा सा ग्लेसरीन मिलादो, फिर सोडियम कार्बोनेट पानी में मिला दो और अलग रख दो, इसके बाद एक मिट्टी के वर्तन में वोन ब्लेक में घोलो और धीरे-धीरे सलफ्यूरिक एसिड मिलाओ और चलाओ, जब इकसार हो जावे तो उसमें मछली का तेल मिला दो, इसके बाद सलफ्यूरिक एसिड का घोल मिला दो, जब उसमें झाग उठना बन्द हो जावे तो खांड भी मिला दो, फिर उसमें सरेश का घोल भी मिला दो और खूब घोट दो। बढ़िया काली बूट पालिश तैयार हो जायगी।

६१—काली रोशनाई

माजूफल	१०० भाग
गौंद	४५ भाग
लौंग	६ भाग
आइरन सलफेट	६० भाग

सबको कूट कर कांच के वर्तन में मेंह का पानी मिलाकर १५ दिन तक रक्खो और नित्य हिलाते रहो, फिर नितारकर बोतलों में भरलो और काम में लाओ।

६२—स्याही उड़ाने का पाउडर

फिटकरी	१॥ छटांक
गन्धक	१ छटांक
शोरा	१ छटांक
एम्बर	१ छटांक

इन सबको मिलाकर कांच की शीशी में भर लो और लेख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

या स्याही के निशानों पर किसी साफ सफेद कपड़े से रगड़ दो। स्याही दूर हो जायगी।

६३—नीली रोशनाई

एनलीन व्ल्यू	५ भाग
सिटरिक एसिड	१५ भाग
एसेटिक एसिड	३० भाग
गोंद बबूल पानी में घुला हुआ	१०० भाग

सब को मिलाकर काम में लाओ।

६४—सुर्ख रोशनाई

रेड एनोलीन	५ भाग
सिटरिक एसिड	४५ भाग
एसेटिक एसिड	२२॥ भाग

पानी में घुला हुआ बबूल का गोंद १०० भाग इन सबको मिला लो और काम में लाओ।

६५—हरी रोशनाई

एनीलीन व्ल्यू	५ भाग
पीक्रिक एसिड	१६ भाग
एसेटिक एसिड	५५ भाग
सिटरिक एसिड	२६ भाग
पानी में घुला हुआ बबूल का गोंद	१०० भाग

इन सब को मिलाकर काम में लाओ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांचवाँ अध्याय

बिना पूंजी के धन्धे

अधिकतर मनुष्य यह समझते हैं कि बिना पूंजी के कोई व्यवसाय नहीं हो सकता, किन्तु बात ऐसी नहीं। अनेकों काम बिना पूँजी अथवा बहुत थोड़ी पूँजी से किये जा सकते हैं। हम यहाँ कुछ ऐसे ही उदाहरण रखते हैं। ये केवल मन घड़न्त ही नहीं, बल्कि वास्तविक तरीके हैं जिनसे कार्यशील व उद्योगी पुरुषों ने धन और वैभव प्राप्त किये हैं।

आजकल एडवरटाइजमेंट की बड़ी धूम है। हर दुकानदार, डाक्टर या वैद्य को एडवरटाइज करने की आवश्यकता होती है। दीवारों पर लिखकर एडवरटाइज करने में कोई पूँजी दरकार नहीं, किन्तु एडवरटाइजमेंट पोस्टरों के मुकाबले अधिक सस्ता और स्थाई हो जाता है। आप दीवारों पर लिखकर एडवरटाइजमेंट करने के काम के अपने कस्बे या शहर के दुकानदारों से हुक्म लीजिये। हर आदमी इस काम के लिये शुरू से ही आपको कुछ पेशगी दे देगा। मजमून छोटा अर्थात् दो चार शब्दों ही में हो, जिससे वस्तु का गुण आदि का वर्णन हो जाय। जैसे अकसीरे दर्द रामतेल। इसके साथ २ पोस्टर चिपकाने और हैंडबिल बांटने का काम लिया जा सकता है।

दूसरा सस्ता तरीका स्थाई एडवरटाइजमेंट का यह है कि जैसे ठेले सिनेमा के, फिल्म का विज्ञापन करने के प्रोग्राम में लाये जाते हैं, ऐसे बड़े २ ठेले कम रुपये की लागत से तैयार हो सकते हैं और इसको भी जरूरी लागत से अधिक पेशगी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रुपया मिल सकता है। हर ठेले के दोनों बाजू दो बड़े २ बोर्ड हों जो टीन या लोहे की चद्दर या केनवेस की लकड़ी के चौखटे पर बनाये जा सकते हैं। आगे पीछे तिकौने केनवेस या टीन काटकर दो बोर्ड और बन सकते हैं चौखटे के नीचे तीन या चार पुली या छोटे २ पहिये कबाड़ियों के यहाँ से लेकर लगाये जा सकते हैं या लकड़ी के बनवाये जा सकते हैं। बड़े २ बोर्डों को सुन्दर पेन्ट करके कालमों में बांट देना चाहिये। हर कालम का उचित चार्ज माहवारी, तिमाही, छमाही या सालाना एक शहर तथा बहुत से शहरों में घुमाने का रखा जा सकता है इस काम के लिये तो हरूफ पेन्ट करना खुद सीख लिया जाय या किसी पेन्टर को साझी कर लिया जाये या ठेके पर काम कराया जाये। एक ठेले को एक लड़का कुछ रुपया माहवार पर ही नित्य घुमाता रहेगा। ठेला चौराहों, कचहरी, डाकघर, तारघर, शफाखाना, चुंगी आदि जगहों के निकट खड़ा कर देना चाहिये। इस तरह के विज्ञापन को अपने शहर से शुरू कर देना चाहिये। इस तरह के विज्ञापन का अपने शहर से शुरूआत करके शहर २ में व्यवसाय किया जा सकता है। इसके बाद अखबारों के विज्ञापन की एजेन्सी भी ली जा सकती है अथवा खुद अपना पत्र विज्ञापन के हेतु चलाया जा सकता है।

दूसरा काम जो बिना पूंजी के शुरू किया जा सकता है अखबारों को सम्वाद (न्यूज रिपोर्टिङ्ग) भेजने का है। वह काम भी यदि ठीक तरह किया जाय तो बहुत काम का हो सकता है। लोग हर सम्वाद को पढ़ने के लिये उत्सुक नहीं होते सम्वाद में लोगों की दिलचस्पी की बात होनी चाहिये। मान लीजिये कि चीन में कोई कानून पास होता है तो उसका हमारे ऊपर क्या असर और उसे हमको पढ़ने में दिलचस्पी क्यों होने लगे इत्यादि, किन्तु इसी बात को यदि इस प्रकार रक्खा जाय जिससे हमें मालूम हो कि हमारा रोजाना के जीवन पर इसका कुछ प्रभाव पड़ेगा (जैसे रेशम, चाय का तेज या सस्ता होना इत्यादि

Kirtikant Sharma Collection; Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो हमें दिलचस्पी होगी। मतलब यह कि हर नई घटना इस ढंग में रक्खी जानी चाहिये जिससे लोगों को दिलचस्प मालूम हो और उन्हें उस नई घटना से तथा उनके नित्य के जीवन से कुछ सन्बन्ध दीख पड़े।

समाचार-पत्र का सम्वाद नाविल किस्से से बिल्कुल भिन्न प्रकार का होता है। नाविल में तो असल मामले को अन्त तक छुपाया जाता है ठीक उसका ही अनुमान लगता है। यदि पाठक आसानी से घटना का अनुमान करलें तो वह दिलचस्प नहीं रहती और उपन्यास सुन्दर नहीं समझा जाता। अन्त में एकदम जितना अचानक सामने आता है उतना ही अच्छा मालूम होता है किन्तु समाचार-पत्र इसके बिल्कुल ही उल्टा होता है। कोई पत्र पढ़ते हुए उपन्यास का सा इन्तजार करना पसन्द नहीं करेगा, पाठक एकदम जल्द से जल्द सब कुछ जान लेना चाहता है यदि पहली लाइनें उसको कुछ नहीं बता सकतीं तो वह आगे पढ़ने का कष्ट नहीं उठाता। अतः पत्र के सम्वाद में एकदम पहली दो चार लाइनों में ही सब कुछ बता देना पड़ता है घटना क्या हुई, क्यों हुई, कब हुई, कहाँ हुई, कैसे हुई यह सब बात एकदम पाठक को मालूम हो जाती हैं तो उसको आगे तफसील पढ़ने में दिलचस्पी आती है जैसे मान लीजिये कि कहीं बिजली गिरती है, कहीं पर बिजली का गिरना हमारे लिए कोई विशेष बात नहीं किन्तु ज्योंही हमें ज्ञात होता है कि बिजली फलाँ जगह गिरी जहाँ हमारे कोई मित्र रिस्तेदार का परिचित आदमी है अथवा अमुक समय गिरी कि जब फलाँ आदमी उस जगह गया था तो यह सब बातें एकदम मालूम होने से यही घटना हमारी दिलचस्पी की बात बन गई।

बड़े आदमियों जैसे महात्मा गांधी पं० जवाहरलाल नेहरू आदि की छोटी २ बातें भी दिलचस्प मालूम होती हैं। ऐसी घटनायें जिनमें कोई अद्भुत बात हो तो नित्य की बातों से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ विचित्रता रखती हो अथवा जिसमें किसी बच्चे या पशु पक्षी ने भाग लिया हो तो आदमी दिलचस्पी से पढ़ते हैं। बस जब कोई समाचार लिखना शुरू किया जावे तो पहले यह विचार आवश्यक है कि वर्णन की जाने वाली घटना में क्या बात सबसे अधिक मजेदार है और जब यह निश्चय हो जाय तो वही बात पहले आनी चाहिये और ऊपर बताई हुई सब बात क्या हुआ, किसने कहा, कैसे किया इत्यादि पहिले दस बारह शब्दों में ही आ जानी चाहिये।

बहुत सी छोटी-छोटी घटनाएँ ऐसी होती हैं जो समाचार के विचार से तो अधिक मूल्यवान नहीं होती किन्तु उनसे सुन्दर व्यंग तथा रोचक कहानी या लेख बनाये जा सकते हैं। अक्सर इसमें यह बात दिखाई जाती है कि हम सब मनुष्य हैं सब में समान कमियां लोभ मोह अभिमान है। जनता की विचार-धारा ऐसी कहानियों से दृष्टिगोचर की जाती है इसमें लेखक के आत्म विचार की उच्चता की झलक होती है और सम्पादक ऐसे लेखक पाकर बहुत पसन्द होते हैं। समाचार-पत्र में ऐसी कहानी अन्य कहानियों से भिन्न होती हैं। इसमें विशेषता यह होती है कि यह इतनी सरल होती है जो आसानी से समझ में आ जाये और पढ़ने वाले को यह ध्यान भी न हो कि यह किस प्रकार लिखी गई। इन कहानियों में शब्द तथा वाक्य छोटे २ होते हैं।

एक घटना होने के बाद की बातों में भी पढ़ने वालों को बड़ी दिलचस्पी आती है जैसे एक डकैती हुई या डकैत पकड़ा गया अथवा आग लगी तो कौन कब कहां इत्यादि तो पहिले दिन दे दिए लेकिन दूसरे दिन उसके बाबत इधर उधर की विस्तार की घटना बड़ी रोचक बन जाती है। जैसे पुलिस की जांच डकैत की जीवनी, आग के बीमे का भुगतान या नये मकानात की तैयारी इत्यादि दूसरे दिन वर्णन किये जावेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर से लिखे समाचार भी अखबारों का एक अंग होते हैं। इनमें अखबार या सम्वाददाताओं की खबर कुछ हेर फेर करके नमक-मिर्च मिलाकर इस तरह फिर से लिखी जाती है कि जो असल जान पड़े। इनकी जरूरत उस समय होती है कि जब कोई घटना सम्वाददाताओं से छूट जाती है अथवा नहीं मिल पाती और दूसरे पत्र को किसी तरह पहले प्राप्त हो जाती है। यह अक्सर असल से छोटी होती है और इस विचार से इनको जगह दी जाती है कि जिन पाठकों ने अन्य पत्र नहीं देखे उनको भी यह खबर मिल जाय।

सम्वाद देने के काम में सबसे बड़ा काम खबर को सूंघना है। शहर में एक ही समय अनेक जगहों पर अनेक घटनाएं होती हैं और यह सम्भव नहीं कि खबर देने वाला सब जगहों पर एक ही समय मौजूद होकर उन घटनाओं को देख सके हर एक के लिए भिन्न मनुष्य रखने का व्यय कोई अखबार वाला सहन नहीं कर सकता। कुछ बातों के लिये तो पहले से समय और जगह नियत होती है और सम्वाददाता जाकर के देख सकता है जैसे खेल, मुकदमा, जल्से, मीटिंग, दौड़ इत्यादि किन्तु लाखों बातें ऐसी होती हैं कि जिनका पहले से सम्वाददाता को ज्ञान नहीं हो सकता। इसलिए उसका काम यह है कि पहले से नियत बातों का समय आदि की जानकारी रक्खे और इन बातों का जो यकायक होती हैं शीघ्रातिशीघ्र ज्ञान प्राप्त करे। किसी मुहल्ले या भाग के पहले से नियत कामों का पता होटलों से पनवाड़ी या खोमचे वालों से आसानी से लग जाता है क्योंकि यह लोग उनका पता रखते हैं। जहाँ तक हो सके नामों को सही जानने की चेष्टा करनी चाहिए और नाम सदैव सही ही पत्र को देने चाहिएँ।

जो बातें यकायक होती हैं उनको जान लेना भी इतना कठिन नहीं जितना कि एक नया सम्वाददाता महसूस करता है। पहले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो किसी वाके की सूचना विशेषकर पुलिस को दी जाती अतएव उसके द्वारा शीघ्र पता लग सकता है। अतः सम्वाददाता को पुलिस से सम्बन्ध रखना आवश्यक है। के दफ्तर, शफाखाने, कचहरी, क्लब, चुंगी, मदरसे आदि जगह हैं जहाँ से समाचार आते हैं।

खबर प्राप्त करने का सबसे बड़ा कठिन और होशि का काम बड़े २ आदमियों से, असेम्बली आदि के मेम्बरों यात्रियों से सवाल जवाब करना है जिसको अंग्रेजी में इन्टर कहते हैं। इसमें सम्वाददाता को पूरी होशियारी की आ श्यकता होती है। यहां सिर्फ 'कहिये कोई नया समाचार' देने से काम नहीं बनता क्योंकि बहुत से लोग यह नहीं जा कि नया समाचार क्या होता है। उनसे उचित प्रश्न करने आवश्यकता होती है जो गोल न हो जैसे फलां ने क्या कि फलां मामले में क्या हुआ, अमुक सज्जन कहां गये हैं इत्या उसे यह विचार रखना चाहिए कि ऐसे आदमियों के जिनसे उन्हें यह काम निकालना है अवकाश कम होता अतः उसे पहले से जो-जो बातें साफ करनी या जानन उसका नक्शा दिमाग में साफ होना चाहिये। प्रश्नोत्तर में अपने मतलब पर पहुँच जाना चाहिए जिससे ऐसा न हो समय खतम हो जावे और काम कुछ न हो। आमने-सामने बातचीत के समय नोटबुक इस्तेमाल न करनी चाहिए क बहुत से लोग इस बात से घबराकर खामोश हो जाते उनकी बातें नोट की जा रही हैं बाहर निकलते ही शीघ्र बातें नोट कर लेनी चाहिएँ आदि।

योग्य और परिश्रमी मनुष्य के लिए जीवन-बीमा की ए थोड़े समय में अधिक धन कमाने का अति उत्तम उपाय इसमें सारी पूंजी एजेन्ट की जबान है और यदि वह उसे प्रकार से प्रयोग कर सके तो अवश्य ही सफल होगा। भा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में पिछले कुछ सालों में बीमा कराने वालों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई है। इससे ज्ञात होता है कि हमारे देश में जीवन बीमा का अच्छा प्रचार हो गया है और लोग बीमा का लाभ समझने लगे हैं।

जिनसे बीमे की आशा हो उनको एक फहरिस्त बना लेनी चाहिये और नित्य चलते-फिरते उठते-बैठते लोगों से मिलते हुए जब किसी नये मनुष्य की जिसकी आर्थिक स्थिति बीमा चलाने योग्य है ध्यान हो तो उसे उसी समय फहरिस्त में दर्ज कर ले। इस फहरिस्त के हर व्यक्ति से नियम पूर्वक मिलना चाहिये और उसे नित्य बढ़ाते रहना चाहिये। यह पता रखना चाहिए कि कहाँ और किस मनुष्य की मृत्यु हुई और कहाँ दावे का भुगतान हुआ क्योंकि ऐसे स्थान पर काम मिलने की संभावना अधिक रहती है। लोगों से तय किये समय पर अथवा जो समय आप सुविधाजनक समझते हैं, बात करनी चाहिए। जहां तक हो सके बातचीत अकेले में होनी चाहिए। बीमे का काम भीड़ में खराब हो जाता है। बात मनुष्य के चित्त और रुचि का ध्यान करते हुए होनी चाहिये। यदि अधिक भीड़ हो या बीमा कराने वाला क्रोध या कठिनाई में हो तो बीमे की बात न करनी चाहिये यह न समझ लेना चाहिये कि एक आदमी यदि अब बीमे के लिये इन्कार करता है तो वह करायेगा ही नहीं। वास्तव में अच्छा एजेन्ट कभी इन्कार लेकर नहीं आता। वह हमेशा दुबारा बात करने की गुंजाइश बनाकर आता है और अन्त में मना करने वाले का भी बीमा कर दिखाता है। कारण यह है कि अधिकतर आदमी हमेशा एक निश्चय पर जमे नहीं रहते और न एक सा चित्त ही हमेशा रहता है।

एजेन्ट की सारी खूबी तो इस बात में है कि एक ही बात को हर आदमी के चित्त के अनुकूल बनाकर उसके सामने रखे। एक ही दलील पर आदमी पर एक-सा असर नहीं पड़ता। पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो ग्राहक बीमे में बाधक प्रतीत होते थे, वही एजेन्ट से बात करने के बाद साधक प्रतीत होने लगे।

एजेन्ट का काम ग्राहक को यह जँचा देना है कि यह काम उसके अत्यन्त लाभ का है, भीख माँगना नहीं। कोई इस प्रकार की बात नहीं होनी चाहिये, जिससे ग्राहक या उसके पास बैठने वाले नाराज हों। इसलिये एजेन्ट को धार्मिक या राजनैतिक बातें न करनी चाहिये, और यदि ग्राहक के यहां हो रही हों तो उनमें भाग लेकर विवाद पैदा करना ठीक नहीं। आर्थिक तथा सामाजिक बातों में यदि जरूरत हो तो बहुत थोड़े रूप में भाग लिया जा सकता है, फिर अपने मामले पर आ जाना चाहिये कि विषय बदलता हुआ ज्ञात न हो। अपनी कम्पनी की विशेषता पूरे तौर पर समझ लेनी चाहिये और उन पर जोर देना चाहिये। अन्य एजेन्टों का जिक्र या बुराइयाँ अथवा अन्य व्यर्थ बातें कहकर ग्राहक को झगड़े में डालना उचित नहीं। इस तरह वह अवश्य हाथ से निकल जायगा।

यदि एक तरह की पालिसी ग्राहक को पसन्द नहीं आती तो बच्चों की शिक्षा, शादी आदि की पालिसी को उसे सुझाना चाहिये। एक ग्राहक के बनाने पर उसकी सहायता से उसके मित्र को भी बनाया जा सकता है। इस तरह एक-एक करके पीछे पैड कर बुक कराना चाहिये। एक साथ बहुत से कभी बीमा नहीं कराते।

अच्छे एजेन्ट में निम्न बातों का विचार करना चाहिये—

१—रौबदार चेहरा, २—अच्छा स्वास्थ्य, ३—सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति, ४—खानदानी रसूख, ५—शिक्षा।

निम्नलिखित बहुधा घटिया एजेन्ट सिद्ध होते हैं—

१—उच्च पदाधिकारियों के अथवा शहर के अग्रगण्य मनुष्यों के सम्बन्धी।

२—बैंक के एजेन्ट या एकाउन्टेन्ट या कोआपरेटिव सोसा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इटी के मैनेजर।

३—पब्लिक संस्थाओं के सेक्रेटरी या अन्य पदाधिकारी।

४—स्कूल, कालेज, चुंगी, डिस्ट्रिक्ट वोर्ड आदि संस्थाओं के क्लर्क या सेक्रेटरी।

५—मिल एजेन्ट या दलाल।

६—ठेकेदार, वैद्य आदि।

एक ही जगह पर बहुत से एजेन्ट होना ठीक नहीं होता।

सूत, रुई, गल्ला, हुंडी परचे आदि की दलाली भी बहुत आसान और फायदेमन्द है। इस काम के लिये व्यापार सम्बन्धी ताजा से ताजा खबरों का ज्ञान रखना चाहिये तथा हर एक बाके के दोनों बाजुओं खरीद व फरोख्त का पूरा २ ज्ञान कर लेना चाहिये। फिर बिकवाल और लेवाल को एक ही समय में यह सुझाना कि बेचने और देरी करने से यह हानि और फायदा हो सकता है कठिन होगा। अच्छा दलाल आसानी से बिकवाल को यह यकीन दे देता है कि बाजार के गिरने की सम्भावना है और उसी समय लेवाल को उसका विपरीत दर्शा देता है। यह उसी समय हो सकता है कि जब हर बात का शीघ्र ज्ञान और उसको हर तरह का विचार कर लिया जाय। फिर दुकान २ पर यह पूछते फिरने से ही कि कहिये साहब कुछ सौदा है कि नहीं, काम नहीं बनता।

जिन्हें सैर करने का शौक है उनको नमूने दिखाकर थोक या रिटेल आर्डर लेने का काम बहुत फायदेमन्द हो सकता है। हर फर्म को ऐसे एजेन्टों की हर समय जरूरत रहती है और आसानी से सैम्पल व सर्फा किसी भी ईमानदार आदमी को वह फर्म दे देते हैं। इस तरह सैर की सैर और फायदे का फायदा एक ही साथ दोनों बातें हो जाती हैं। चाय, दियासलाई, कपड़ा, किताब, कागज, फाउन्टेनपेन, चाकू, फर्नीचर, इत्र, ताले आदि अनेकों चीजें ऐसी हैं जिनकी इस तरह की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एजेन्सी ली जा सकती है। इसमें यदि एक दो जगहों पर काम न मिले तो घबराना न चाहिये। कभी-कभी एक ऐसी जगह मिल जाती है जहां सारी कमी पूरी हो जाती है आजकल ऐसे एजेन्टों का विश्वास कम किया जाता है इसलिये आर्डर भी कम मिलते हैं। किन्तु अच्छी फर्म का काम लेकर ईमानदारी से काम किया जावे तो काम मिलने में कठिनाई न होगी।

हर शहर के बड़े २ दुकानदारों से जान पहिचान करनी चाहिये और उनसे आर्डर लेने की कोशिश करनी चाहिये। इस तरह छोटे २ दुकानदारों से आसानी से साख हो जाती है और काम ठीक हो जाता है। घरेलू बर्तन, कुकर, रबर स्टाम्प, सीने की मशीन, टाइपराइटर, रेडियो, ग्रामोफोन आदि अनेकों ऐसी चीजें हैं जिनके घरों और दफ्तरों पर जाकर अच्छे आर्डर लिये जा सकते हैं।

शहरों में मकानात की खरीदो-फरोख्त रोज होती रहती है। उत्साही और होशियार पुरुष के लिये इसकी दलाली में अपना भाग्य शीघ्र से शीघ्र बना लेने का बड़ा ही उत्तम अवसर मिल सकता है। हर एक शहर चारों ओर फैलता नजर आ रहा है विशेषकर जिधर कोई स्कूल, रेल या सड़क बन जाती है। उसका पहले से पता रखकर उस तरफ की शहर से बाहर आराजी की खरीदो फरोख्त कई बार कराई जा सकती है, जिससे हर खरीदार को लाभ होता चलेगा और खुद भी दलाली में फायदा होगा।

नई किताबें बड़े २ ऊँचे दामों में खरीदी जाती हैं किन्तु पढ़ लेने पर रद्दी के तुल्य हो जाती हैं जबकि दूसरी जगह उन्हीं किताबों की मांग होती है, ऐसी बेकार किताबें घर-घर में मिल सकती हैं जो कि एक रद्दी की कीमत पर प्राप्त की जा सकती हैं और वही पुस्तकें दूसरी जगह अच्छे दामों में बिक सकती हैं। इस तरह चार पांच रुपये रोज आसानी से पैदा किये जा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

सकते हैं।

दफ्तरों और घरों पर जाकर पत्रिकाओं के लिए छपाई के आर्डर लिए जा सकते हैं और छापेखाने से अच्छा कमीशन प्राप्त हो सकता है।

स्वतन्त्र होने के बाद भारत द्वारा की गई प्रगति के कारण अन्य देशों की दिलचस्पी इस देश के प्रति बढ़ गई है। अमेरिका, योरुप से यात्री यहां आते हैं। उनको ऐसे आदमियों की आवश्यकता होती है जो उनको शीघ्र घुमाकर यहां के स्थानों की सैर तथा परिचय करा सकें। अपने चारों ओर के स्थानों का थोड़ा सा इतिहास जान लेने पर यह काम किया जा सकता है और विदेशी यात्रियों से काफी धन कमाया जा सकता है।

जब कर्जदार किसी दूर स्थान पर चला जाता है तो रुपया वसूल करना कठिन हो जाता है। बड़े २ फर्म जिनका लेन देन दूर २ तक होता है उनकी कुछ कुछ डिग्रियां ऐसी होती हैं जो उनके प्रबन्ध या अवकाश न होने के कारण उनको वह बट्टे खाते में डाल देनी पड़ती हैं। यदि ऐसे कर्जों का वसूल करने का काम किया जाय तो रुपये वाला खर्चा और पचास फीसदी से भी ऊपर देने को तैयार हो सकते हैं।

इलस्ट्रेड विकली के ऊँचे २ इनामों ने पजिल बहुत आम पसन्द कर दिये और सब छोटी बड़ी पत्रिका भी पजिल रहती हैं बहुत लोग इनमें दिलचस्पी लेते हैं और अपना कीमती समय खराब करके सैंकड़ों उत्तर बनाकर भेजते हैं। यदि ऐसे लोगों को उसके हल करने में सहायता दी जाय तो वह इसका एवज देने को तैयार होंगे।

भविष्य जानने की इच्छा लोगों में बहुत होती है। ज्योतिष शास्त्र या जन्मपत्री व हस्तरेखाओं से भविष्य फल का हाल बताया जा सकता है। इसके अलावा कवच, जन्मपत्री, वर्षफल बनाकर बिना धन लगाये धन कमाया जा सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपने किसी प्रोफेसर से जादू के खेल देखे होंगे और आप देख कर हैरान होगये होंगे। वह एक २ दो २ रुपये के टिकटों से दो तीन घन्टों में सौ दो सौ या पांच सौ रुपये पीट लिये। तुम उन खेलों की असलियत समझो तो कुछ भी नहीं केवल हाथ की सफाई है जो थोड़े से अभ्यास से आपको भी आ सकती है और साधारण एबराटस के सिवाय कुछ नहीं है। यह एबराटस इतनी थोड़ी पूंजी से तैयार हो जाते हैं कि जो ना के बराबर होती है। इसके अलावा मिस्मरेजम (इसका बयान हमने अन्य जगह पर किया है) क्लेयर वायस जिसमें अपने साथी की आंखों पर पट्टी बांधकर दूर बिठा देते हैं और अपना जाना हुआ हाल उससे बतलाते हैं। वेन्ट्रावाकज्मि जिसमें अपनी आवाज को इस तरह बनाना पड़ता है कि पुतलियां बोलती हुई मालूम पड़ती हैं, यह सब थोड़ा २ अभ्यास से आ सकते हैं और अच्छे व्यवसायी बन सकते हैं।

यदि आपको जमनास्टिक, तैरना, गाना, नाचना, किरकिट, हाकी, फुटबाल, बाक्सिंग इत्यादि आता है तो उस विषय पर थोड़ा पढ़कर उसे सिखाकर काफी धन कमा सकते हो।

घरों पर जाकर लड़कों-लड़कियों को इम्तहान के लिये तैयार करना व शार्टहैंड व बुककीपिंग इत्यादि पढ़ाने का काम भी बिना पूँजी किया जा सकता है।

लेखक तथा व्याख्यानदाताओं को अपनी पुष्टि करने के लिये अन्य मान्य लेखकों के वचन उद्धृत करने पड़ते हैं। जिन को पुस्तक पढ़ने का शौक हो, वह ऐसे वचन एकत्रित कर और प्रकाशकों से मिल, लेखकों के सम्पर्क में आ सकते हैं। इससे लेखकों का समय बच जाता है और इसके एवज में एक अच्छी रकम मिल सकती है।

जिनका हस्तलेख सुन्दर हो वह वकील सालसिटरों से मिलें, उनको दस्तावेज लिखने या नकल करने को मिल जायेंगे और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिखाई भी ठीक मिल जायगी। अदालती कागज, तजवीज आदि का तर्जुमा एक भाषा से दूसरी भाषा में करना, दरख्वास्त व दस्तावेज के मसौदे बनाने का काम बहुत लाभदायक हो सकता है।

जिनको ड्राइंग व पेन्टिंग का शौक हो वह पुरानी हाथ की तस्वीरों में फिर से रंग भरना, फोटो की तस्वीरों पर रंग लगाकर सुन्दर बनाना, सिनेमा सलाइड व पुराने साइनबोर्डों को नया बनाने का काम कर सकते हैं।

दरवाजे पर नेम प्लेट तथा लेटरबक्स होता है तो बड़ी सुविधा होती है, आने वालों को अधिक पूछ-ताछ नहीं करनी पड़ती, डाक गड़बड़ नहीं होती। यह बात लोगों को बताकर सरलता से नेम प्लेट व लेटर बक्सों का आर्डर मय पेशगी के मिल सकता है। आप भी कारीगरों को थोड़ा पेशगी देकर इन चीजों को तैयार करा सकते हैं। फिर एक शहर से दूसरे शहर में काम मिलता रहेगा।

कुत्ते, बिल्ली, बन्दर, नौले, तोते, मैना, बया आदि के बच्चे मुफ्त पकड़े जा सकते हैं, और उनको सिखाकर अच्छे दामों में बेचे जा सकते हैं। पाठक यदि इस सीधे-सादे काम को दिल लगाकर करें तो मनमाना लाभ उठा सकते हैं।

आपके शहर में ऐसी अनेक फर्म होंगी, जो रोज माल डाक तथा रेलवे से बाहर भेजते या मंगाते हैं। इस माल को पैक करने, बिल्टी कराने, छुड़ाने और खोलने में उनका कीमती स्टाफ अपना समय नष्ट करता है। यदि यह काम आप अपने जिम्मे ले लें तो काफी आमदनी हो, और कारखानों की बड़ी दिक्कत दूर हो जावे। इसके लिये फी पेटी मुनासिब दाम तय करके माल पैक करने से लगाकर बिल्टी ला देने तक और माल की ठीक प्रकार डिलीवरी लेकर खोलकर संभाल देने का काम आप बिना विशेष पूँजी के कर सकते हैं। माल छुड़ाने में वजन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा पैकिंग भली प्रकार देख लेने का पूरा-पूरा ध्यान करना पड़ता है, वरना धोखा खाने की सम्भावना होती है, इसके साथ रेलवे से क्लेम करने का काम भी किया जा सकता है।

छठा अध्याय

देहाती धन्धे

खेती और गाय पालना हमारे देहात का प्रधान धन्धा है। यह धन्धा ही हमारे देश का जीवन है। किन्तु आजकल यह ऐसी शोचनीय दशा को पहुँच गया है कि सरकार को स्वयं अपने को जीवित रखने के हेतु से इसकी दशा सुधारने के लिये ध्यान देना पड़ा है। कृषि और गौ-पालन दोनों साथ-साथ चलते हैं। एक के बिना दूसरे का जीवित रहना कठिन है। खेती की ऐसी दुर्दशा केवल इसलिये है कि हमारे कृषक गौ-पालन छोड़ चुके हैं। गाय के स्थान पर अब यदि पाली भी जाती हैं तो भैंस या बकरी। इसका परिणाम यह होता है कि खेती के लिये बैल या तो कर्ज लेकर खरीदने पड़ते हैं, जिससे लाभ सूद में चला जाता है अथवा मरे-गिरे बैल लेने पड़ते हैं कि जिनसे जमीन ठीक तरह से नहीं कम पाती।

खेती और गौ-पालन का विषय इतना बड़ा और गहन है कि इस पुस्तक में नहीं लिखा जा सकता। हम यहां अन्य ऐसे काम बतलाना चाहते हैं कि जिनसे देहाती किसान तथा जिम्मेदार अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं और बेकार नवयुवक जिनके पास थोड़ी-सी भूमि हो अथवा न भी हो तो सुखपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकते हैं।

सब्ज तरकारी—शहरों में आम तौर पर गंदी जगहों की सब्जी गंदे तरीके से बेची जाती हैं। सब्जी लाने वाले पैसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुराते हैं और पैसे चुराने के हेतु निकम्मी सड़ी-गली सस्ती सब्जी खरीद ले जाते हैं। यदि ट्राईसिकलों से घरों पर ताजा चुना हुआ साफ साग जो देहात में आसानी व सस्ते लगान में जमीन लेकर उगाई जा सकती है, सप्लाई की जावे तो काफी लाभ हो सकता है। इसके लिये हैंडबिल छपवाये जायँ, उनमें तमाम सागों के नाम तथा गुण होने चाहिए और हरएक की विटेमिन, शक्ति व खुराक की मिकदार दिखानी चाहिये तथा यह दिखाना चाहिये कि किस विटेमिन की कमी से क्या हानि होती है। जैसे—

(१) विटेमिन ए की कमी से (जो करमकल्ला, गाजर, गोभी, टमाटर आदि में अधिकता से होते हैं) हानि :

अ—बालकों की बढ़वार बन्द हो जाती है, बड़ों का बदन क्षीण हो जाता है।

ब—हड्डी व दाँत कमजोर हो जाते हैं।

स—बीमारियों के कीटाणुओं को रोकने की शक्ति खून में नहीं रहती, विशेषकर फेफड़े और सांस के रोग की।

द—नेत्र कमजोर हो जाते हैं और रतौंधी आने लगती है।

(२) विटेमिन बी की कमी से (जो सेम, बैंगन, करमकल्ला, आदि में अधिकता से होते हैं) हानि :

अ—भूख कम लगती है या मारी जाती है।

ब—बदहजमी तथा कब्ज हो जाता है और आँतों में कीड़े पैदा हो जाते हैं।

स—वजन में कमी, शक्ति में कमी, जल्द थक जाना आदि शिकायतें हो जाती हैं।

द—सिर दर्द व चमड़े में झुर्री पड़ जाना।

य—दिल, नाड़ी व ज्ञानतन्तु कमजोर हो जाते हैं।

(३) विटेमिन सी की कमी से (जो शलजम, करमकल्ला,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टमाटर आदि में अधिकता से होते हैं) स्करवी होजाती है। इत्यादि।

कुछ हेन्डबिल माहवारी तैयार करने चाहियें जिनमें उन माहों की विशेष तरकारी पर अधिक जोर हो, जैसे (१) टमाटर में तीनों विटेमिन बड़ी कसरत से होते हैं और कच्चे या अन्य सागों के साथ पका कर खाये जाते हैं (२) टमाटर तिल्ली को उत्तेजित करते हैं तथा कब्ज संग्रहणी आदि को दूर करते हैं (३) टमाटर में सब पदार्थों की अपेक्षा अधिक विटेमिन होते हैं (४) ये खून को साफ करते हैं। (५) इनमें ऐसे कुदरती तेजाब होते हैं जो पेट व आंतों को साफ तथा ठीक दशा में रखने के लिए आवश्यक हैं। (६) टमाटर गुरदों को साफ करते हैं और शरीर से जहर तथा दूषित पदार्थ को जो नित्य शरीर में एकत्र होकर रोग पैदा करते हैं, बदन से बाहर निकाल देते हैं।

इस तरह जनता को यह विश्वास दिला देना चाहिये कि ताजी साग मनुष्य मात्र के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है और उनके रचित सेवन से हजारों रोज होने वाले रोग दूर हो सकते हैं और डाक्टरों के बिलों से छुटकारा मिल सकता है। माहवारी हेन्डबिलों में दस रुपया से लगाकर दो रुपया माहवार तक की स्कीम बना देनी चाहिये कि इतने रुपये पेशगी देने पर अमुक २ साग इतनी सी मात्रा में रोज ताजा साफ किये हुये घर पर मिल जाया करेंगे। थोड़ी सी मेहनत से बड़े शहर में १०० ५०० ग्राहक थोड़े समय में ही बन सकते हैं शहर में एक दफ्तर खोल लेना चाहिये। सब्जी खेत पर ही साफ कराकर एक २ पौंड की गड्डी बना देनी चाहियें और ट्राइसिकलों पर खेत या दफ्तर से जैसा सुभीता हो खाना पकाने के समय से पहिले ही दोनों टाइम सुबह व शाम को ग्राहकों के घर पहुँचा देना चाहिये। बांटने वाला भूली, शलजम, पोदीने आदि की गड्डी और आलू

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टमाटर आदि तौल कर फहरिस्त के अनुसार बांट कर आ सकता है। उसको हिदायत कर देनी चाहिये कि जो नये सज्जन सब्जी खरीदें उसके नाम पता फहरिस्त में और उनको हैन्डबिल इत्यादि पहुँचा कर अपना मुस्तकिल ग्राहक बना लेना चाहिये।

जो सब्जी ग्राहकों से बचे उसे दिन के दिन बाजार में बेच दिया जावे अथवा गांव वापिस भेज कर सुखवा दी जाय। पत्तियों द्वारा साग कटवा कर सीधे धूप में सुखाये जा सकते हैं। गूदेदार साग थोड़े उबालकर या भाप लगाकर सुखा लिये जाते हैं सूखे साग सफर में तथा घरों में समय कुसमय के लिए बड़े काम की चीज होती हैं। फौजों में लड़ाई तथा ऐसे देशों में जहां यह साग न होते हों ठीक तरह एडवरटाइज करने पर अच्छे रेट से बेचे जा सकते हैं। धीरे २ साग का काम एक शहर से दूसरे में फिर तीसरे में फैलाया जा सकता है।

२—ऊपर के अनुसार ही दूध दही मक्खन और घी का व्यापार भी किया जा सकता है। दूध सदैव स्वस्थ और निरोग जानवरों का लेना चाहिये। हम ऊपर की बात न दुहराकर कर केवल कुछ आवश्यक बातों का उल्लेख करते हैं।

दूध की जांच करने की विधियां:—

(१) लेक्टोमीटर—दूध पानी से कुछ भारी होता है। दूध की स्पेसिफिक ग्रेविटी १·०२० से लगाकर १·०३३ तक होता है अर्थात् दूध पानी से १·०२० से लगाकर १·०३३ गुना तक भारी होता है। पर जल में तथा दूध में कोई चीज समान भाग तक नहीं डूबेगी जल की अपेक्षा दूध में कुछ कम डूबेगी अर्थात् ऊपर को निकली रहेगी। इस सिद्धान्त पर एक यन्त्र बनाया गया है जिसे लेक्टोमीटर कहते हैं। इसमें नीचे एक बल्ब रहता है जिसमें पारा या शीशा भर दिया जाता है बीच का भाग खाली रहता है ऊपर पतली नली होती है जिस पर निशान लगे होते हैं। यह निशान भिन्न-भिन्न कारखानों के यन्त्रों में भिन्न तरह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से होते हैं। बढ़िया किस्म के लेक्टोमीटर में थर्मामीटर भी लगा हीता है जिससे दूध के ताप का भी पता लग जाता है। लेक्टोमीटर से दूध का पता लग जाता है यदि क्रीम (जो दूध से हलकी होती है निकाल ली जाती है तो स्पेसिफिक ग्रेविटी घट जाती है। बस यदि लेक्टोमीटर खालिस दूध के निशान से ऊपर उठ जाता है तो समझना चाहिए कि क्रीम निकाल लिया गया है। यदि निशान से अधिक डूबता है तो समझना चाहिये कि पानी मिला हुआ है। किन्तु यह तरीका ठीक नहीं इसमें धोके की इसलिये गुंजाइश है कि पानी मिला हुआ दूध हल्का हो जाता है, मक्खन निकला भारी। बस दोनों का उचित संयोग ऐसा किया जावे कि लेक्टोमीटर खालिस दूध के निशान पर ही रहे। अलीगढ़ जैसे शहर में जहां मक्खन का काम बहुत दिनों से होता है दूध सप्लाई करने वाले सपरेटा औटा कर सपरेटा दूध और पानी ऐसी उचित मात्रा में मिलाते हैं कि लैक्टोमीटर सही निशान पर ही रहता है ऐसे दूध के लिए जांच का एक दूसरा प्रयोग है।

क्रोमोमीटर—एक कांच का पतला गिलास जैसा होता है जिस पर निशान लगे होते हैं। इसमें निशान तक दूध भर लिया जाता है। दूध या तो गरम किया होता है या आधा दूध और आधा उबलता हुआ पानी मिला दिया जाता है और इसको क्रोमोमीटर में डालकर २४ घंटे रख दिया जाता है क्रीम ऊपर उठ आता है और निशानों पर क्रीम या दूध की मात्रा पढ़ ली जाती है। यह बिलकुल सही तरीका नहीं है क्योंकि सम्भव है कि पूरी क्रीम न उठे अथवा दूध के कुछ अन्य भाग भी क्रीम के साथ उठ जावें ऐसा सम्भव है। मगर यह जाँच तो हो ही जाती है कि दूध में क्रीम है या नहीं। क्रीम के जल्द और सही मात्रा में नाप लेने का तरीका वेबकौफ ने निकाला है जो इस प्रकार है :—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) बेबकाफ का तरीका—दूध पिटेट से नापकर एक शीशी में डाला जाता है। शीशी की गरदन पतली नली के समान होती है जिस पर निशान लगे होते हैं। शीशी में दूध डालने के बाद कुछ सलफरिक एसिड अर्थात् गंधक का तेजाब डाला जाता है और हिलाया जाता है, यहां तक कि घोल काला हो जावे। फिर उसको एक मशीन पर इस तरह रखकर कि शीशी की गर्दन केन्द्र की ओर रहे, तेजी से घुमाया जाता है। यदि मशीन न ले सके तो शीशी को गोफन[1] में बांधकर सिर के चारों ओर तेजी से घुमाने से भी काम चल सकता है। ऐसा करने से दूध के भारी पदार्थ शीशी की पैंदी की ओर आ जाते हैं और क्रीम जो हल्की होती है, छँटकर गरदन की ओर आ जाती है। फिर कुछ गरम पानी शीशी में डालकर क्रीम को शीशी की गरदन में ले आते हैं और उसकी मात्रा निशानों में पढ़ लेते हैं। इस विधि में क्रीम की दूध में सही मात्रा मालूम की जा सकती है, किन्तु दूध में कितना पानी है, यह नहीं नापा जा सकता।

(४) एक जर्मन ने दूध में पानी की मात्रा मालूम करने का आसान तरीका निकाला है। दूध में प्लास्टर आफ पेरिस मिलाकर गाढ़ा लेई सा कर लिया जाता है। १·०३० स्पेसिक ग्रेविटी के दूध के साथ ६०° एफ. पर यह १० घन्टे में सख्त होता है। यदि दूध में २५ फीसदी पानी हो तो १॥ घन्टे में सख्त हो जायगा।

दूध जांच के लिये लिया जाय तो पहले कुछ उलट पलट लेना चाहिये, क्योंकि क्रीम का दूध हल्का होने से ऊपर आ जाता है, अथवा दूध हिलने से मक्खन के छोटे २ जर्रे बन कर ऊपर तैरने लगते हैं। पर यदि बिना उलटे-पलटे ऊपर से

[1]गोफन—यह रस्सी का होता है, जिसे देहात वाले अपने खेतों पर जानवरों को उड़ाने में प्रयोग करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूध ले लिया जाय तो भूल होने की सम्भावना है। दूध के बरतन सदा साफ रखने चाहिये। नमक के पानी से उनको अच्छे प्रकार धोकर फिर साफ पानी से धो देना चाहिये।

दूध जब दूर के स्थानों को भेजना पड़ता है तो ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता होती है कि दूध खट्टा न हो और ताजा बना रहे, कुछ अनुभूत प्रयोग नीचे देते हैं—

१—दो भाग बोरकएसिड में तीन भाग नमक मिलालो, इसका दो ड्राम यदि एक गेलन दूध में मिलाया जाय तो दूध २४ घण्टे तक खराब नहीं होता।

२—दूध जब कार्क को तार से बांधकर एअर टाइट बोतलों को बन्द किया जाता है तो उबलते हुए पानी में बोतलों को रखकर गरम किया जाता है। इस तरह की बोतलें एक साल बाद भी खोली जावें तो दूध ताजा मिलेगा।

३—बोतलों में दूध भर ओक्साइजिन और कार्बोनिक एसिड का असर मशीन से दबाव डालकर किया जाता है और बोतलें बन्द कर दी जाती हैं, यह दूध दो माह तक ताजा रहता है।

४—तीन फीसदी हाइड्रोजन पर-ओक्साइड सोलूशन का १४वाँ भाग यदि सौ भाग दूध में मिलाया जाय और हिलाकर बोतलों में भरकर ५ घन्टे ५० या ५२° सी. पर रखा जाय तो ठंडा होने पर दूध एक महीने तक खराब नहीं होता और ताजा दूध की तरह बना रहता है।

दूध से मशीन द्वारा क्रीम निकाली जाती है। एक मन दूध में ५ सेर क्रीम निकलती है। क्रीम दो गेलन में १ सेर शकर मिला उचित खुशबू व रंग देकर मशीन से जमाया जाता है। पिस्ता बादाम का चूरा लगाकर बेचा जा सकता है, इसे आइसक्रीम कहते हैं। आइसक्रीम के लिये रंग जाफरान या हल्दी से पीला, नील से नीला, हल्दी नील के मेल से हरा कारमाइन, इमोनियांवाटर में घोलकर मिलाने से सुर्ख रंग तथा इनके संयोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से भिन्न २ शेड तैयार होते हैं। खुशबू नकली आती है अथवा जिस फल की खुशबू देना हो उसका रस २ भाग, क्रीम १० भाग, लाइमजूस या ओरेंजवाइन १ भाग मिलाना चाहिये।

क्रीम को पानी के साथ चर्न में डालकर फिराया जाता है तो क्रीम की चर्बी के कण एकत्र हो एक हो जाते हैं। चर्न कई तरह के होते हैं, किन्तु वेरिलटाइप सब में ठीक और सस्ता होता है इस मक्खन के लोथ को चर्न से निकाल कर मेज पर रौलर प्रेस करके पानी निकाला जाता है और मक्खन की टिक्कियां बनाकर कागज में लपेट दी जाती हैं या डिब्बों में भर दी जाती हैं। मक्खन में रंग, केसर हल्दी या एनाटो को घी या जैतून के तेल में गरम किया जाता है। अंग्रेजी फर्म प्रायः घी या जैतून के तेल की जगह सूअर की चर्बी प्रयोग करती हैं।

जिस तरह दूध में धोखा है उसी तरह मक्खन में भी है। नकली या फिर ताजा किया हुआ मक्खन ऐसा बनता है कि खाने वाले असली व नकली मक्खन में भेद नहीं बता सकते। नकली मक्खन औलियोमार्गरीन या बौटेरीन होता है।

औलियो मार्गरीन ताजा वध किये हुए मवेशियों की चरबी को साफ जल में रखकर बरफ से ठण्डा करके फिर गर्म करके मशीन से साफ करके तैयार किया जाता है, बाद में दूध या क्रीम के साथ गर्म करके अंडे की जरदी का रंग दिया जाता है और नमक देकर प्रेस कर दिया जाता है। वटरीन ऊपर के समान ही सूअर की चर्बी से बनाया जाता है। असली मक्खन की पहिचान भी बड़ी ही सरल है—(१) थोड़ा सा मक्खन चम्मच में लेकर लैम्पों की चिमनी या स्प्रिट लैम्प पर गर्म करो। यदि मक्खन असली होगा तो जरा भी आहट न करेगा और झाग बहुत देगा। नकली मक्खन झाग नहीं देगा या कम देगा और चटकेगा। २—औटते हुए दूध को ले उसमें मक्खन डालो और दूध में फेंटदो, फिर बोतल में भर बरफ में रख ठंडा करो और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसे चलाओ, जब तक चिकनाई जम न जाए। असली मक्खन छोटे २ कणों में सारे दूध में मिल जाता है अतः उसके कण अलग २ मिलेंगे। नकली मक्खन की चर्बी एक स्थान पर जम जायगी। वह किसी भी चीज से अलग हो सकती है।

मक्खन को ठीक हालत में रखने के कई उपाय हैं। सबसे सरल उपाय यह है कि जिस डिब्बे में इसे भरा जाय उसके ऊपर एक जगह खाली छोड़ो इसमें आधी इंच सांभर नमक भरा जाय और डिब्बा बन्द किया जाय। नमक मक्खन का पानी बनता है। हवा के कीटाणु अन्दर जाने से रोकता है। नमक के साथ शोरा, शहद या शक्कर मिलाई जाती है इसी तरह टाटरी और सोडा-बाईकार का घोल भरा जा सकता है। एक और उपाय यह है कि इसे कपड़े में प्रेस करके पानी निकाल दिया जाता है और डाट को तार से बाँध दिया जाता है इसे ठंडे पानी में रखकर उबाला जाता है फिर डिब्बों को निकाल कर ठंडा कर दिया जाता है। इस तरह का मक्खन ६ माह तक खराब नहीं होता।

खट्टे मक्खन को ठीक करने की सरल विधि यह है कि एक सेर खराब मक्खन में २५ या ३० बूंद लाइम क्लोराइड की डालो और खूब फेंटो फिर ठंडे पानी से ठीक तरह धो डालो और प्रेस से पानी निकाल दो। इसके अलावा केडेस्ड मिल्क, सूखा मिल्क या मिल्क पाउडर बनाना अन्य ऐसे काम हैं जो दूध या मक्खन के काम के साथ किये जा सकते हैं।

(३) फलों का व्यापार— एक और काम जो देहात में बहुत मुनाफे से किया जा सकता है। फलों को डिब्बों में बन्द करना है। फलों की काश्त हमारे देश में बढ़ रही है। शीघ्र खराब होने वाले आम अमरूद आदि फल अन्य देशों में नहीं जाते, इस कारण मन्दे बिकते हैं कभी २ उनका निकालना भारी समस्या बन जाती है। कोई ऐसा तरीका निकालने की आवश्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कता है जिससे वह अधिक समय तक ताजी रह सकें। ऐसे जो तरीके निकाले गए हैं उनमें डिब्बों में बन्द करना सबसे सरल और सस्ता साधन है। इस तरह फल और २ देशों में भेजे जा सकते हैं जहां उनकी पूरी कदर हो और दाम भी ठीक मिलें।

फलों को ठीक दशा में रखे रहने का मुख्य कारण यह है डिब्बों में बन्द करने से वह कीटाणु नष्ट कर दिए जाते हैं जिन से सड़न पैदा होती है फिर उनको इस तरह बन्द किया जाता है कि बाहर की वायु प्रवेश न कर सके। कीटाणु मारने के लिए उबलता हुआ पानी खांड की चाशनी नमक का पानी आदि प्रयोग में लाए जाते हैं किन्तु अब एक और नया तरीका निकाला गया है जिससे फल के स्वाद में भी अन्तर नहीं पड़ता।

यह तरीका भाप का प्रयोग करके कीटाणु नष्ट करने का है। भाप द्वारा कीटाणु चाशनी या नमक के पानी से अति शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। डिब्बे के अन्दर भाप दो तरह से पहुँचाई जाती है—(अ) डिब्बे में फल भर कर मुंह खोलकर भाप में रख दिया जाता है जिससे डिब्बे की हवा निकल जावे और उसकी जगह में भाप भर जावे और डिब्बे को इसी दशा में रांज दिया जाता है। (ब) डिब्बे को भरकर और रांज कर बाद में उसके अन्दर भाप पैदा की जाती है। यह सबसे भला तरीका है। डिब्बे के लिये टीन सबसे अच्छी चीज है। कांच तो काम नहीं देता। कीमती पड़ता है और टूट-फूट का डर रहता है। अब एक तरह के डिब्बे और चले हैं जो सीनेटरी कान्ट कहलाते हैं राँजने वाले डिब्बों में यदि छेद रह जाता है तो फल खराब हो जाते हैं। रांजने से फलों के ऊपर से जलने का भय रहता है। नये डिब्बों में मुँह पर रबर का छल्ला रहता है। पेच से छल्ले पर डाट कस दी जाती है और डब्बा ऐअर-टाइट हो जाता है। इनका मुँह भी चौड़ा होता है जिससे साबुत फल भरे जा सकते हैं। यह काम साल में आठ माह तक किया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाता है। मई से अगस्त तक आम रहता है, सितम्बर में केला व नवम्बर में अमरूद शुरू हो जाता है। फल भरने के लिए ताजे पके हुए होने चाहिये। कच्चे अथवा ज्यादा पके ठीक नहीं होते। शेष महीनों में कोई और काम जैसे गुलाब का इत्र, गुल कन्द, नारँगी के छिलकों का तेल, आँवले आदि का मुरब्बा आदि का काम किया जा सकता है।

(४) रेशम का कीड़ा पालना—रेशम के कीड़े चार प्रकार के होते हैं जिनमें दो प्रकार के अर्थात् शहतूत के कीड़े और अण्डे के कीड़े यू० पी० के देहात में आसानी से पाले जा सकते हैं। इस काम के लिये कुछ बाँस की टोकरी, लकड़ी की ट्रे और जाल की आवश्यकता होती है, इसलिये यह काम बहुत कम पूंजी से किया जा सकता है।

(अ) शहतूत का कीड़ा पालने से पहले शहतूत के पेड़ों का प्रबन्ध कर लेना चाहिये जिससे रोज ताजे पत्ते मिल सकें। यह कीड़े अण्डों से करीब सात दिन में निकल आते हैं और तभी इनको शहतूत के कोमल पत्ते खाने की आवश्यकता होती है। पत्तियाँ कुट्टी की तरह काटकर दिन में चार-पांच बार बदली जाती हैं। ट्रे जिसमें कीड़े हैं जाल बिछाकर ऊपर कतरी हुई पतियाँ डाली जाती हैं। कीड़े रेंग कर जाल के ऊपर ताजी पत्तियों में आ जाते हैं। जाल के नीचे का कूड़ा और पुरानी पत्तियाँ हटाकर ताजा डाल दी जाती हैं। १५ दिन में कीडे बड़े और पीले रँग के हो जाते हैं। जब ये पीले रंग के दिखाई देने लगें तब उनको बाँस की टोकरियों में जिनमें झूरियादार कागज रखा जाता है ले लिये जाते हैं। वहां वे अपने रेशम का गुटा जिसे कोकून कहते हैं दो दिन में बना देते हैं। ये कोकून धूप दिखाकर या गरम करके मार दिए जाते हैं और फिर गर्म पानी में डुबाकर धागे का एक सिरा ढूंढकर रील पर लपेट लिया जाता है। यदि कीड़ों को न मारो तो वह गुटे को काट-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर बाहर निकल आते हैं और अंडे देते हैं इस तरह का रेशम चरखे से कातना पड़ता है और ऊपर वाले से सस्ता बिकता है।

(ब) अंडे का कीड़ा पालना शहतूत के कीड़े से बहुत आसान है और यह काम शुरू करने वाले को पहले इसी तरह के कीड़े से प्रारम्भ करना चाहिये। इसके अण्डे ट्रे में कागज पर रख दिये जाते हैं। इनमें सात दिन में पीले पीले कीड़े निकल आते है। कीड़े अण्डों से निकल आने पर उनको खाने की जरूरत होती है तब इनके ऊपर कोमल अण्डे की पत्तियां डाल दी जाती हैं यह पत्तियां शहतूत की पत्तियों के समान कतरी न जाकर हाथ से दो २ तीन २ टुकड़े करके डाल दी जाती हैं। पत्तियां दिन में चार या पांच बार बदल देना चाहिए जब १५ या २० दिन में कीड़े पीले या नीले हो जाते हैं तब उनको टोकरियों में जिनमें सूखी आम की पत्तियां भर ली जाती हैं रख लिये जाते हैं यहां यह कोकून बना लेते हैं। यह कोकून शहतूत के कीड़े के समान एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक नहीं होता और इसे हर हालत में कातने की जरूरत होती है। जब कीड़ा रेशम काटकर बाहर निकल आता है तो रेशम को पानी में उबालकर सोडे से धोकर चरखा या तकली से कात लिया जाता जाता है। कीड़ा जो अब तितली के समान हो जाता है ट्रे में कागज पर रख दिया जाता है। जहां यह फिर अंडे देता है।

(५) शहद की मक्खी पालना—शहद से प्रायः सभी परिचित हैं। यह एक उत्तम और पौष्टिक भोजन है। दवाइयों में विशेष रूप से इसका प्रयोग किया जाता है किन्तु असली शहद का मिलना कठिन है। अव्वल तो शहद में चाशनी वगैरह मिलाई जाती है, दूसरे जो शहद असली भी होता है वह मसल कर इस बुरी तरह से निकाला जाता है कि उसमें हजारों मक्खियां और अंडे बच्चों का रस मोम शामिल होकर शहद गंदा और बद जायका हो जाता है। शहद की मक्खियों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालना और उनसे साल में चार पांच मरतबा शहद ले लेना इतना सरल है जैसा चिड़ियों का पालना या गाय भैंस से दूध लेना। अन्य देशों में शहद की मक्खियां पालकर करोड़ों रुपये पैदा किये जाते हैं।

शहद की मक्खी ऐसी जगह रहना पसन्द करती है जहां फल फूल के बाग हों। सौभाग्य से हमारे देश में इनकी कमी नहीं है। यदि शहद की मक्खियों का पालना शुरू कर दिया जावे तो इससे बागों को भी बड़ा लाभ होगा क्योंकि फलों की पैदावार बढ़ाने के लिए इन मक्खियों का होना जरूरी है। जब यह नर फूल में रस लेने जाती हैं तो उसमें से पोलिनग्रोन इनके पंखों तथा शरीर में लग जाते हैं फिर यह मादा फूल में मक्खी के जाने पर उसमें गिर जाते हैं जिससे फल की उत्पत्ति होती है। जिस फूल तक मक्खी नहीं पहुँचती वह फल नहीं दे सकता। इस तरह शहद की मक्खी की अधिकता से फल की वृद्धि होती है अतः शहद की मक्खी पालने से दुगुना लाभ होता है।

शहद की मक्खियां चार प्रकार की होती हैं किन्तु हिन्दुस्तानी छोटी मक्खी पालने में सबसे ज्यादा लाभप्रद हैं। यह मक्खी आध इंच लम्बी और पहाड़ी मक्खी से छोटी तथा मोटी होती है। इसके पेट के नीचे काली तथा बादामी धारियां होती हैं। यह मक्खियां अपना छत्ता अंधेरी खोह में लगाती हैं और अधिकतर इनके छत्ते सिलसिलेवार होते हैं। छोटी शहद की मक्खी जिसके पेट के नीचे सफेद काली तथा बादामी धारी होती है और जो एक छोटा सा छत्ता लगाती है पालने योग्य नहीं होती। एक छत्ते में मक्खियां तीन तरह की होती हैं-(१) रानी जो सिर्फ एक ही सब से बड़ी होती है और इसके डंक होता है। इसका काम केवल अंडे देना और बच्चों को पालना होता है। रानी छत्ते के निचले भाग में हर रोज अंडे देती है। यह दो तीन वर्ष लगातार अंडे देती है और एक दिन में २०००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तक दे सकती है। इन अंडों से झांझा बनता है वो कुछ समय तक सोने की दशा में रहता है। दूसरी मजदूर मक्खियां होती हैं। यह उत्तम अंडों से पैदा होती हैं। इनके पेट पर काली व बादामी धारियां होती हैं और डंक भी होता है। यह जब डंक मारती हैं तो स्वयं भी मर जाती हैं। इनकी जबानें रानी व नर मक्खियों से लम्बी होती है जिससे यह फूलों का रस चूसती हैं। इन मक्खियों का काम छत्ता बनाना, उसे साफ रखना और हिफाजत करना तथा बच्चों की देख भाल करना होता है। छत्ता बनाने में यह गरमी सरदी का ध्यान रखती हैं गर्द मिट्टी को झाड़ती और मरी हुई मक्खियों को निकालकर बाहर फैंक देती हैं इस तरह बड़ी चतुर और काम की होती हैं। (३) नर मक्खियां, जिन्हें ड्रोन कहते हैं यह बड़ी काले रंग की सुस्त और काहिल होती हैं और मजदूर मक्खियों के लाये हुए खाने पर सब्र करती हैं इनका काम रानी को हामिला (गर्भवती) करना होता है। जब रानी को हामिला कर देती हैं तो मजदूर मक्खियां उनको मार डालती हैं।

मौसम में जब फूल खिलते हैं तब छत्ता शहद से भर जाता है और या कई रानियां तैयार हो जाती हैं तब पुरानी रानी अपनी वफादार मजदूर साथियों को लेकर अपना पुराना घर नई रानी के लिये छोड़ देती है। यदि कई रानियां हो जाती हैं तो या तो उनमें से एक के सिवाय बाकी को मजदूर मक्खियां मार डालती हैं या उनको भी कुछ साथियों के साथ छत्ता छोड़ना पड़ जाता है रानी के साथ कुछ नर मक्खियां हो लेती हैं। ऐसा भी होता है कि यह किसी दूसरे छत्ते पर चढ़ाई कर देती हैं तब घोर युद्ध होता है जो पार्टी जीत जाती है वह वहां आबाद हो जाती है और अंडे बच्चों को अपनी तरह पालती हैं हारी हुई छत्ता छोड़कर भागती हुई गृहहीन मक्खियां इधर उधर भुन २ करती दायदों में उड़ती हैं और थक कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी पेड़ की गुद्दी, छज्जे के नीचे या किसी सोट या लकड़ी पर एक गुच्छे में बैठ जाती हैं। यदि इस तरह बैठने में देर करती हैं तो पकड़ने वाले बारीक फौवारेदार पिचकारी से उन पर पानी छोड़कर उनके पर भारी कर देते हैं जिससे कहीं जल्द बैठ जायें। यह गृहहीन मक्खियां जब कहीं बैठ जाती हैं तो फिर कुछ स्काउट छत्ते के लिये कुछ उचित स्थान तलाश करने चली जाती हैं और जब तक वह लौट कर नहीं आतीं मक्खियों का समुदाय इसी प्रकार लटका रहता है। स्काउट मक्खियां जब स्थान तलाश हो जाने की सूचना देती हैं तो सब मक्खियां तेजी से सीधी उनके पीछे उस स्थान को चली जाती हैं बिना स्थान तलाश किये निकल भागना ही उनकी एक भूल है और इसी भूल का लाभ मक्खी पकड़ने वाला उठाता है वह अपना खाली छत्ता वहां ले आता है और एक मजबूत पंख से उनको झाड़कर छत्ते में ले आता है। यदि ऐसा करने में कुछ मक्खी उड़ जायें तो घबराना नहीं चाहिये यदि रानी अन्दर आगई हो तो चिन्ता न करनी चाहिये सब मक्खियां अन्दर आजावेंगी। छत्ते का मुंह मक्खियां झाड़ते समय इतना ढक लेना चाहिये कि अंधेरा सा हो जावे। फिर सब रानियां और कुछ मजदूर मक्खियां अन्दर आ जायें तब छत्ते के ऊपर के खाने या ढकने से बन्द कर छत्ता अपने मगसखाने यानी मक्खी पालने के स्थान को ले जाना चाहिये। बाहर की मक्खियाँ उड़ती हुई छत्ते के साथ चली जायेंगी। इसके ऊपर के खाने में शहद या शोरा लगाना चाहिये, ताकि मक्खियां नये घर को न छोड़ें। ये शहद खाने में लग जायेंगी और रानी अंडे देना, मजदूर शहद लाना और छत्ता बनाना शुरू कर देंगी। इसको चीटियों से बचाना आवश्यक होता है।

मक्खी पालने का छत्ता तीन खानों का होता है। नीचे का बड़ा, ऊपर दो छोटे। नीचे के खाने में सात बड़े-बड़े फ्रेम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं जो लटका दिये जाते हैं। शहद की मक्खियों का कुदरती छत्ता तोड़कर अंडे बच्चों का भाग फ्रेमों में धागे से बांधकर लटकाया जाता है। ऊपर के भाग में शहद का भाग या मसनुई मोम का छत्ता लगाया जाता है। यह बने हुए मोल बिकते हैं। नीचे के भाग में रानी अण्डे देती है। ऊपर के भाग में शहद एकत्रित किया जाता है और बीच के भाग में मजदूर मक्खियों का पालन होता है। यह तीन खानों के बक्स घर पर बनवाये जा सकते हैं, या बाजार से बने बनाये खरीदे जा सकते हैं। जब शहद एकत्रित हो जाता है तब ऊपर के भाग से शहद भरे छत्ते को निकाल, शहद निकालने की मशीन में डालकर शहद निकाला जाता है और फिर उसी तरह लटका दिया जाता है। जब उन मक्खियों को खाना पर्याप्त रूप में नहीं मिलता तब उनको शीरा खाने को देना चाहिये। मक्खियां पालने के लिये लकड़ी के छत्तों के अलावा निम्न चीजों की भी आवश्यकता होती है—

१–जाली जिससे मक्खियाँ पकड़ी जाती हैं तथा अपने को बचाया जाता है। २–धूआँ देने का यन्त्र, ३–चाकू, ४–प्लेट, ५–शहद निकालने की मशीन।

इस मशीन में ऊपर एक गोल टीन की चद्दर का सिलैंडर रहता है जो नीचे से बन्द होता है। नीचे शहद निकालने के लिये टूँटी होती है। अन्दर जाली का सिलैंडर होता है जो तेजी से घूमता है, शहद भरा छत्ता इस जाली में रखकर घुमाया जाता है, सेंट्रोफ्यूगल एक्शन से शहद निकल आता है और टूंटी से बाहर आ जाता है। इस तरह छत्ता खराब नहीं होता।

(६) भेड़ और ऊन का काम—अनेक देशों में भेड़ पालन एक अत्यन्त लाभदायक व्यवसाय है। यदि वैज्ञानिक रीति से इस व्यवसाय को भी भारतवर्ष में किया जाय तो यहां भी यह बहुत से देहात के रहने वाले पढ़े लिखे बेकारों के लिये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखमय जीवन बिताने का साधन बन सकता है। गाय, भैंस पालने की तरह यह काम भी खेती के लिये उपयोगी तथा सहायक है क्योंकि भेड़ों की मेंगनी खेती के लिये एक अत्यन्त उत्तम खाद होती है।

भारतवर्ष की भेड़ अन्य देशों के मुकाबले बहुत बीती हुई दशा में हैं। जब कि आष्ट्रेलिया की एक भेड़ साल में औसतन ६॥ पौंड ऊन देती है, भारत की भेड़ दो पौंड से अधिक नहीं देती। अतः यह जानना चाहिये कि कोस बोर्डिङ्ग से यानी देशी भेड़ को विदेशी नरों से मिलाकर भेड़ की उन्नति की कितनी आवश्यकता है। कई स्थानों की भेड़ों की ऊन भी इतनी निकृष्ट होती है कि उसे ऊन कहा भी नहीं जा सकता। वह तो केवल बाल होते हैं, फिर देशी पालक इसकी परवाह नहीं करते। भेड़ें कांटेदार घास चिरचिटे आदि में पेट भरती हैं। ये उनकी ऊन में चिपट जाते हैं। ये गन्दे स्थानों में बैठकर ऊन को खराब कर लेती हैं। गन्दे तालाबों का पानी पीकर अस्वस्थ रहती हैं और मजबूत तथा मुलायम ऊन पैदा नहीं करतीं। इसके अतिरिक्त पालक गरीबी के कारण कई बार ऊन कतरते हैं, जिससे रेशा छोटा हो जाता है। कतरते समय यह ध्यान नहीं रखते कि पीठ की ऊन में टांगों और पेट के बालों को न मिला दें, बल्कि सब को अलग रखें, जिससे ऊन खराब न हो और अच्छा भाव मिल जाय। अन्य देशों में भेड़ों की वैज्ञानिक रीति से देख भाल होती है और ऊन साल में एक बार ग्रीष्म ऋतु के शुरू होने पर ली जाती है अच्छी ऊन साफ होती है और छूने पर अत्यन्त कोमल। जरा छूते ही दब जाती है तथा हाथ उठाते ही रबर के समान उछल आती है। अच्छी ऊन में बाल नहीं होते। ये दो तरह के होते हैं। एक तो बड़े-बड़े जो ऊन से भिन्न होते हैं, दूसरे छोटे-छोटे जो ऊन से ही होते हैं। दोनों तरह के बालों में छोटे अधिक खराब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

.CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं, क्योंकि इनको पहिचानना या अलग करना कठिन होता है। अच्छी ऊन में बहुत सी गुच्छी होती हैं। गुच्छी नोकदार और छोटी-बड़ी नहीं होतीं, बल्कि हर एक गुच्छी बराबर लम्बी, जड़ तथा सिरे पर एक रंग की होती है। रंग चमकदार हो, जिसमें चांदी की झलक हो। गुच्छी में रेशा बराबर होना चाहिये। रेशा बहुत बारीक, मजबूत तथा भारी हो। वह हर भाग में समान मोटाई का गोल हो। कहीं पतला या मोटा न हो। यदि भेड़ भूखी या बीमार रहती है तो रेशा हर भाग में एक सा नहीं रहता। यदि वह लम्बा बारीक मजबूत और भारी होगा ऊन बढ़िया होगी।

आजकल भारतीय ऊन बढ़िया नहीं होती, किन्तु पहले यहां की ऊन बहुत प्रसिद्ध थी। काश्मीरी शालें अन्य देशों में बड़े महँगे मोल पर बिकती थीं। अब भी यहां की कालीन व कम्बलों का मुकाबला बहुत कम देश कर सकते हैं। यदि बढ़िया भेड़ें पालें, ऊन ठीक तरह एकत्रित करें और नई फैशन के अनुसार चीजें और वस्त्र बनाकर बेचें तो यह कितना फायदेमन्द होगा, इसका अनुमान हो सकता है। ऊन के काम के लिये छोटी तथा बड़ी दोनों पूंजीवालों को मार्ग खुला है पहले तो ऊन की कतराई साफ कराई, रंगाई, धुनाई, कताई, बिनाई आदि काम हैं। दूसरे हाथ से कातने व बुनने से मिलों का प्रयोग ऊन के काम में होता है। भूटियां स्त्रियां तो करघा भी नहीं रखतीं। अवकाश मिलते ही नामे को कमर से बांधकर ऊन की लच्छी को हाथ से इधर से उधर निकालकर साधारण कंघी से ठोक-ठोककर सुन्दर कपड़ा तैयार कर देती हैं। नमदा बनाने में तो कताई-बुनाई की भी आवश्यकता नहीं होती। ऊन को बिछाकर ऊपर से रंगीन ऊन से फूल-पत्ती की तरह-तरह को डिजाइन बनाकर रीठा के झाग, साबुन, उर्द की दाल आदि से लपेट-लपेटकर बिलाई की जाती है। यह नमदे चारपाई तथा फर्श पर बिछाने व घोड़ों की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीन में, बर्फ के सन्दूक में और इसी तरह के अनेक कामों में आते हैं।

ऊन का दूसरा काम कालीन तथा कम्बल बनाना है जो इन नगरों में किया जाता है। कालीन जालदार, फूलदार, ईरानी, चटाईदार, कश्मीरी अकबरशाही आदि अनेक तरह की डिजा-में तरह २ के रंग देकर बनाई जाती हैं। कम्बल काली सफेद ऊन से या रंगकर भिन्न-भिन्न तरह के चेकों की डिजाइनों से पट्टियां बुनी जाती हैं और इनको सी करके घोटा जाता है। बिनाई के पहले ऊन को छांटकर धोना चाहिये। खराब ऊन गद्दी आदि में भरने के काम में लानी चाहिये। अच्छी ऊन छांट के धोई जावे। धोना कठिन काम है इसलिये यहां के बुनकर ऊन बहुत कम धोते हैं। ऊन पहले गर्म पानी से फिर ठण्डे से धोई जाती है और साबुन वगैरा को इस्तेमाल किया जाता है, यह बिलकुल निकाल दिया जाता है चूंकि वह ऊन के लिये हानिकारक है।

ऊन की बुनाई रुई के समान होती है, कताई चरखे या तकली पर की जाती है, चरखा सूत के चरखे से कुछ भिन्न होता है और इसका तकवा मोटा होता है। ताना करने के बाद उसको गेहूँ की माँडी देकर कौंच से ब्रुश किया जाता है।

ऊन भिन्न २ रंगों में जैसे लाल, नीली, फिरोजी, पीली, काली, हरी रंगों में रंगी जाती है। रंग विदेशी भी लिये जाते हैं या देशी नील, ढाक के फूल हल्दी अनार का छिलका बबूल की छाल आदि से भी तैयार किये जाते हैं।

(७) लाख का काम—लाख आजकल सैकड़ों कामों में आती है। ग्रामोफोन रिकार्ड तरह-तरह के पेन्ट और वार्निश, बिजली के इन्सूलेटर, खिलौने, चूड़ी आदि के सिवाय गांव के बढ़ई को खरादी सामान में लकड़ी के दोष छुपाने के लिये, सुनारों को जेवर भरने के लिए, सीमेंट अर्थात् टूटी चीजें जोड़ने का मसाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाने के लिये अर्थात् अनेकों टीन और केप सख्त करने, कागज़ ताश चमडा मिठाई आदि को चमकदार बनाने के लिये मछली हाथी दाँत, आयल क्लाथ, बटन, सीलिंग बक्स, सान रखने के पहिये और आतिशबाजी में लाख की आवश्यकता होती है, और अब इसकी मांग बढ़ रही है। देहातों में पेड़ों से लाख एकत्रित कराई जा सकती है तथा इस काम के कीड़े की खेती बढ़ाई जा सकती है। समय पर लाख के ले लेने से पेड़ की भी क्षति नहीं होती। इस कच्ची लाख की यदि गांव में ही साफ करा लिया जाय तो काफी लाभ होगा।

कच्ची लाख पहले कचरकर फटकी जाती है जिससे लकड़ी का भाग निकल जावे। फिर बारीक पीसकर नांदों में पैर और हाथों से मसलकर धोई जाती है। इस तरह तीन बार धोने पर शेष लकड़ी (जो पानी के ऊपर आ जाती है) और रेत व रंग निकल जाता है और चमकदार लाख निकल आती है। फिर उसको हवा से रेत को (जो लाख के साथ पानी में बैठ गया है) बरसाकर मशीन से जो मामूली दाम में गांव में बन सकती है, साफ कर लिया जाता है। फिर हरिताल (एक मन लाख में पाव भर के हिसाब से) पानी में घोल कर लाख में मिलाई जाती है जिससे इसका रंग सुनहरी होवे क्योंकि इस रंग की अधिक मांग है। फिर हरिताल मिले लाख को दो पर्त के थैलों में भर लो। यह चालीस पैंतालीस फिट लम्बे दो या तीन इंच चौड़े होते हैं। फिर पांच फिट लम्बी तेजाबी की शक्ल की भट्टी पर इनको इस तरह गरम करो कि इनके तीन-चार फिट को आग लगे। उनका एक सिरा भट्टी पर गरम होता है दूसरा एक पहिये से ऐंठा जाता है वह ऐंठा खाकर छोटा होता है बस, लाख निकलती है। इसके सिकुड़ने से लाख भट्टी के सामने आती है। एक आदमी इस तरह थैलों को ऐंठता है दूसरा भट्टी के पास बैठता है उसके सामने एक लकड़ी का एक टुकड़ा रहता है जिस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर लाख के थैले रखे होते हैं वह लोहे के टुकड़े से इन थैलों को दबा-दबा कर पिघली लाख को ऐंठते थैलों से निकालता है। एक आदमी और रहता है जो इनको दूसरी तरफ लीवर से खींचता चलता है, लकड़ी के ब्लाक के नीचे चांनी का बर्तन रहता है जिसमें गरम पानी रहता है और तिरछा होता है। लाख इस बर्तन में एकत्रित होती है। यह गरम लाख ताड़ के पत्तों से फैलाई जाती है फिर इसे दोबारा भट्टी पर गरमी दिखा कर हाथ से खींच २ कर पतली २ चादरें बना ली जाती हैं। चालीस सेर कच्ची लाख में २० सेर साफ लाख निकलती है। जो भाग थैलों में बच रहता है उसे किरी कहते हैं। यह किरी अलग निकालकर जमा ली जाती हैं। लाख बेचने वाले शोरा, गुड़, लाख का बुरादा आदि मिलाते हैं। थैलों को सोडा व गरम पानी में उबालकर चिपकी लाख से साफ किया जाता है।

(८) ईख की काश्त—इसकी काश्त से गुड़ व खांड का काम भी फायदेमन्द बन सकता है यदि उसे ठीक ढंग पर किया जाय। कोयम्बटूर ने ईख की कुछ ऐसी किस्म तैयार की हैं जो ५ महीने में ही तैयार हो जाती है। अब तक ईख में साल भर खेत घिरे रहते थे। यदि ऐसी किस्म का बीज बोया जाय तो एक ही खेत में साल में दो फसल हो सकेंगी।

गन्ने का असली बीज सरपते की तरह तने के ऊपर चौकोरी शकल जो फूलों की डाल में पैदा होता है, लेकिन इसकी काश्त तने के टुकड़े करके की जाती है। हर टुकड़े में कम-अज-कम ३ घड़ या आँख होनी चाहियें, यह फूटकर कल्लाँ बन जाते हैं और बड़ की जगह तने के चारों ओर जो छल्ला सा होता है, उस पर दाने उभर कर जड़ें बन जाती हैं। जड़ें थोड़ी होने के कारण यह परम आवश्यक है कि जमीन अच्छी तरह तैयार की जावे। गरमी और बारिश में जोतकर छोड़े हुए खेत में इसकी पैदावार अच्छी होती है अगर बारिश में सनई बोकर जोत दी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जावे तो बहुत अच्छा हो। गन्ना जल्द से जल्द फरवरी के महीने में बो देना चाहिये, ज्यादा गरमी बढ़ जाने से इसकी कोमल कली और जड़ें झुलस जाती हैं, गुलाबी जाड़ों में बोई हुई फसल अच्छी तरह जम जाती है तो गर्मी में बढ़ने का लाभ उठाती है। बुवाई सीध में टुकड़े से टुकड़ा मिलाके होनी चाहिये और कतारों का फासला गज-गज भर का होना चाहिये, जिससे फसल को धूप और हवा लग सके। इस तरह से बोने में मेहनत और खर्च में बचत होती है और आबपाशी और खुदाई गुड़ाई आसान हो जाती है।

खुदाई या गुड़ाई इस फसल की जान है। यह गुड़ाई कतारों में बोई हुई फसल में आबपाशी के बाद आठ आने परदेशी हल से की जा सकती है। हर पानी के बाद इस तरह दो तीन बार कतारों के बीच में घनी गुड़ाई होनी चाहिये कोलटेक्टर या तिफारा हल प्रयोग करने से मेहनत की और भी बचत होगी इस गुडाई से हवा और धूप का मिट्टी पर अच्छा असर होता है। कीड़े मकोड़े का खात्मा हो जाता है, नर्मी बनी रहती है और फसल जल्द पानी नहीं मांगती। अधिक पानी से गन्ने की फसल में बजाय लाभ के हानि होती है ठीक खुदाई के साथ महीने में एक पानी काफी होता है जून के बाद जब वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाती है तब यह फसल अधिकाधिक बढ़ती है तन्दुरुस्त फसल गन्ने की बीमारियों से बची रहती है।

गन्ने की कुछ बीमारियां या कीड़े भी होते हैं जिनसे बचाने के लिये प्रयत्न आवश्यक है। एक तो गन्ने का सड़ना यह बीमारी जौलाई में दिखाई देती है और बरसात में तेजी से बढ़ती है। बीमारी के लगने से पत्तियां यकायक मुरझा कर सूख जाती हैं और अगोला सड़ने लगता है, गन्ने का गुद्दा मटैला लाल हो जाता है और नीचे की तरफ का सड़ जाता है और आठ दस दिन में पूरा गन्ना सड़कर पीला हो जाता है। ऐसे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सड़े हुए गन्ने से बदबू निकलती है छिलका बना रहता है मगर गूदा सड़कर गन्ना टूट जाता है और इसका रस बहकर गन्नों में बीमारी फैलती है। एक और तरह का कीड़ा होता है जो गन्ने के तने में सूराख कर देता है वह कीड़ा जून में सबसे अधिक हानि करता है और वर्षा शुरू होने पर इसक नुकसान कम होता है सर्दियों में यह कीड़ बेखबर होकर पड़ा रहता है। एक और तरह का कीड़ा गन्ने का कंसुआ होता है जो गन्ने की चोटी से छेद करके भीतर को घुसता है और कई पोइयों तक भीतर घुसा चला जाता है इससे गन्ने का बढ़ना रुक जाता है और गन्ना सूख जाता है। जब यह कीड़ा नीचे की सख्त पोइयों में छेद नहीं कर पाता तो दूसरे गन्ने में घुसता है। ऐसे गन्नों में बीच का कल्ला तो सूख जाता है पर आस-पास दूसरे अंकुर फूट जाते हैं जिसे किसान अंगोला कहते हैं। एक और कीड़ा जो पत्तियों पर बैठकर उनका रस चूसा करता है, प्रायः अधिक हानि पहुँचाता है। पहले पत्तियों पर सफेद रुई-सी मालूम होती है जो गन्ने और पत्तों के बीच में होती है। फिर छोटे २ सूत के कीड़े दिखाई देते हैं यह बढ़कर बादामी रंग की तितली बन जाते हैं। इन सब बीमारियों से फसल को बचाने का उपाय यह है—अव्वल तो बीज अच्छा प्रयोग करना चाहिये जो बीमारी से बरी हो, दूसरे गन्ने जो छांटे जावें वह ऐसे हों जिनमें बीज के कल्ले के सिवाय दूसरे कल्ले न हों और पीले न हों, जिनके तलों में सुराख न हों। गन्ने की ऊपर की तीन-तीन-चार पोइयां छोड़कर बीच का भाग बीज के काम में लावें, टुकड़ों को देखलें अगर गूदे में सुर्खी हो तो उसे फेंक दें। यदि टुकड़ों पर सफेदी दिखाई दे तो उसे पोंछ डालें। यदि ऐसे टुकड़ों को मिट्टी के तेल पानी या तूतिया के पानी में डुबो लें तो अधिक अच्छा होगा। मिट्टी का तेल पानी इस प्रकार तैयार होता है कि एक घड़े पानी में आधा सेर जौ या गेहूँ का आटा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घोलें या साबुन की टिकियां घोलें फिर एक बोतल मिट्टी का तेल उसमें धीरे २ चलाकर मिला दें। तूतिया का पानी इस प्रकार बनाया जाता है कि एक घड़े में तूतिया घोलें और दूसरे में चूना, फिर तूतिया के पानी में चूने का पानी इतना मिलावें कि उसमें चाकू डालने से तांबे का रंग न चढ़े। टुकड़े उसमें भिगोकर बोवें, कटने के समय फसल देर से न काटें, गन्ने जमीन से मिलाकर काटें, जिससे तने का ठूंठ जमीन से निकला हुआ न रहे और पेड़ी न रखें।

अच्छा गुड़ बनाने के लिये सब से पहले ईख पेलने का कोल्हू अच्छा होना चाहिये। देसी कोल्हू अव्वल तो करीब २० फीसदी रस कम निकालते हैं दूसरे काफी मात्रा रस निकलने में इतनी देर लगती है कि उबालने के लिये खटास आ जाती है। दूसरी आवश्यकता बढ़िया भट्टी की है जिसमें कम से कम ईंधन में अधिक से अधिक रस पक जाय। भट्टी दूसरे गड्ढे की होनी चाहिये जिसमें अँगीठो के समान लोहे की जाली हो और हवा जाने के लिये सूराख हो। भट्टी बनाने के कई तरीके प्रचलित हुए हैं, तीसरी वस्तु, बढ़िया कढ़ाव हैं देशी कढ़ाव पतली चादर के बहुत से टुकड़ों को जोड़कर बनाये हुए होते हैं जिनमें एक तो गुड़ जल जाता है दूसरे मैल भर जाता है जिससे गुड़ मैला हो जाता है, तीसरे उनके बार २ मरम्मत की आवश्यकता होती है। कढ़ाव आध इञ्च मुलायम इस्पात के एक ही टुकड़े का होना चाहिये जिसका पैंदा चौपट हो जिससे कुल रस को एक सी आंच लग सके। ऐसे कढ़ाव में गुड़ जल्द और बढ़िया किस्म का तैयार होगा।

आखिरी बात सब से आवश्यकीय रस की सफाई है। कई किसान जो गुड़ तैयार करते हैं वह बिना छाने रस से बड़ी लापरवाही से बनाते हैं, न उसके जलने का खयाल किया जाता है, न मैल उतारने और न मिट्टी पड़ने से बचाने का। अतः जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुड़ तैयार होता है, वह इतना मैला, बदजायका और मिट्टी मिला हुआ होता है कि खाने योग्य भी नहीं होता। रस को भली प्रकार छानना चाहिये। चूना या भिंडी की जड़ का पानी डाल कर मैल को भली तरह उतारा जाय और अन्त तक मिट्टी पड़ने तथा सफाई का ध्यान रखना आवश्यक है।

गुड़ बनाने की एक नई विधि यह है कि धान के छिलके का कोयला, सोडा व पानी से साफ कर लिया जाता है, फिर उबलते रस का मैल उतार कोयला डालकर रस औटाया जाता है, फिर यह छाना जाता है। ऐसा रस सफेद हो जाता है। कोयला साफ कर बार २ काम आ सकता है। कोयला करने के लिये टीन के पोले सिलैंडर भट्टी में लगा दिये जायँ जिनका मुंह बाहर हो भट्टी की आँच से छिलकों का कोयला हो जायगा।

जिन देहातों में बिजली सस्ती मिल सकती हो, उनमें कोल्हू तथा खांड की मशीन बिजली से चलाई जा सकती हैं। रस साई फून विधि से ऊँचे हौज में करके नलों के बहुत भट्टियां एक साथ चलाई जा सकती हैं। ईख का काम समाप्त होने पर तेल की घानी से चलाई जा सकती है, फिर रूई की चरखी से, इस तरह साल भर काम हो सकता है और पूंजी व इन्तजाम से काफी फायदा उठाया जा सकता है।

ईख के समान ही गुलाब की काश्त और गुलाबजल, गुलकंद इत्र आदि बनाने का काम। तम्बाकू की काश्त और बीड़ी-सिगरेट जरदा सुरती खमीरा आदि बनाने का काम। पाट की काश्त और पाट के आसन बड़ी और बढ़िया कपड़े, रस्सी आदि का काम, इस तरह अनेकों लाभ सहित किये जा सकते हैं। इसके अलावा देहातों में बहुत सी वस्तु एकत्रित हो सकती हैं जो बहुतायत से पैदा होती हैं, जिनसे लाभ होता है। जैसे जड़ी-बूटी, सेमल बबूल आदि का गौंद, सेमल आक आदि की रूई, देहातों में छोटी-मोटी कारीगरी चली आती हैं जिनको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठीक तरह संगठित कर वर्तमान आवश्यकताओं तथा फैशनों के अनुसार वस्तु प्रस्तुत की जायं तो मनमाना लाभ हो जैसे घास के परदे, चटाई, बाँस व बेंत की टोकरी, बक्स आदि तथा बेंत व बाँस या सरकण्डों की कुर्सियां मूढ़े और मिट्टी के बर्तन आदि।

देहातों के पास के कस्बों में चारे की कमी रहती है। बड़े २ शहरों में और अधिक आवश्यकता रहती है, यदि सब्ज चारा शहरों को सप्लाई किया जा सके तो फायदा हो सकता है। चारे के लिये रिजका, बरसीम, नैपियर, घास आदि ऐसे चारे हैं जो उपयोग हो सकते हैं। सब्ज चारे को ६ फिट गहरे चौरस गढ़े में खोदकर भर देना चाहिये, ऊपर से ठीक तरह मिट्टी से ढक दिया जाय जिससे हवा न जा सके। ऐसा करने से चारा ऐसे मौसम में मिल सकता है जबकि सब्ज चारा नहीं मिलता। बहुत सी चालू औषधियां देहातों में किफायत से तैयार की जा सकती हैं जैसे च्यवनप्राश, द्राक्षासव आदि। बहुत सी दूसरी वस्तु जैसे सत अजवायन आदि जो विदेशों से आती है इस देश में आसानी से तैयार हो सकती हैं।

हम यहाँ साधारण सी विधि सत अजवायन बनाने की देते हैं। अजवाइन को पानी में भिगोकर अर्क खींचा जाता है। उस से तेल निकालकर कास्टिक सोडा पानी में घोलकर डाला जाता है। सत अजवाइन सोडा सौल्यूशन में मिल जायगा। उसमें हायड्रोकलोरिक एसिड मिला देने से थाईमौल के क्रिस्टिल अलग हो जायेंगे उसको पानी से धोकर सुखाकर पैक कर लो। बहुत सी मिट्टी तथा खानों की चीजें भी देहातों में धन कमाने का साधन हो सकती हैं जैसे रेह जिससे कांच बनता है, लौनी जिससे शोरा निकलता है व कंकर पत्थर आदि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सातवां अध्याय

कूड़े से कञ्चन

हमारे देश में बहुत से बहुमूल्य पदार्थ कूड़े की तरह फिंक जाते हैं जबकि अन्य देश कूड़े को भी कंचन में परिणित करते हैं। जर्मनी में कूड़े से करोड़ों रुपये साल कमाये जाते हैं। इङ्गलैंड में सिनेमा और थेटरों का कूड़ा करोड़ों की आमदनी का सिलसिला बन जाता है यहां तक कि पीये हुए सिगार और सिगरेटों के टुकड़े भी हमारे जैसे देश से अरबों रुपये खींचने का साधन हो जाते हैं वह टुकड़े बिनवाकर जला हुआ भाग काट दिया जाता है और तम्बाकू निकालकर उसे फिर से सुगन्धित करके सिगरेट की तरह २ की डिबियों में भर कर देसी सिगरेटों के मुकाबले कहीं अधिक सस्ती दर पर बेचा जाता है और हमारे यहां के जेन्टिलमैनों को ठेठ विलायती सिगरेट सेवन करने का गौरव प्राप्त होता है। सच है कि आजकल ऐसा समय है कि कूड़े को नष्ट कर देने की गुंजाइश नहीं, यद्यपि ऐसी बहुत सी वस्तुएं हो सकती हैं, किन्तु हम यहां हम थोड़े से उदाहरण नमूने के तौर पर देते हैं। पाठक यदि बुद्धिपूर्वक अपने चारों ओर नजर डालेंगे तो और भी ऐसे बहुत से काम दिखाई पड़ जायेंगे।

(१) फसल पर खरबूजा, तरबूज, फूट, ककड़ी आदि के बीज सड़कों पर पड़े-पड़े सड़ते रहते हैं। यदि छोटे २ लड़कों से उनको कुछ आने टोकरी के हिसाब से उठवा लिया जाय, और राख में रगड़वा कर साफ कराकर गरीब औरतों से उनकी मिगी निकलवा ली जाय तो काफी नफा हो सकता है और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैकड़ों के लिये ठाले समय के उपयोग करने का साधन हो सकता है।

(२) खरबूजे के छिलके जो बेकार फेंके जाते हैं उनको सुखाकर पीस लिया जाये और पैकिटों में बन्द करके दाल गलाने का मसाला इस तरह लेबिल लगाकर बेचने से बहुत सा धन पैदा किया जा सकता है। इस चूरे को चुटकी भर न गलने वाली दाल के साथ देगची पतीली में डाल दिया जाये तो दाल गल जायगी। आटे में मिलाकर गूंधने से आटे में जल्द खमीर उठ जायेगा।

(३) आम की गुठली इकट्ठी लाकर मिगी निकलवा ली जाय और इसे पिसवा कर सुन्दर पैकिटों में बन्द करके अतिसार के दस्तों की दवा नाम की बतौर बेचा जा सकता है क्योंकि यह दस्त बन्द करने में अद्वितीय है यदि इसका पाताल यंत्र से तेल निकलवा लिया जावे तो वह हेयर ग्रीसरव करके चल सकता है बालों को मजबूत चमकदार और काला बनाये रखने में यह तेल सानी नहीं रखता। इस तेल को रोज लगाने से उमर भर खिजाब लगाने की जरूरत न होगी। उस गुठली के चूरे का एक और प्रयोग यह है कि इसको पानी में उबाल कर उसमें तर करके रंगने से हर एक रंग चमकीला और तेज चढ़ता है अतः इन प्रयोगों से सैकड़ों रुपये कमाने का साधन हो सकता है तथा ऊपर के छिलकों का मूल्य भी कागज बनाने वाले कारखानों में भेजकर प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि यह कागज बनाने के काम में लाया जाता है।

(४) इमली के बीज—ना समझ आदमी इमली के बीजों का मूल्य न जानते हुए कूड़े के रूप में बाहर फेंक देते हैं या इमली के पेड़ों के नीचे पड़े २ सड़ने दिया करते हैं यदि इनको उचित रीति से काम में लाया जाये तो कौड़ियों से अशर्फियां प्राप्त करने का साधन हो सकता है। इमली के बीजों को जमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कराकर चार पांच दिन तक पानी में भिगो दिया जाये, फिर निकालकर छिलका साफ करके मिंगी निकाल सुखाली जाये। इस मिंगी को पीस छानकर समान भाग मिश्री मिलाकर तीन २ माशे के पैककिट बना सुन्दर लेबल लगाकर बेचा जाय। इसके ४० दिन नित्य सेयन करने से प्रमेह और वीर्य विकार नष्ट हो जायगा। वीर्य दही के समान गाढ़ा हो जायगा। शीघ्रपतन, स्वप्नदोष शान्त हो जाते हैं। यह रोग आजकल इतना ज्यादा फैला हुआ है कि इस साधारण नुस्खे से अल्प समय में ही बहुत से लाभ की सम्भावना है।

इसी प्रकार सैकड़ों जड़ी बूटी जो नित्य पैरों से कुचल जाती हैं तथा साधारण वृक्षों की छालें, फल, फूल, पत्ते, अनेक उपयोगी दवायें सुन्दर रंग और अन्य बहुमूल्य पदार्थ बनाने के काम में आ सकते हैं मगर विस्तार भय से हम इस विषय को पाठकों के लिए छोड़कर कुछ अन्य साधारण खराब जाने वाली चीजों को काम में लाने के प्रयोग देते हैं।

(५) लौनी मिट्टी से शोरा और नमक बनाना-पुराने मकानों की दीवारों से लाखों मन लौनी मिट्टी गिरती है जो बेकार चली जाती है। इसे जमा कराकर मिट्टी के हौजों में डालकर पानी भर दो। दो तीन दिन बाद हौज की दीवार में छेद करके पानी निकाल लो और कढ़ाई में पकाओ। जब पानी जल जाये और गाढ़ा सोलूशन बन जावे तो उसे पक्के हौज में भर दो और ठंडा होने दो। शोरे के क्रिस्टल तली पर बन जायेंगे और नमक की पपड़ी पानी के ऊपर जम जायगी। फिर कच्चे हौजों का नया पानी पक्के हौजों का बचा हुआ द्रव्य मिलाकर पकाते रहो और इसी प्रकार पक्के हौज में ठंडा करके शोरा तथा नमक बनाते रहो। यह शोरा मुख्यतः बारूद तथा आतिशबाजी का सामान व दियासलाई आदि बनाने के काम आता है।

(६) राख से कास्टिक पोटाश बनाना—लकड़ी की राख में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१० गुना पानी मिलाकर पकाओ जब आधा पानी जल चुके तो इसे इसी प्रकार छोड़ दो। और थोड़ा सा बिना बुझा चूना डालकर राख को बैठ जाने दो फिर निथरे हुए पानी को छानकर दुबारा पकाओ और पानी को खुश्क करदो बस कास्टिक पोटाश तैयार हो गया इसे खुरच कर बाजार में बेच दिया जावे। यह मुख्यतः साबुन बनाने के काम आता है।

(७) राख और लौनी मिट्टी उत्तम खाद की तरह भी प्रयोग की जा सकती हैं खट्टी भूमि में जहां तरह २ की घास में बहुतायत से उगती हैं यह दोनों खाद बहुत उपयोगी साबित होते हैं। राख सूखी ही ऊपर से बुरकी जाती है जो पेड़ की पत्तियों को कीड़े लगने से भी बचाती है। लौनी मिट्टी पानी के साथ पहुँचाई जा सकती है। मिकदार ६० बुशल एक एकड़ में।

(८) चावल का छिलका व बुरादा—चावल की मिलों में मनों चावल की भूसी जला दी जाती है या गड्ढों में भर दी जाती है। यदि खरीद ली जाये तो बहुत ही सस्ती मिल सकती है। इसे छटने में छांट कर बरसा कर चावल का बुरादा तथा टुकड़े अलहदा किये जा सकते हैं। चावल का बुरादा घोड़े गाय भैंस मुर्गी आदि के खिलाने के काम आ सकता है। इसके खाने से जानवर जल्द मोटे हो जाते हैं क्योंकि इसमें उत्तम से उत्तम जई के समान चिकनाई होती है। यह बुरादा तेल के कारखानों में तेल की खली में मिलाया जा सकता है और जो वस्तु श्यूड के नाम से खली में मिलाई जाती है वह वास्तव में चावल का बुरादा ही होता है। चावल के छिलके पर पानी का असर नहीं होता इसलिए सील वाले कमरों के फर्श के नीचे अथवा घोड़ा आदि मवेशियों के नीचे बिछाने के काम में आ सकता है लकड़ी के बुरादे के बजाय बर्फ तथा कांच के सामान के पैकिंग के काम आ सकता है। चारे की कमी में कुचल कर भूसे में मिलाकर मवेशियों को खिलाया जा सकता है जलाने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के काम में भी आ सकता है। राख खाद का काम देती है। बन्द भट्टी में जलाकर कोयला कर लेने से खांड के कारखानों में खांड साफ करने के काम आ सकता है।

(९) सुपारी का छिलका—नारियल का छिलका तो बहुत से कामों में (रस्से, चटाई, फर्श आदि) लाया जाता है लेकिन सुपारी का छिलका बेकार फेंका जाता है। इसका रेशा नारियल के रेशे से मुलायम होता है अतः यह गद्दियां भरने के काम आ सकता है। कातकर रस्सियां बटी जा सकती हैं और बढ़िया कागज भी इससे बन सकता है।

(१०) पिस्ते बादाम आदि का छिलका काली स्याही दन्त मंजन बनाने के काम आ सकता है।

(११) गांवों में तथा कस्बों में मिट्टी के तेल की डिबियां दुकानों पर और घरों में भी जलाई जाती हैं। अगर आप आमदनी का कुछ सिलसिला चाहते हैं तो दो चार पैसे के परियां (एक ढकने का बर्तन) कुम्हार से कच्चा खरीद कर एक-एक हर एक डिब्बी के ऊपर लटकवा दीजिये। दूसरे दिन परियों पर से पड़ी कालोंच (स्याही) छुटवा दीजिये। इस तरह बहुत सी स्याही एकत्रित हो सकती है। यह काली रोशनाई व बूट पालिश आदि बनाने के काम आती है जो हमारे देश में सहस्रों रुपये की बिक्री की चीज है।

(१२) मक्खन निकला दूध (सपरेटा)—सपरेटा या तो दूध में मिलाकर दूध को खराब किया जाता है या बेकार नष्ट होता है। यह जानवरों को खिलाया जाता है। इसे जौ में मिलाकर सूअरों को खिलाओ तो वे मोटे हो जाते हैं। किन्तु इसका इससे भी अधिक मूल्यवान प्रयोग हो सकता है। स्विटजरलैंड में इससे शुगर आफ मिल्क इस तरह बनाते हैं कि पम्प से इसको पहाड़ पर पहुँचाया जाता है। पहाड़ के चारों ओर नालियां बनाई जाती हैं इसे नालियों से होकर बहाते हैं और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धागे लटका देते हैं। मिल्क शुगर उन पर जमा हो जाती है। धागों को निकाल सुखाकर शुगर झाड़ी जाती है और ये फिर नालियों में लटकाए जाते हैं। हमारे देश में इसको हौजों में भरकर धागे लटकाए जा सकते हैं। मिल्क शुगर दवाओं में काम आती है और दवाखाने में अच्छे दामों पर बिकती है। इससे निकलने वाली दूसरी मूल्यवान वस्तु केसीन है। यह इस दूध में तीन फीसदी होती है। केसीन खाने के काम भी आती है किन्तु इसका प्रयोग कई तरह से होता है। फौरमल्डीहाइड मिलाने से यह एक ऐसा पदार्थ बन जाता है जो रबर के समान कोमल, शीशे के समान पारदर्शक और सरेश सा चुपकने वाला होता है जिसे किसी भी रंग में रंगा जा सकता है। फिर इससे फोटो के प्लेट, सिनेमा के फिल्म, कंघे आदि बनाये जाते हैं। नकली सीप, शंख, हाथी दांत, आबनूस आदि सैकड़ों किस्म की चीजें, हजारों रंग और रूप में केसीन से तैयार की जाती हैं। जहां आग लगने का भय होता है वहां सेलोलाइड के बदले केसीन का प्रयोग होता है। बिजली के कामों में केसीन का प्रयोग इन्स्टेटिंग पदार्थ बनाने में होता है। इसे मिलाकर बहुत चमकदार कागज पेन्टिंग आदि के कामों को बनाये जाते हैं जो पानी में डुबाने से नहीं गलते। साबुन को मुलायम और टिकाऊ बनाने को केसीन साबुन में मिलाया जाता है। चूना मिला केसीन सरेश का काम देता है। यह जहाजों में काम आता है जहां सरेश काम नहीं दे सकता। रंगों में मिला के बीन रंग पेन्ट और वार्निश बनाये जाते हैं। रेशम को चिकना और भारी बनाने में तथा शराब साफ करने में भी केसीन का प्रयोग होता है।

सपरेटा में जरा सा (०·२ फीसदी) कास्टिक सोडा डालकर थोड़ा गरम किया जाता है फिर इसको मशीन में या रई (जिस से दही बिलोया जाता है) से चलाया जाता है जिससे चर्बी का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेष भाग भी निकल आवे। अब उसमें केवल केसीन लेक्टीन और पानी रह जाते हैं फिर इसमें कोई तेजाब (एसिड सल्फ्यूरिक या हाइड्रोक्लोरिक) डालकर केसीन को नीचे बैठा दिया जा सकता है। उस केसीन में थोड़ा सा सोडा मिलाकर तेजाब का असर दूर किया जा सकता है किन्तु इस तरह केसीन में सोडा और तेजाब के संयोग से बना हुआ नमक शामिल हो जाता है इसलिये कोर्बोनिक एसिड का प्रयोग भी किया जा सकता है। कार्बोनिक एसिड हवा में उड़ जाता है और केसीन साफ बाकी रह जाता है। कार्बोनिक एसिड कमजोर तेजाब है। उसका प्रयोग करने के लिए सपरेटा में इसको कम से कम ३० ऐटमौस्फियर के दबाव के नीचे शामिल करना पड़ता है।

एक अन्य विधि सपरेटा से केसीन अलग करने की यह है कि एक बर्तन में उसे भरकर ढक दो, ढक्कन में फुवारे के और चलाने की मशीन के लिये छेद हों। एक बर्तन में गंधक जलाकर उसके धुएं को नलियों द्वारा फुव्वारे की तरह से सपरेटा में छोड़ो और दूध को चलाते जाओ जिससे गन्धक की गैस तमाम दूध में शामिल हो जावे। गंधक की गैस दूध के पानी से मिलकर तेजाब बन जाता है जो केसीन को दूध की तह पर बैठा देता है। दूध का टैम्प्रेचर लगभग ६० डिग्री सैण्टीग्रेड रहना चाहिए। यदि दूध अधिक गर्म हो जाएगा तो केसीन का रंग मटियाला हो जाएगा और साफ सफेद रंग न आएगा। दूसरा ध्यान यह रखना चाहिये कि कोई बर्तन लोहे का न हो, वरना केसीन में लोहे की जंग का रंग आजायेगा। जब कुल केसीन दूध में बैठ जावे तो ऊपर से दूध को सूंतकर निकाल फिर पानी से केसीन को खूब धोयें तो गन्धक का असर दूर हो जाएगा। धोने का जल मेह का हो तो और भी अच्छा रहे। इससे पानी में मिले हुए नमक चूना वगैरह केसीन में नहीं मिलेंगे। इस प्रकार जो केसीन प्राप्त हो उसे सुखा लिया जाये। ऊपर बताये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए इसके प्रयोगों से ज्ञात होगा कि केसीन आसानी से अच्छे दामों पर बिक सकेगा और सूंता हुआ दूध केवल लेक्टीन और पानी है जिसको सुखाकर लेक्टीन प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसे अन्य बहुत से छीजन या बर्तन होते हैं जो किसी काम में नहीं लाये जाते या अधिक लाभदायक काम में नहीं लिये जाते। उदाहरण के लिए यहां दो चार देते हैं।

(१३) हमारे देश में सींग के कंघे बटन कलम खिलौने आदि बहुत जगह बनते हैं सींगों का बहुत सा कतरन छीलन खुरचन व रेता नष्ट हो जाता है। यह सब एक तो बड़ा अच्छा खाद होता है दूसरे इसकी फिर से नई वस्तुयें प्रस्तुत की जा सकती हैं। १०० भाग चूना, ५० भाग पोटाश, ४ भाग टाटरी और ३ भाग नमक को पानी में घोलो फिर इसको पकाओ जब तिहाई पानी जल जाए तो उसमें सींग का कतरन व बुरादा डाल दो। जब सींग गलकर गाढ़ा हो जाये तो धातु लकड़ी या मिट्टी के सांचों में तेल लगाकर भीतर भरदो इच्छानुसार रंग मिलाया जा सकता है इस तरह छड़ी छाते के हैंडिल चाकू इत्यादि के बेंट तथा इसी तरह की हजारों चीजें बड़ी सुन्दर बनाई जा सकती हैं।

(१४) चमड़े के जूते व बक्स इत्यादि बनाने के कारखानों में बहुत सी कतरन जमा हो जाती है यह कतरन गलाकर पिघला हुआ मोम मिला दिया जावे। फिर क़ागज इल्प मिलाकर खूब फेंटा जावे इसके बाद भाप से गरम करके सांचों में डाल दिया जावे यह फिर जूते के तले एड़ी वगैरा का काम दे सकता है। बहुत मजबूत होता है कम घिसता है और इस पर पानी का असर नहीं होता।

दूसरी विधि चमड़े की कतरन को काम में लाने की यह है कि कतरन को खूब साफ करके घोलो। फिर २० पाइन्ट पानी में डेढ़ पौण्ड ऑक्स लाइस एसिड घोलो। इसमें एक हंडरेडवेट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कतरन डालकर पानी में उबलती हुई बाथ में गरम करो जब चमड़ा धीरे २ गल जावे तो उसमें २५ पाइन्ट पानी डालकर एकसा करलो फिर पाँच पौंड चूना पानी में बुझाकर उसमें डाल कर सबको खूब मिलाओ। फिर इसे छलनी में मल-मल कर निकाल लो और गीला ही हवा में डाल दो एक माह में इसमें से टानिक एसिड नष्ट हो जायगा और हल्का हो जायगा फिर इसमें से पानी और एसिड से चूना साफ करदो और इसको उबालो सरेश मिल जायगा जो कि बहुत से कामों में आता है।

(१५) कार्क—शीशी की डाट बनाने के कारखानों में कार्क का छीलन इस प्रकार काम में लाया जा सकता है कि पहले उसे मशीन में पीसकर छान लो जिससे एकसा हो जावे। फिर ग्लैसरीन ६० भाग, पानी ४० भाग, सरेश या नीलोरीन ५० भाग मिलाकर इसमें कार्क का चूरा मिलादो और सरेश का १०० वां भाग मिलादो इससे कम सख्त बनता है और उस पर पानी का असर नहीं होता है इससे डाट इत्यादि फिर से बनाये जा सकते हैं। डाटों के नीचे लगाने के छल्ले या वासर इससे इस तरह बनाये जाते हैं कि कुल को लोहे की नली में ठूंसकर भर दिया जाता है उस नली को तीन चार घन्टे हल्का-हल्का गरम करके फिर ठोस नली से दबाकर मसाला धीरे-धीरे बाहर निकाला जाता है और चाकू से काटकर पेराफीन में भिगोकर ठण्डा कर लिया जाता है यह टुकड़े इन्सूलेशन का भी काम देते हैं।

(१६) टीन का काम करने वाले तथा टीन के कनस्तर बनाने वाले कारखानों में टीन के कत्तर मनों बाहर फेंक दिये जाते हैं। बहुत से शहरों में जहां पीपे बनाने का काम होता है यह कत्तर मीलों ढेर के ढेर पड़े दिखाई देते हैं। इनको संग्रह करके बिजली से टीन को लोहे से अलग किया जाता है। कत्तर को कास्टिक सोडा के सोल्यूशन में बिजली का पाजेटिव पोल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाना चाहिए। इस भांति करने से लोहा बिल्कुल साफ रह जायगा और टीन नेगेटिव पोल पर जमा हो जायगा। यह टीन एकत्रित करके बिक्री किया जा सकता है और लोहे के कत्तर छोटे खिलौने बनाने के काम में आ सकते हैं जो पेन्ट से सुन्दर बनाये जा सकते हैं।

(१७) हमारे देश में ३ करोड़ मवेशी प्रति वर्ष मरते हैं। ठीक प्रबन्ध न होने के कारण मरे हुए ढोर मालिक के लिए मार बन जाते हैं और अक्सर उन्हें कुछ व्यय करके हटवाना पड़ता है। चमार लोग चमड़ा तो ले लेते हैं, शेष सब माग पड़ा सड़ता रहता है या जानवर खा जाते हैं। चमारों की नाजानकारी से चमड़े के भी इतने दाम नहीं मिलते जितने मिलने चाहिए। पहले तो मवेशी को हटाने का उचित प्रबन्ध न होने के कारण उनको कांटों और कंकरों पर होकर घसीटकर डाला जाता है जिससे चमड़ा खराब हो जाता है। दूसरे चमड़ा विधिपूर्वक नहीं उतारा जाता और अनजाने स्थानों पर चाकू या खुरपी से कट जाता है। कभी-कभी चमारों के पहुँचने से पहले ही गिद्ध अपना काम शुरू कर देते हैं अथवा सड़न शुरू हो जाती है और चमड़ा किसी काम का नहीं रहता। यदि हमारे पढ़े लिखे बेकार लोग इस समस्या की ओर ध्यान दें तो मरे हुए मवेसी भी देश की आय का साधन बन जाय और गो-रक्षा का सवाल खुद हल हो जाय। यह समस्या धार्मिक नहीं आर्थिक है। इस समय कटने वाला ढोर आमदनी का जरिया है, किन्तु अपनी मौत मरा हुआ मवेशी एक बोझा है। यदि इस काम को नीच न समझा जाय तो एक मरा हुआ ढोर आसानी से कई रुपये दे सकता है और हर साल देश के धन में करोड़ों रुपये की आय हो सकती है। किसी गांव से दूर कुछ ऊसर जमीन पट्टे पर लेकर उसमें एक बाड़ा बना लो और उसके ऊपर जाल तनवा दो। मरे जानवरों की लाशों की ढुलाई का ठीक इन्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाम होना चाहिये, ताकि चमड़ा खराब न हो जाय। दूर के देहातों में जहां भारी लाश को अपने बाड़े तक ढोना असुविधा-जनक हो तो वहीं किसी उचित जगह पर चमड़ा उतरवा लो, शेष भाग बोरों में भरवाकर अपने बाड़े में पहुंचा दो और विधि से चमड़ा, गोश्त, चर्बी, आंत, हड्डी, सींग और खुर इत्यादि निकलवा तथा साफ कराकर अलग-अलग हर एक का ढेर करा दीजिए और भिन्न २ कारखानों में भिजवा दीजिये। इस तरह एक अच्छी कीमत मिल सकती है।

यदि हमारे बेकार भाई इस ओर ध्यान दें तो लाखों रुपये का रोजगार बन सकता है और सड़ी मांटी से जो हवा खराब करके बीमारियां फैलाने का काम करती है कञ्चन का काम बन सकता है। गो-कशी की समस्या का एकमात्र हल यही है कि मरे पशु को कटने वाले पशु के समान मूल्यवान बनाया जाए। जब तक ऐसा न होगा गो-कशी केवल लैक्चरबाजी से बन्द न हो सकेगी।

आठवाँ अध्याय

मुतफर्रिक काम

हमारे यहां पढ़े लिखे तथा अधपढ़े बेकारों की कमी नहीं। न पूंजी या मालदारों की कमी है। और यदि कारखाने खोल तैयार माल बाजार में रखा जाय तो खरीदारों की भी कमी नहीं रहेगी। फिर भी कितने दुःख की बात है कि बेकारी दिन पर दिन बढ़ने के बावजूद भी हमारे देशवासी देश में आसानी से हो सकने वाले नये-नये काम करके लाभ नहीं उठाते। बेकारी के क्या कारण हैं इसे राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री तय करते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहें। कारण कुछ भी सही यह बात तो निश्चित है कि धन्धे की उन्नति और नये २ काम शुरू किये बिना बेकारी व गरीबी की समस्या हल नहीं हो सकती। बाहर से आने वाले सामानों की फहरिस्तों को देखिए। इनमें कितनी चीजें हम आसानी व मुनाफे के साथ तैयार कर सकते हैं। इससे हमारे कितने पढ़े लिखों को काम मिल सकता है इसका अनुमान कठिन नहीं है। जो कुछ नये कारखाने देश में ऐसी चीजों के जैसे कपड़ा, मौजा, इत्र, ताले, दवा, साबुन, फिनायल, दियासलाई, कांच का सामान बोतलें, चिमनी, इनेमल का सामान, एलूमोनियम का सामान, चीनी का सामान, आयल क्लाथ, कलम पेन्सिल, टीन के डिब्बे, कन्घे, ब्रुश आदि के लिये खुले हैं उनको कोई क्षति नहीं होती।

देशी चीजें सस्ती और अधिक मजबूत होती हैं और विश्वास से कहा जा सकता है कि देशी चीजों की मांग बढ़ गई है। साधारण चीजें जैसे स्लेट, पेन्सिल, फीते, पत्ती, जूतों के तस्मे, पिन, सुई, क्लिप इत्यादि के व्यवसाय की ओर विशेष ध्यान न देकर हमारे पढ़े लिखे नवयुवक नौकरियों के लिए सालों जूते घिसते हैं कितनी करुणायुक्त बात है। इस नौकरी की भावना को त्याग कर कोई सा व्यवसाय शुरू कर दीजिये। हम यहां कुछ फुटकर व्यवसाय बताते हैं।

रबर स्टाम्प—बनाने का तरीका बड़ा सरल है किन्तु जो लोग जानते हैं वह इसे दूसरों पर प्रकट नहीं करते। हम यहां सबसे सरल और उत्तम विधि लिखते हैं।

रबर स्टाम्प बनाने में निम्न चीजों की आवश्यकता होती है एक चेश व प्लेट, छापेखाने का टाइप, लेड और लोहे का साधारण प्रेस। चेश लोहे का ढला हुआ कीमती आता है इसलिये आक या अन्य सख्त लकड़ी की बनवाई जा सकती है इसमें चारों कोनों पर चार लोहे की कीलें होती हैं जिनमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्प्रिंग पड़े होते हैं, कीलें इसलिए होती हैं कि इस चेश पर प्लेट गलत न रक्खी जा सके और स्प्रिंग प्लेट को टाइप से ऊपर उठाये रखता है इस चेश में टाइप छापेखाने के सामान लगाकर और लेड डालकर ठीक प्रकार स्पेसिंग करके कस दिया जाता है ताकि मुहर का मजमून बीच में रहे। प्लेट लोहे की होती है जो चेश के बिल्कुल बराबर होती है और जिसमें चारों कोनों पर चेश की कीलों के लिए छेद होते हैं। चेश में टाइप कसकर ऊपर मोटा कागज रखकर धीरे से ठीक किया जाता है जिससे कोई टाइप टेढ़ा न रहे और चौरस हो जावे। फिर पेजों को थोड़ा और कस दिया जाता है (क्योंकि अगर कुछ टाइप थोड़ा टेढ़ा हुआ तो वह ठोकने में सीधा होगा और ढीला हो जायेगा)। इसके ऊपर प्लेट को पसलियों में निम्न तरह से तैयार किया हुआ मसाला भरकर प्लेट को कीलों में सैट करके ऊपर रख दिया जाता है जिससे मसाला टाइप से न छूने पावे। प्लेट का मसाला पसलियों के बीच में चौरस होना चाहिये और टाइप को बेनजान से तर कर लेना चाहिये फिर प्रेस में चेश मय प्लेट के रखकर प्रेस का स्क्रू धीरे २ कसा जाता है जिससे टाइप की पूरी छाप मसाले पर पड़ जावे फिर स्क्रू को ढीला करके प्लेट को निकाल कर तीन चार मिनट तक रक्खा रहने दिया जाता है फिर दुबारा चेश को कीलों पर रखकर प्रेस में दबाया जाता है और इस बार पहले की अपेक्षा अधिक दाब दी जाती है।

फरमे का मसाला जो पसलियों के बीच में भरा जाता है इस तरह तैयार किया जाता है।

बारीक पिसा हुआ सोप स्टोन	१। भाग
बढ़िया दांतों का प्लास्टर	१ भाग
बारीक पिसा हुआ काउलीन (चीनी मिट्टी)	१ भाग

यह सूखे ही मिला लिए जाते हैं फिर इसके मसाले को बारीक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छलनी में छाना जाता है इसकी उतनी मिकदार जितनी प्लेट में भरी जा सके ली जाती है और डेक्सटरीन (विलायती गोंद) गर्म पानी में घोलकर इस घोल में ऊपर के पाउडर को भली तरह साना और गूंदा जाता है जो गाढ़ा हो जावे और एक भी गांठ न रहे सब सामान मिल जावे गूंदने में देरी न होनी चाहिए फिर पसलियों के बीच में भरकर सीधे रौलर से बेलकर पसलियों के बराबर चौरस कर दिया जाता है।

जब प्लेट के फरमे पर छाप लेकर अलहदा किया जाता है तो देखना चाहिये कि छाप बिल्कुल साफ और अक्षर ठीक व तेज आया हो। फिर मसाले में टाइप को छोड़कर छेद करदो। जिससे गर्म करने में पानी आसानी से उड़ जाय और भाप फरमे को चटखा दे। फिर फरमे को ११ घण्टे भट्टी में गरम करो, आग तेज न हो जिससे कि फरमा चटख जाय। जब फरमा सूख जाये तो रेगमाल से रगड़कर चिकनी करलो और धौंकनी से रेत को उड़ादो। अब फरमा मोहर बनाने लायक हो गया। मोहर के लिए अन-वल्केनाइज्ड रबरशीट रबरस्टाम्प का सामान बेचने वालों के पास मिलता है। मोहर जितनी बड़ी बनानी हो उससे थोड़ा बड़ा काटकर सोप स्टोन पाउडर से मला जाता है इससे रबर फरमे पर चिपकता नहीं। (जो भाग अभी रेत से मिला है उसे टाइप की ओर) फरमे पर रखकर ऊपर टीन का टुकड़ा रख दिया जाता है, प्रेस को पहले २२० एफ. तक *गरम करलो। फरमे को मय रबर के टुकड़े के जिस पर टीन रखी हुई है गर्म प्रेस में रखकर धीरे २ दाब दी जाती है जिससे रबर टाइप की छाप में भर जावे इसमें करीब पांच मिनट तक लग जाते हैं किन्तु प्रेस काफी गर्म न हो तो

---

*टेम्परेचर के लिए थर्मामीटर इस्तेमाल किया जा सकता है। मगर अन्दाज हो जाने पर थर्मामीटर की आवश्यकता नहीं रहती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक देर लगती है यदि प्रेस बहुत ज्यादा गर्म हो तो रबर खराब हो जावेगा जब रबर ठीक गर्म हो जाता है तो उसका रंग नीला हो जाता है और सुई चुभोकर निकालने पर गड्ढा नहीं रहता। यदि गड्ढा रह जाय तो और गर्म करने की आवश्यकता समझनी चाहिए, फिर रबर फरमे से निकाल कर ठीक तरह काटकर सरेश या लाख की वार्निश से लकड़ी के दस्ते पर चिपका दिया जाता है।

कच्चा रबर बाजार में चौकोर या बोतल की शक्ल में बड़े-बड़े टुकड़ों में मिलता है देखने में ऊपर से खाकी माइल काला या पीला होता है, अन्दर मैला खाकी या मैला सफेद होता है यह किसी एक चीज में पूर्णतया नहीं घुलता। १० सी॰ पर यह ठोस होता है और इसमें लचक नहीं होती किंतु ३६ सी॰ पर यह मुलायम तथा एलास्टिक होता है। और खींचने पर १६ गुना बढ़ जाता है। ज्यों २ गरम किया जाता है त्यों २ इसका एलास्टिकपन कम होता जाता है और १२० सी॰ पर यह पिघल जाता है। कच्ची हालत में रबर बहुत चिपकीला होता है और चाकू को पानी से भिगोये बिना काटना कठिन होता है काटे हुए दो टुकड़ों को यदि दबा दिया जाय तो वे बिलकुल जुड़ जाते हैं।

कच्चे रबर में रेत मिट्टी लकड़ी के टुकड़े मिले होते हैं इस लिये पहले इसे साफ किया जाता है। साफ करने के लिए इसके बारीक पत्तर काटने पड़ते हैं, एक रौलर में बहुत चाकू लगे होते हैं। रौलर के सहारे रबर रखकर उसे लीवर से दबाया जाता है और रौलर को घुमाया जाता है। चाकुओं पर पानी गिरता रहता है। इस तरह रौलर के चाकुओं से छिल २ कर रबर के पत्तर हो जाते हैं यह पत्तर फिर दो रौलरों में दबाकर निकाले जाते हैं जो खूब पतले हो जावें, रौलरों पर लगातार पानी गिरना आवश्यकीय है वरना पत्तर रौलरों पर चिपक जावेंगे इसके अलावा पानी से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेत मिट्टी भी घुल जाती है।

इन रौलरों के गियर छोटे बड़े होते हैं जिससे एक रौलर तेज और दूसरा धीमा चलता है। इस तरह पत्तरों में दबाव के साथ खिंचाव भी पड़ता है और यह बहुत ही बारीक और बड़े-बड़े हो जाते हैं फिर यह पत्तर सुखाने के बाद तीसरे रौलरों के सैट में होकर निकालते हैं। यह रौलर नली द्वारा जिसमें भाप होती है गर्म किये जाते हैं और जिसमें पेच के जैसे निशान होते हैं। इसमें कई बार निकालने के बाद रबर पतले फीते के समान तथा घुलने के योग्य हो जाती है।

रबर बैन्जोल और बनवाई सलफाइड, ईथर, तारपीन के तेल या एलकोहल में घुल जाती है लेकिन अलग २ किसी चीज में पूरी २ नहीं घुलती। साधारण तरह से रबर घोलने के लिए कारबनवाई सलफाइड १० फीसदी खालिस एलकोहल काम में लाया जाता है। रबर के बारीक पत्तर पहिले कारबनवाई सल-फाइड में डाला जाता है और चन्द घण्टे पड़े रहने दिये जाते हैं इस तरह यह फूल जाते हैं फिर इस बरतन को भाप से गरम किया जाता है और उसमें कारबनवाई सलफाइड के १०० भाग में १० भाग के हिसाब से शुद्ध एलकोहल मिला दिया जाता है और अन्दर के पदार्थों को चलाया जाता है।

रबर गलने के बाद थोड़ा सा बन्धन कम से कम तीन या चार फीसदी उसमें मिला दिया जाता है इस तरह घुली हुई रबर में रबर के बिना घुले टुकड़े रह जाते हैं जिनको गूंदने की आवश्यकता होती है ताकि घोल एक समान हो जाय। घोल गूंदने के लिए एक मशीन होती है।

इस रबर के घोल को कपड़े पर चढ़ाया और पकाया जाता है। पकाने के लिए २४८ एफ तक उसे गरम करना आवश्यक है। गन्धक २३६ एफ़ पर पिघलता और इससे अधिक गरम करने पर रबर में मिल जाता है। गन्धक मिलने से रबर मजबूत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो जाती है। इसी को वलकेनाइज कहते हैं।

दूसरी तरह के वाटर प्रूफ कपड़े वह होते हैं जिनमें हवा तो जा सकती है मगर उन पर पानी पड़ने से पानी ठहरता नहीं। इसके लिए सैंकड़ों वर्ष पुरानी विधि ऊनी कपड़ों का वाटर प्रूफ बनाने की यह है कि सुगर आफल्ड और फिटकरी को अलग २ घोल कर मिला देते हैं। लैडसलफेट नीचे बैठ जाता है और घोल में एलूमीनियम एसीटेट रह जाता है। इसे घोल में कपड़ा भिगोकर रौलरों से दबाकर एकत्रित कर लिया जाता है। कैमिकल फार्मूला इस प्रकार है—

Alum Suger of lead

$$Al_2K_2(So_4)_4 + 4Pb(C_2H_3O_2)_2$$

Lead Potessium Aluminim

Sulphatc Cetate Cetate

$$4\ PhSo_4 + {}_2KC_2\ H_3O_2 + (C_2\ H_3\ O_2)\ 6$$

अब बजाय फिटकरी के एलूमीनियम सलफेट काम में लाया जाता है।

ड्राईसैल बनाना—सैल एक यूनिट होती है जिसमें विजली का करेंट चीजों के रासायनिक मेल से पैदा होता है दो या ज्यादा सैल जब अधिक करेंट या ताकत के लिए जोड़ दिये जाते हैं तो उन्हें बैटरी कहते हैं। बेटरी दो तरह की होती हैं एक तो प्राइमरी जो चार्ज नहीं हो सकती खर्च होने पर बेकार हो जाती हैं दूसरी सैकिन्डरी या स्टोरे जो बैटरी से चार्ज हो जाती है, ड्राई अर्थात् खुश्क सैल वास्तव में सही नाम नहीं है क्योंकि कोई सैल खुश्क नहीं होती। खुश्क होते ही सैल बेकार हो जाते हैं। खुश्क सैल केवल इसलिये नाम दिया गया है कि उसका घोल बहने वाला नहीं होता यद्यपि गीला होता है।

ड्राई सैल का बनाना बहुत आसान है और बिना किसी विशेष जानकारी के ही ड्राई सैल आसानी से तैयार किये जा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकते हैं। यदि आपने सैलो के बारे में पढ़ा हो तो आप इन दो से जो अंग्रेजी में पोलेराईजेशन और लोकल एकशन कहते हैं परिचित होंगे। सैल में जो हाईड्रोजन के कण होते हैं एकत्र हो कर करेंट चलने में रुकावट डालते हैं। यहां तक कि सैल करेंट देना बन्द कर देती हैं इसे पौलराईजेशन कहते हैं। इसे बंद करने को मैंगनीज डाई औकसाइड माप में लाया जाता है जिससे औक्सीजन निकलकर हाईड्रोजन के साथ मिल पानी बना देता है जस्ते में अन्य पदार्थों के कारण हर कण जहां कारबन आदि मिला हुआ है एक छोटा सैल बन जाता है और करन्ट उनमें चलने लगता है जो बाहर के सरकिट में सहायक नहीं होता और जस्ता खरच हो जाता है, यही लोकल एकशन कहलाता है इसे रोकने को पहिले जस्ते की सतह को साफ कर उस पर पारा मल देते हैं। अन्य पदार्थों के कण इससे ढक जाते हैं और लोकल एकशन बन्द हो जाता है। विदेशी सैलों के हमारे देश में आते आते इतना समय लगता है कि उनकी ताकत में कमी आ जाती है। यदि वहां पर ड्राई सैल ताजे तैयार करके बेचे जायं तो अच्छी बिक्री होगी। ड्राई सैल में एक प्लेट कारबन रौड का होता है और दूसरा जो ऊपर के बरतन का काम करता है, जस्त का होता है। जिस शक्ल व नाप का सैल बनाना हो उसी नाप का जस्त का बरतन तैयार करो। कारबन की ठंडी के चारों ओर नीचे लिखा डीपोलेराइज करने वाला (यानी हाइड्रोजन दूर करने वाला) मसाला पानी में सानकर भर दिया जाता है।

मेगनीज डाल औकसाइड	३ भाग
नौसादर	१ भाग
जिंक क्लोराइड	१ भाग
कोयला	साढ़े तीन भाग

इस मसाले और जस्त के बरतन के बीच में यह दूसरा मसाला भरा जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आटा	१ भाग
प्लास्टर आफ पैरिस	३ भाग
नौसादर	१ भाग
जिंक क्लोराइड	१ भाग
पानी	इतनी मात्रा में कि सब सन जावे

जस्त के वरतन की पेंदी से कारवन रौड न छूनी चाहिए वर्ना कोई शोर्ट सर्किट हो जायगा, इसके लिए गोल पट्ठे का टुकड़ा गर्म लाख में सानकर पेंदी में रख देना चाहिए, मसाला अच्छी तरह भर कर ऊपर से मुंह पर रेत और कार्डबोर्ड रख कर लाख या पिच से मुंह सील कर दिया जाता है। एमोनिया गैस को निकालने के लिए एक छेद छोड़ा जाता है जिससे गैस बाहर निकल जावे और सैल को न फाड़े। इस गैस के निकलने से भीतरी दबाव कम हो जाता है और सैल की ताकत ऊंची बनी रहती है। ऐसी सैल में जो रासायनिक काम होता है, उसका फारमूला यह है।

$$Zn+2MnO_2+NH_4Cl=Mn_2O_3+H_2O+2NH_3+ZnCl_2$$

इस सैल की ताकत चाहे बड़ी हो या छोटी। डेढ़ बोल्ट होती है और जस्ते की अन्दरुनी सतह जिंक क्लोराइड से ढक जाने पर अथवा घोल (इलेक्ट्रो लाइट) के खतम या खुश्क हो जाने पर इसका जीवन समाप्त हो जाता है। इसमें कारवन रोड जिसे मजबूती तथा अच्छे कनकशन के लिए पीतल या तांबे की टोपी से सिरे पर मढ़ देते हैं पोजोटिव सिरा [टरमीनल] होता है। जिसके ऊपर कार्डबोर्ड से ढक देते हैं। बाजार में जो तेल भिन्न कारखानों से आते हैं उनके मसाले में थोड़ा-थोड़ा अन्तर होता है सिद्धान्तया सब समान होते हैं। सैल को तोड़ कर देखने से सब समझ में आ जावेगी। वोल्ड से अधिक शक्ति के लिए कई तेल सीरीज में मिलानी पड़ती हैं। अधिक करन्ट लेने के लिए कनकशन पैरेलल होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरी तरह की सेकन्डरी बैटरी दो या अधिक सैल की होती है जो सीरिज में जुड़ी होती है। इसे स्टोरेज बैटरी कहते हैं इसमें बिजली जमा नहीं की जाती। इसमें रासायनिक कार्य से करन्ट बनता है और फिर चार्ज होने में उसके विपरीत काम हो जाता है बैटरी ज्यों की त्यों हो जाती है। हम यहां साधारण लैड एसिड टाइप की सैल बताते हैं जिसका बनाना कठिन नहीं यह बैटरी कारों, रेडियो, बिजली की मशीन चलाने में रोशनी और अनेकों काम जहाँ डी. सी. करन्ट की आवश्यकता हो काम में आती है।

स्टोरेज तेल में दो एलेक्ट्रोड होते हैं एक छेददार लैड का, दूसरा लैड पर-ऑक्साइड का। जो पानी और सल्फ्यूरिकएसिड के हल्के घोल में पड़े होते हैं। यह सब एक सख्त रबर के केस में बन्द होता है जिस पर एसिड का असर नहीं होता। हर रौल जब पूरी चार्ज हो जाती है तब २-२ वोल्ट होती है और साधारण तौर पर तीन सैल भारी लैड एलौय के टुकड़ों से सीरिज में जोड़ दी जाती हैं अतः इनको ५ वोल्ट स्टोरेज बैटरी कहते हैं।

दोनों एलेक्टरोड पोजीटिव और नैगेटिव शुमार में कई होते हैं जिनको प्लेट कहते हैं। पोजीटेव से नैगेटेव गिनती में एक ज्यादा होता है। बाहर की दोनों तरफ नगेटेव प्लेट ही रहे इस तरह पोजीटेव पलेट के दोनों तरफ एक-एक नैगेटेव प्लेट ही होता है बीच में उनको अलग करने को लकड़ी का पतला ब्लाक लगा रहता है। इसमें पौजेटेव प्लेट की तरफ गहरी नालियां होती हैं। जिससे घोल अपना काम कर सके। सब पोजेटेव प्लेट कोने पर एक साथ जुड़े रहते हैं। इसी तरह सब नेगेटेव मिला कर एलेक्टरोड बन जाते हैं। यह प्लेट लैड और एन्टीमनी एलोय के बनाये जाते हैं इनको बनाते समय चौकोर गड्ढे होते हैं जिनमें मसाला भरा जाता है। मसाला लिथार्ज या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेड आक्साइड आफ लैड को हल्के सल्फ्यूरिक एसिड में गाढ़ा सान कर बनाया जाता है और मशीन से प्लेट में भरा जाता है। सुखाने के बाद एक कोने पर निकले हुए भाग को पिघला कर एक दूसरे से जोड़ दिया जाता है। नैगेटिव समूह में पोजेटिव फंसाकर बीच में लकड़ी का ब्लाक फंसाकर नाली पोजेटिव की तरफ करके केस में रखदी जाती है। हल्के सल्फ्यूरिक एसिड से इसे भर दिया जाता है इससे करेन्ट काफी मात्रा में मिलता रहेगा। एक ओर से दूसरी ओर करेन्ट दौड़ाया जाता है जिससे एक प्लेट पर का मसाला छेददार लैड जो भूरे रंग का होता है और दूसरे प्लेट पर का मसाला लैड पर आक्साइड (जो सुर्ख मायल खाकी होती है) में बदल जाता है। लैड वाला भूरे रंग का नैगेटिव प्लेट और सुर्ख खाकी लैड पर आक्साइड वाला प्लेट पोजेटिव होता है केस या तो तीन अलग २ होते हैं या एक ही होता है जिसमें तीनों सैलों के लिए तीन अलग २ खाने होते हैं। जब इस बैटरी से करेन्ट लेते हैं तो दोनों प्लेटों पर लैड सल्फेट बन जाता है।

नेगेटिव प्लेट		पौजोटिव प्लेट		घोल
लैड		लैड पर औक्साइड		सल्फ्यूरिकएसिड
Pb	+	PbO_2	+	H_2SO4

$=_2bSO4 + {}_2H_2O$

दोनों प्लेटों पर लैड सल्फेट — पानी

इन फारमूलों से ज्ञात होगा कि ज्यों २ इस बैटरी से करेन्ट लेते हैं त्यों २ छेददार लैड सल्फेट से ढकता चला जाता है और एसिड कमजोर होती चली जाती है इस तरह चूंकि लैड सल्फेट और पानी अच्छे कन्डक्टर नहीं हैं रेजिस्टेन्स बढ़ता चला जाता है और वोल्टेज गिरता चला जाता है इसको फिर चार्ज करने में जिस तरह इससे करेन्ट लिया जाता है उसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिल्कुल विरुद्ध करेंट चलाया जाता है जिससे फिर नेगोटिव पर लैड और पोजीटिव पर लैड पर-ओक्साइड और घोल में सल्फ्यूरिक एसिड होजाती है।

लेड सल्फेट
दोनों प्लेटों पर - पानी
लैड लैड पर औकसाइड घोल में
नेगोटिव प्लेट पर पोजीटिव प्लेट पर सल्फ्यूरिक एसिड

इस तरह पहली दशा फिर स्थापित हो जाती है और बैटरी करेन्ट देने लगती है। बैटरी के डिस्चार्ज हो जाने की जांच बड़ी सरल है। चूंकि सल्फ्यूरिक एसिड पानी से भारी होती है इसलिये चार्ज की जांच केवल घोल स्पेस्फिक ग्रेविटी हाइड्रोमीटर से नाप करली जाती है यह चार्ज की हालत में घोल की स्पेस्फिक ग्रेविटी १·२७५ से लगाकर १·३०० तक होती है। डिस्चार्ज होने पर यह कम होती चली जाती है। परन्तु यह जांच तभी तक ठीक है जब तक कि कोई धोखा देने वाला मनुष्य घोल में बाहर से और एसिड न मिला दे। बैटरी चार्ज करने के लिए चार्जर बने हुए आते हैं किन्तु यदि डी. सी. करेन्ट लाइन घर में हो तो चार्ज करना कठिन नहीं इस लाइन से बैटरी सीधी नहीं जोड़ी जा सकती यदि ११० या २२० वोल्ट की लाइन है तो यह प्लेटों को गरम करके खराब कर देगी और लाइन के फ्यूज उड़ जायेंगे इसलिये करेन्ट गिराने के लिए दो चार बत्तियां १०० वाट की बीच में पहिले लगा देनी चाहिए।

यह मालूम कर लेना चाहिए कि कौन सा तार पोजिटिव और कौन सा नेगेटिव है लाइन के पोजिटिव तार को बैटरी के पोजिटिव सिरे से और नेगेटिव तार को बैटरी के नेगेटिव सिरे से। जिस बैटरी में उल्टा करेन्ट चले जोड़ना चाहिये तार में पोजिटिव नेगेटिव वोल्टमीटर से जाना जाता है किन्तु यदि वोल्टमीटर न हो तो एक ग्लास में पानी लेकर कुछ बैटरी का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घोल अथवा नमक उसमें डाल कर तार पानी में डाल दो तो नेगेटिव तार से पोजेटिव की अपेक्षा अधिक बबूले उठेंगे जहां लाइन ए. सी. हो वहां करेन्ट डी. सी. कर लेना पड़ता है इसके लिए वल्व या मेटिल रेक्टीफायर काम में लाए जाते हैं। हम यहां क्रस्टेल फुलवेव रेक्टीयर बताते हैं जिससे ए० सी० करेन्ट का डी. सी. बन जाता है। कुछ चीजों के क्रिस्टिल में एक ओर ही करेन्ट चलता है दूसरी ओर नहीं, इस गुण को रेक्टीफायर बनाने के काम में लाया जा सकता है।

खांड बनाना—खांड जीवन की आवश्यक चीज है इसे सबसे पहिले हमारे देश ने ही ईजाद किया था अरब के व्योपारी इसे पहिले पहल भारत से यूरोप ले गये थे। रोम और यूनान वाले इसे भारतीय नमक के नाम से पुकारते और बड़ी ऊँची कीमत पर खरीद कर दवा की तरह प्रयोग करते थे।

खांड यहां विशेषतः ईख के रस से तैयार की जाती है। रस को औटाकर राब बनाते हैं इसे मशीन में घुमाकर खांड निकाली जाती है मशीन साधारण होती है जो आसानी से तैयार कराकर हाथ की ताकत से चलाई जा सकती है। इसके जिस भाग में राब डाली है उस भाग के चारों ओर बारीक चलनी होती है जिसमें से खांड के कण बाहर न निकलें किन्तु शीरा बाहर निकल जावे यह भाग बहुत तेजी से घूमता है और सेन्ट्रीफ्रगल एकशर से शीरा बाहर निकल जाता है और खांड रह जाती है। यह शीरा जमा होकर नीचे बरतन में लिया जाता है।

राब का प्रबन्ध पूरे सालभर को खांड निकालने के लिए ईख की ऋतु में ही करना पड़ता है अतः हमारा विशेष अनुरोध है कि देश के बेकार नवयुवक इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें।

बटन बनाना—बटन सीप सींग हड्डी चमड़ा ताड़ नारियल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कांच मांटी और पशुओं के खुर आदि अनेकों तरह के बनते हैं और यस सब सामान भारतवर्ष में ही अधिकता से मिल सकता है और साथ ही अन्य देशों की अपेक्षा सस्ता भी।

बेकार टीन के कतरों से पञ्चिंग मशीन से बहुत सस्ते व मजबूत बटन बन सकते हैं और उनकी खपत भी काफी हो सकती है। एक और विधि यह है कि पुराने एलमोनियम बर्तन एकत्र कराइये। घरों में एलमोनियम के पुराने बर्तन किसी काम नहीं आते और बेकार पड़े रहते हैं। यह कौड़ियों में मिल सकते हैं। इनको पहिले काष्टिक सोडा या पुटाश के सोलूशन में डालो फिर दो भाग नाइट्रिक एसिड और एक भाग सल्फ्यूरिक एसिड में डाल कर शुद्ध नाइट्रिक एसिड में डालो और सिरके में डालकर पानी से ठीक तरह धोलो और गरम लकड़ी के बुरादे में सूखे कपड़े से या ब्लडस्टोन से पालिश करदो, फिर पञ्चिङ्ग मशीन से तरह २ की डाई से काटकर अनेक तरह के बटन बनालो। इसके अलावा पीतल, नकली चांदी या सोने के बटन बन सकते हैं। हम यहां कुछ फार्मूले देते हैं जिनके अनुसार अच्छे बटन बनाने की धातु सस्ती तैयार हो सकती है।

ताँबा ७ औंस, जस्त ७ औंस, निकिल साढ़े सोलह औंस, लोहा डेढ़ औंस, कोबाल्ट पौने दो औंस, टिन ढाई औंस। पहिले जस्ते को १२ भाग ताँबे में पिघलाकर मिलाते हैं फिर निकिल को समान भाग जस्त निकिल लोहे और बाकी तांबे के साथ जिसमें कोबाल्ट और कोयला भी डलता है खरिया में भरकर कोयला से ढक कर गरम किया जाता है। जब यह मिल जाते है तब आग कम कर देते हैं फिर पहला तांबा जस्त उनमें मिला दिया जाता है। फिर टिन को खुश्क कागज में लपेट उसमें डालते हैं। जब यह कुल गल जावे तब साँचों में ढाला जाता है। यह चांदी के समान धातु होती है।

Kirtikant Sharma Collection; Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोटी मशीनें– साइन्स की तरक्की ने छोटी मशीनें इजाद कर मेहनत को कम और काम को आसान बना दिया है। मशीनें हाथों के मुकाबले तेजी से काम करती है और एकसा तथा सही काम करती है। आदमी भूल कर जाता है और होशियार से होशियार आदमी एक हरकत को ठीक उसी प्रकार दुहराने में कामयाब नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए कपड़ा बुनने के हाथ के करघे को लीजिये। कोई जुलाहा हर बार सटक नरी को एक ही समान ताकत से नहीं फेंक सकता और न ठीक ऐसा झटका ही दे सकता है कि सटक नरी बराबर तेजी से ही हर बार चले, किन्तु अपने आप नरी फेंकने वाली मशीन इस काम को एक ही बराबर ताकत से करती रहती है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हाथ का काम कला युक्त होता है, लेकिन कला की कदर कुछ बड़े आदमी ही करते हैं, आम आदमी उसका ध्यान नहीं करते।

साधारण मशीन जो घरों में मोजा बनियान आदि बुनने के लिए प्रयोग की जा सकती है, प्रिंटिंग मशीन है। थोड़े अभ्यास से इनमें अनेकों डिजाइन की चीजें निकाली जा सकती हैं। एक फीता बुनने की मशीन जापान में ईजाद की गई, जो छोटे से बिजली के मोटर से चलती है। यह तरह-तरह की डिजायनों के फीते, साड़ी चद्दर आदि के किनारों की बेलें, निवाड़, लेम्प की बत्ती इत्यादि अनेकों चीजें तरह २ से एडजस्ट कर देने पर तैयार कर देती है। लागत भी अधिक नहीं लगती।

सेफ्टी पिन बनाने की मशीन—सेफ्टी पिन घर २ में काम आती है। इसकी मशीन दो या तीन होती हैं। तार मामूली लच्छों में ही लगा दिया जाता है। यह तार पहिले घूमते हुए फ्रेम पर जिसमें खूंटियां लगी होती हैं खिंचकर सीधा होता है और डबल क्रेंक फीड से बढ़कर कट जाता है। हर क्रेंक के चलने पर एक पिन के लिये ठीक तार का नाप निकलता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(यदि वैसे काटा जाय और थोड़ा सा भी लम्बाई में अन्तर पड़ जाय तो आगे की मशीन अपना काम ठीक न कर सकेगी) फिर तार में नोक निकाली जाती है। इसमें सान रखने वाला पहिया बाहर को न चलकर अन्दर को अर्थात् तार की ओर चलता है जिससे तार की लम्बाई में जरा भी अन्तर न पड़ने पावे। इसके बाद यह तार मोड़ा जाता है और कमानी बनाई जाती है। दूसरी मशीन में पीतल के अंग्रेजी के आठ के अक्षर जैसे टुकड़े कटते चलते हैं। यह एक मोथरे पंच से एक छेद में दबाये जाते हैं, जहां एक ही बार में सही शकल धारण कर लेते हैं। फिर टुकड़ों को तार के सिरे पर फुट प्रेस से दबाकर जमा दिया जाता है। यह सब काम देखने में बड़ा दिलचस्प और बड़ी जल्दी से होता है। एक मिनट में ६० से ७५ तक पिन तैयार हो जाते हैं। यह मशीन से थोड़ी २ देर बाद उठा लिये जाते हैं और साफ करके निकल कर दी जाती है। यह मशीनरी बहुत ज्यादा जगह नहीं घेरती।

शू आई पंचिंग मशीन—शू आई लेट जिन्हें यहां के दुकानदार रिंग कहकर पुकारते हैं छोटी सी चीज है किन्तु जूतों और पेटी वगैरह में जहां बकसुआ लगाया जाता है इनकी बड़ी जरूरत होती है। इनसे छेद बहुत मजबूत हो जाता है। इनका बनाना बहुत ही आसान है। मशीन में पीतल का फीता लगता है और पहला पंच उस पर निशान बना देता है दूसरा पंच उसे और भी गहरा कर देता है इसी तरह तीसरा और चौथा पञ्च उसे गहरा कर काट देता है। फिर इसमें छेद करने के बजाय छेद फाड़ा जाता है जिससे फटे हुए किनारे लगाते समय आसानी से मुड़ जाते हैं। यह सब काम एक ही मशीन से हो जाता है फिर इसके ऊपरी भाग को पौलिश इनेमिल काला सफेद ब्राऊन जैसी आवश्यकता हो एक विशेष तरीके से जिसे एयर ड्राइंग एण्ड बेकिंग प्रोसेस कहते हैं कर दिया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायरगोज तार का कपड़ा बनाने की मशीन वायर गोज बहुत से कामों में आता है और आम तौर पर कपड़े के समान ही बुने जाते हैं। अन्तर यह है कि तार रुई या ऊन के धागे के समान मुलायम नहीं होता और न मुड़ ही सकता है। अगर तार खिंचकर टूट जाय तो कपड़े में टूटे सिरे रह जाते हैं। जिससे कपड़ा खराब हो जाता है। इसलिये तार का कपड़ा बुनने की मशीन का हर एक पुर्जा बहुत ही सही होता है और यह मशीन धीरे २ चलती है २५ नं० के तार तक का गोज की मशीन तेजी में चलती है। १५ नं० तक के लिए भी अपने आप सब काम करने वाली मशीन होती है किंतु धीरे चलती है, इससे मोटे तारों को मशीनों का काम हाथ की सहायता से किया जाता है। इसलिये जो कारखाना इस तरह का गोज बनाने का इरादा करता हो उसे कई तरह की मशीनें रखनी होंगी।

तार की जंजीर बनाने की मशीन—तार की जंजीर बहुत तरह तथा लोहे से सोने तक कई धातुओं से बनती हैं साधारण तया लोहे की जंजीरों की कड़ियां झलती नहीं मगर मुलायम धातुओं की कड़ियों में टांके की आवश्यकता होती है जिससे कड़ी का मुंह न खुले। टांका हर कड़ी में अलग २ लगावें तो बड़ी कठिनाई हो, इसलिये टांके का मसाला तार के भीतर ही भर देते हैं जिस धातु का तार बनाया जाता है उसमें पहले बीच में छेद करके उसमें गरम कर टांका भर दिया जाता है। यह हर धातु के लिये अलग होता है। टांका धातु के बीच में १०० भाग धातु १५ भाग होता है और तार खिंचने पर तार में भी इसी हिसाब से बना रहता है। रोल्ड गोल्ड की चेन बनाने के लिए एक और सावधानी की आवश्यकता होती है जो एक सोने की नली जिसकी चौड़ाई २ इञ्च और मोटाई सूत या उससे कम होती है ली जाती है और पीतल की नली जिसकी चैन बनानी है ऐसे नाप की बनाई जाती है जो सो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की नली में फिट हो। इस पीतल की नली पर चांदी की पालिश की जाती है। फिर उसे सोने की नली में रख कर गरम किया जाता है चांदी के कारण सोना पीतल से जकड़ जाता है। अब इस हांडी में टांका भरकर तार खींचो। इस तरह एक मजबूत तार बन जाता है जो देखने में सोने का होता है, किन्तु सोना ·०००२५ इञ्च से भी बारीक होता है। सोने की यह मोटाई करीब २० साल चल जाती है। मशीन तार को काटकर मोड़ती हुई कड़ी बनाती और साथ ही कड़ी में कड़ी डालती चलती है। यह सब काम किस तरह होता है वर्णन करने में ग्रन्थ भर जायगा। मशीन चलते देख समझने में कठिनाई न होगी, मशीन छोटी सी होती है।

पहले तार खिंचकर सीधा होकर एक कड़ी के नाप का कटता है और U की शकल में मुड़ जाता है साथ ही, तार का सिरा उस में होकर निकल कर कटकर मुड़ता चलता है। ऊपर से दबाने वाला यन्त्र उतर २ कर हर एक यू के बाजू मोड़कर बन्द कड़ी बनाता चलता है और चैन बनती चलती है। वह चैन बनकर यदि सीधी गिरती चले तो उलझ कर बेकार हो जाय इसलिये एक टर्न टेबिल लगी रहती है जो ऊपर की मशीनरी से तांत की माल से चलती है और चैन जैसे २ निकलती है टर्न टेबिल घूमकर उसे लेती चलती है।

तार खींचने की मशीन—तार बहुत सी धातुओं के बनते हैं। लोहा, स्पात, तांबा, पीतल आम तौर पर तार खींचने के काम में आती है। अच्छे तार की मोटाई हर जगह समान होती है कहीं चटका हुआ या गढ़ेदार नहीं होता और मजबूत तथा लचकीला होता है। तार हाथ से खींचकर बनाये जाते हैं, पहिले हाथ से पीटकर धातु को पतला कर लिया जाता है फिर उसका बार २ एक से दूसरे पतले छेद में डालकर खींचा जाता है। आजकल जो मशीनें तार खींचने की हैं उनमें तिहरे २

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सात सैट रौलर के इस तरह लगे रहते हैं कि जब तार का एक सिरा पिछले सैट से निकल रहा होता है तो दूसरा सिरा अगले सैट में लग जाता है, तार की इतनी खपत है कि जितना लोहा और इस्पात तैयार किया जाता है उसका आठवां भाग तार बनाया जाता है। लोहे में तार पर अक्सर तांबा या टीन चढ़ा दी जाती है। जो बाजों में, स्प्रिंगों में, जहाजों में व तार टेलीफोन आदि के काम में आता है। तांबे का तार बिजली के काम में लाया जाता है और उस पर अकसर टिन चढ़ाया जाता है। पीतल का तार मखमल बुनने, ब्रुश बनाने व कागज बनाने के काम आता है।

रस्सी बंटने की मशीन—भारत में सूत, सन, पटसन, नारियल आदि चीजों की जिनसे रस्से बनाये जाते हैं कमी नहीं है। रस्सा बनाने का पुराना तरीका ठीक नहीं, उसमें समय और मेहनत बहुत लगती है। बेकारों के लिए रस्सा बनाने का काम अच्छा और सस्ता साधन है। यहां पर कई तरह के रस्से बनाने की मशीन आई हैं और उन पर थोड़ी सी ट्रेनिंग लेकर कोई भी आदमी काम कर सकता है।

ब्रुश बनाने की मशीन—दांतों के ब्रुश से लेकर सड़क साफ करने तक के अलग २ साइजों में होते हैं। ८५ साल पहले यह बड़ी कठिनाई से बनते थे मगर अब इनकी भी मशीन बन गई हैं। इनसे जिस साइज के ब्रुश बनाना चाहो आसानी से बनाये जा सकते हैं।

पहिले पुश्त की लकड़ी को मशीन से साफ तथा शकल में यानी जिस साइज में बनाने हों बना लो फिर चार स्पिन्डल या नाल्टी स्पिन्डल मशीन से चार २ पुश्तों में एक साथ छेद कर दिये जाते हैं फिर आटोमैटिक लूम मशीन से ब्रुसल्स तार के फन्दे से छेदों में लगा दिये जाते हैं।

इसी कटिंग मशीन से इन ब्रुसल्स को जैसी शकल में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जरूरत हो काट लिया जाता है।

इनके अलावा अनेकों छोटी मशीनें हैं जो लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं जैसे कार्ड बोर्ड बक्स बनाने की मशीन, टिन के डिब्बे बनाने की मशीन, सोडावाटर बनाने की मशीन, बरफ बनाने की मशीन, छाता बनाने की मशीन, आटा पीसने की मशीन, धान कूटने को मशीन, तेल निकालने की घानी, जूते काटने तथा टांकने की मशीन, पेन्ट तैयार करने की मशीन, फाउन्टेनपेन बनाने की मशीन, दियासलाई बनाने की मशीन इत्यादि-इत्यादि।

एलैक्ट्रोप्लेटिंग—बिजली द्वारा कलई करने के लिए यह आवश्यक है कि जिस चीज पर कलई चढ़ाई जावे वह बिल्कुल साफ हो, तांबा पीतल जस्त वगैरह ऐसे तेजाबों से साफ किये जाते हैं कि जिनमें वह मल जाते हैं। ऐसे सोलूशन दो जगह बनाने चाहियें पहले एक में फिर दूसरे में डुबाकर चीज को साफ करना चाहिए। शीशा तथा टिन एसिड में नहीं डाले जाते बल्कि कास्टिक सोडा से साफ किये जाते हैं जिस पर चांदी या सोने का पानी चढ़ाना हो उन चीजों पर से तेजाब बिल्कुल दूर कर देना चाहिये बाकी तांबे के लिये या जो चीजें कास्टिक सोडा सोलूशन से धोई गई हैं इनको केवल सोलूशन से निकालने के बाद साफ पानी में डालकर फौरन कलई के बाथ देकर लटका देना चाहिए। अगर चीजों के ऊपर की सतह पूरी तरह साफ न होगी तो उस पर चढ़ाई हुई कलई न जमेगी बहुत सी धातुओं को हवा लगते ही जंग लगना शुरू हो जाती है इसलिए साफ करने के बाद जरा भी देर न करनी चाहिए। साफ करने से पहले चीज को तांबे के तार में बाँध लेते हैं, जिससे हाथ से छूना न पड़े। जरा भी छू जाने से फिर साफ करने की जरूरत हो जाती है। सतह जितनी साफ होगी कलई उतनी ही चमकदार होगी। हम यहां पीतल पर सोना चढ़ाने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की विधि बतलाते हैं—पहले पीतल की चीज को सल्फ्यूरिक एसिड और नाइट्रिक एसिड समान भाग में जिसमें थोड़ा नमक पड़ा हो डालकर ठंडे पानी से धोओ और फिर दो तीन पानी के बरतनों में डालो जिससे तेजाब दूर हो जावे, फिर उसे नीचे की बाथ में लटकाकर बिजली से सोना चढ़ाओ।

पोटोशियम फेरी साइनाइड	३० भाग
कांवानेट	३० भाग
नौसादर	३ भाग
गोल्ड क्लोराइड	१५ भाग
पानी	१००० भाग

पहले सब चीजों को अलावा गोल्ड क्लाराइड के पानी डाल कर उबालो और छान लो, गोल्ड क्लाराइड को डिस्टिल्ड वाटर में घोलकर ऊपर से छने हुए घोल में मिला दो, बाथ तैयार हो गई उस पर निकल चढ़ाने के लिए निकिल एमोनियम सल्फेड जिसे डबल सल्फेड कहते हैं या डबल क्लोराइड इस्तेमाल की जाती है। डबल सल्फेड बाथ १ गेलन पानी में ¾ पौंड सल्फेड पड़ता है। डबल क्लोराइड १ गेलन पानी में ४ औंस काफी होता है।

टिन चढ़ाने के लिए बाथ

पोटाशियम पाइरोफौस्फेड	१२ भाग
टिन प्रोटोक्लोराइड	४॥ भाग
पानी	२० भाग

चाँदी के चढ़ाने के लिए—

सिलवर नाइट्रेड	१५० भाग
पोटाशियम साइनिड	२५० भाग
पानी	१०००० भाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चला कर छान लो, साफ की हुई चीज को नाइट्रेड आफ मरकरी बाथ में डाल दो।

इनैमिल का काम—यह आम तौर पर ५ तरह का होता है—१–घरेलू बरतन, २–रसायनिक काम के लिए बरतन, ३–गाड़ी वगैरह, ४– पानी के नल, ५–साइन बोर्ड।

इनैमिल के ठीक तरह न मिलाने या गलाने से इनैमिल जल्द चटक जाता है। हम विस्तारभय से केवल पांचवां अर्थात् साइन-बोर्ड इनैमिल यहाँ देते हैं। पहले नाम का प्लेट सरकूलर कटिंग मशीन से काटा जाता है फिर उसके किनारे रेतकर साफ किये जाते हैं और दो सिरों पर दो छेद करके चौरस सतह फीट पर दी जाती है फिर उसे हाइड्रोक्लोरिक एसिड की बाथ में डाला जाता है, जिससे एसिड और पानी बराबर होता है फिर इस प्लेट को स्टोव पर सुखा लिया जाता है। ठंडा करने पर जंग सब झड़ जाती है और सतह साफ हो जाती है फिर दूसरी बार उसे एक सल्फूरिक एसिड और २० पाव पानी में १२ घंटे डाला जाता है, फिर पानी से धोया जाता है और सुखाकर फौरन इनैमिल किया जाता है देर होने से फिर जंग चढ़ जावेगी और दुबारा साफ करने की जरूरत होगी। फिर इस पर ग्रैवकनिंग किया जाता है। यदि पाउडर हो तो प्लेट को गोंद के घोल से तर करके बारीक चलनी से पाउडर डाल दिया जाता है यदि द्रव हो तो ब्रुश से फेर दिया जाता है। इसके लिए प्लेट को इतना गरम किया जाता है कि हाथ से छुआ जा सके, फिर सुखाने की भट्टी में रखकर १६० तक गरम करके खुश्क किया जाता है। दूसरी भट्टी में रेल की पटरियों पर ठेला रक्खा होता है। भट्टी का मुंह ढक्कन से बन्द होता है ढक्कन ऊपर खिसका कर ठेला खींचकर बाहर निकाल लिया जाता है और उसमें प्लेट तरकीब से रखकर ठेला भट्टी के अन्दर ढकेल दिया जाता है। भट्टी के मुंह का ढक्कन गिरा कर भट्टी को बन्द कर

Kailash Nath Katju Collection, Prayagraj

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिया जाता है प्लेट बहुत से एक साथ रखकर गरम किये जाते हैं यहां तक कि इनेमिल तमाम प्लेट पर पिघल जाता है जल्द ठंडा होने में इनेमिल चटक जाता है जिस प्लेट पर ठीक इनेमिल नहीं चढ़ा उसे निकाल दिया जाता है। फिर इस प्लेट पर सफेद कोट किया जाता है यह पतला चढ़ाया जाता है और भट्टी में गरमी पहले भूरे कोटिंग के मुकाबले कम रहती है, जिससे पहला कोट न पिघले ठंडा धीरे-धीरे किया जाता है। फिर स्टेन्सिल तैयार किया जाता है जो या तो मोटे व मजबूत कागज या स्टेन्सिल नैटिल का हो। अब प्लेट नीला कोट किया जाता है जो सफेद कोट के समान होता है। यह कोट ब्रुश से गोंद का पानी मिलाकर होता है जब वह सूख जावे स्टेन्सिल प्लेट पर रखकर ब्रुश फेरा जाता है जिससे स्टेन्सिल के कटे हुए भाग के नीचे का नीला कोट साफ हो जावे। इस तरह नीचे का सफेद इनेमिल निकलकर सफेद हरफ बन जाते हैं अब जहां स्टेन्सिल में जोड़े थे वह भी प्लेट पर नीला कोट हटाकर साफ कर दिये जाते हैं जिससे हरफ ठीक हो जावें फिर सफेद के समान भट्टी में गरम करके नीले कोट को जला लिया जाता है पहले भूरा कोट प्लेट के दोनों तरफ होता है किन्तु सफेद और नीला सामने ही होता है।

भूरे कोटिंग का मसाला—फूटा कांच, लाल सीसा, सुहागा, शोरा।

सफेद कोटिंग का मसाला—कांच, सुहागा, सिलीका टिन, ओकसाइड शोरा, सोडा मैगनीशिया, मिट्टी तथा बोरिक एसिड।

नीले कोट का मसाला—कोबाल्ट ओक्साइड, तेरिस बाइट सल्फर वेरिटीज।

खिलौने बनाने का काम—यूरोप में बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा खिलौने के जरिये दी जाती है। खिलौनों के किले, पुल, खाई, सिपाही, तोप वगैरा दिखाकर फौजी तालीम दी जाती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। यह नमूने सीसे के हुआ करते हैं। हमारे देश में भी बच्चों के लिए तालीमी खिलौने बनाये जा सकते हैं। जापान व जर्मनी से इस देश में लाखों रुपये के खिलौने आते हैं और उनकी बिक्री बढ़ती जाती है। यदि पाठक इस ओर ध्यान दें तो जरूर थोड़े समय में मालामाल हो सकेंगे। विदेशी सस्ते खिलौने तीन तरह के अधिक चलते हैं (१) रबर (२) सेलूलायड (३) टिन। बच्चे निम्न खिलौने अधिक पसंद करते हैं (१) मुंह से बजने वाले। (२) भड़कीले रंगों के जो देखने में सुन्दर हों (३) चलने वाले जो रस्सी बांधकर खींचे जा सकें या जो फनर (कमानी) से चलें। (४) चिड़िया जानवर आदमी जो उछलते या हाथ पैर चलाते हैं जिन्हें देखकर बालक खूब हंसते हैं। इनके अतिरिक्त लट्टू, चरखा वगैरा।

टीन के खिलौने साधारण पंचिंग मशीन से जो और भी अनेक कामों में आ सकती है, बन सकते हैं और उन्हें सुन्दर पेन्ट करके बेचा जा सकता है। टीन की अनुपयोगी कतरनों को बेकार सड़कों पर फेंक दिया जाता है अतएव वह सस्ती मिल जाती हैं। हमारी इच्छा थी कि खिलौने बनाने के विषय को विस्तार से लिखते, किन्तु अवकाश की कमी और पुस्तक की छुटाई हमें ऐसा न करने के लिए बाध्य करती है।

खिलौनों के अलावा और भी काम ऐसे हैं जो बहुत मुनाफे के साथ किये जा सकते हैं जैसे स्टार्च बनाना, गैस के मेंटिल, सेलूलाइड के कंघे, खुंटी, कलमदान आदि बनाना, दर्पण बनाना, आतिशबाजी का सामान बनाना, कांच का सामान बनाना, ग्लिसरीन, फिनायल जैसे पदार्थ तथा हाथ का कागज बनाना इत्यादि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवाँ अध्याय

स्वास्थ्य सुख

धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्य मूल कारणम्—आरोग्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मूल कारण है।

अच्छा स्वास्थ्य संसार के सब सुखों में प्रधान है। बिना स्वास्थ्य के समस्त सुख सामग्री फीकी हो जाती है। शरीर अस्वस्थ होने से न किसी काम में मन लगता है और न लोक या परलोक का कोई काम ही हो सकता है। इसीलिए तन्दुरुस्ती को हजार न्यामत कहा जाता है।

स्वस्थ मोटे ताजे आदमी को नहीं कहते। जिसका शरीर रोग रहित है, मन प्रसन्न है तथा शरीर के सब अंग अपना काम ठीक २ करते हैं वही मनुष्य स्वस्थ है। एक पहलवान मनों वजन एक हाथ से उठा सकता है, अच्छी अच्छी कुश्ती मार सकता है किन्तु यदि उसके नेत्र अथवा अन्य कोई अवयव रोगी या निर्बल है तो उसे स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। हजारों बैठक और दण्ड लगाने वाले पहलवानों के हाथ पैरों की मांस पेशियां पुष्ट और बलिष्ट हो जाती हैं किन्तु उनके नेत्र रोगी सिर छोटा, दिमाग ठस, कमर आवश्यकता से अधिक पतली, गरदन छोटी और मोटी तथा टांगें जरूरत से अधिक मोटी और भारी हो जाती हैं, ऐसा शरीर एक ऐसी जंजीर के समान है जिसकी कुछ कड़ियां अत्यन्त मोटी और मजबूत हैं किन्तु कुछ पतली और कमजोर इसी कारण देखने में आता है कि अधिकतर पहलवान दीर्घायु नहीं होते, भाग दौड़ नहीं सकते, काम करने में उनका चित्त नहीं लगता तथा कभी २ वह मूत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथवा उदर सम्बन्धी रोगों से पीड़ित भी हो जाते हैं, स्वस्थ शरीर का प्रत्येक अङ्ग समान दृढ़, आलस्य रहित, लचकीला और फुर्तीला होता है, ऐसा स्वास्थ्य डंड और बैठक पर नहीं, बल्कि नियमित और उचित आहार बिहार पर निर्भर है। आहार बिहार ठीक न रहने से शरीर में विकार उत्पन्न हो जाता है, उसी को रोग कहते हैं, रोग हमारे अनियमित जीवन का प्रकृति की ओर से दंड तथा इलाज हैं।

१—हमारा शरीर एक इञ्जन के समान है। जिस प्रकार इञ्जन को कोयला पानी और तेल की आवश्यकता होती है, उसी तरह शरीर को काम करने तथा जीवित रहने के लिए वायु, जल और भोजन की आवश्यकता होती है। इनमें वायु सब से अधिक आवश्यक पदार्थ है। भोजन बिना मनुष्य एक दो माह जीवित रह सकता है परन्तु वायु के बिना घंटे भर भी नहीं रहा जा सकता।

वायु में ६'५ भाग आक्सीजन और ४'५ भाग नाइट्रोजन तथा कारबोनिक एसिड गैस होता है। इनमें आक्सीजन हमारे शरीर में रक्तशोधन के काम आता है। कारबन डाई आक्साइड या कारबोनिक एसिड गैस हमारे शरीर से निकलता है। नाइट्रोजन हम वायु से सीधा नही लेते। वायु में नाइट्रोजन आक्सीजन को कमजोर बनाने के लिए है। यदि नाइट्रोजन इतनी मात्रा में आक्सीजन में मिश्रित न हो तो पदार्थ शीघ्र ही जल जाँय और जीवन-क्रिया भी जल्द समाप्त हो जाय।

जब हम सांस लेते हैं अथवा कोई पदार्थ वायु में जलता है तो वायु की औक्सीजन कारबन से मिलकर कारबन डाई औक्साइड में परिणित हो जाती है। वनस्पति की हरियाली कारबन डाई औक्साइड से कारबन लेकर औक्सीजन वायु को दे देती है। यह प्रकृति का वायु चक्र है। प्राणियों द्वारा सेवन की हुई वायु वृक्षों की सेवित वायु प्राणी सेवन करते हैं, इस प्रकार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु में समानता बनी रहती है।

इस वायु को हम अपनी छाती फुलाकर फेफड़ों में भरते हैं। फेफड़े बहुत बारीक झिल्ली के थैले होते हैं जिनमें हृदय से दूषित रुधिर आकर फेफड़ों की झिल्लियों में चारों ओर फैल जाता है। झिल्लियां इतनी बारीक होती हैं कि उनमें रुधिर नहीं छनता किन्तु वायु औक्सीजन छनकर रुधिर के संसर्ग में आ जाती है रुधिर अपना मल (कारबन) इस वायु को दे देता है। इस तरह शुद्ध हुआ रुधिर हृदय हमारे मस्तिष्क को भेजता है और कुछ दूषित रुधिर के साथ शुद्ध रुधिर का मिश्रण कर समस्त शरीर को नाड़ियों द्वारा पहुँचाता है। यह रुधिर समस्त शरीर को खुराक देता है और दूषित होकर नसों से हृदय को वापस आता है। जिस तरह हवा किसी पदार्थ के जलने के लिए आवश्यक है, उसी तरह हमारे जीवन के लिए भी है।

हवा इतना आवश्यक पदार्थ होने के कारण ही प्रकृति ने उसका भण्डार हमारे चारों ओर एकत्रित कर दिया है किन्तु कलियुगी सभ्यता की चिमनियों का धुआं तथा समूह में इकट्ठे होकर शहरों का जीवन इस वायु को दूषित बनाता है। इस कारण यह आवश्यक है कि प्रातःकाल आबादी से दूर जाकर कुछ समय शुद्ध वायु सेवन किया जाय। प्रातः समय की वायु में प्राणशक्ति अधिक होती है। स्वांस सदैव नाक से पूरी लेनी चाहिये और कभी झुककर छाती दबाकर न बैठना चाहिये।

प्रातःकाल नित्य शौच (टट्टी) स्नान और सन्ध्याबन्धन से निवृत्त होकर टहलते हुए आबादी से दूर जँगल में पहुँचकर इस तरह स्वाँस लेना चाहिये कि धीरे-धीरे आठ कदम तक लम्बी सांस अन्दर लो जिससे पूरे फेफड़े भर जावें, फिर आठ कदम सांस को अन्दर ही रोको, फिर आठ कदम तक धीरे २ बाहर निकालो। इस तरह जब तक थकावट और बैचेनी न मालूम हो करते रहो, और नित्य अभ्यास आठ कदम से दस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिर बारह इत्यादि बढ़ाते जाओ।

अपने मकान के आस-पास फुलवारी तथा पेड़ लगाने चाहिये और नित्य अथवा सप्ताह में कम से कम एक बार हवन करना चाहिए। हवन के धुएँ से हानिकारक कीटाणु मर जाते हैं और वायु शुद्ध तथा रोग न फैलने वाली बन जाती है।

२—वायु से दूसरा कम पदार्थ आवश्यक जल है। हमारे शरीर के तीन चौथाई पानी से ही हमारे भोजन का रस बनता है और रस का खून बनकर समस्त शरीर का चक्कर लगाता है। यदि जल न हो तो यह क्रियाएं सम्भव न होंगी, और जीवन का अन्त हो जायगा। रुधिर शरीर में चक्कर लगाने तथा मल लेने से गाढ़ा हो जाता है अतः उसे जल की आवश्यकता होती है। इसी कारण हमको बार-बार प्यास लगती है और हमको जल पीना पड़ता है।

जो जल पिया जाय वह अवश्य ही शुद्ध होना चाहिए। दूषित जल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। पानी पीने के कुएं या तालाब साफ रक्खे जाएँ, उनके पास मल मूत्र इत्यादि करना, कूड़ा करकट डालना या गाड़ना, गन्दा जल इकट्ठा करना ठीक नहीं। जो नदी वर्फीले पहाड़ों से निकलती हैं उनका जल अति उत्तम होता है। जैसे गंगा जी का जल अत्यन्त श्रेष्ठ है। गंगाजल में कुछ ऐसे तत्व मौजूद रहते हैं जो अनेक रोगों के कीटाणुओं को नष्ट कर देते हैं। वर्षा का जल सर्वोम होता है। किन्तु ऐसा जल दो-तीन दिन बाद पीना चाहिये। वर्षा का जल कुवार के महीने में लेना चाहिए। जल लेने की विधि यह है कि एक स्वच्छ सफेद कपड़ा ऊँचा बांधकर तान दो और उसके बीच में पत्थर रखदो जिससे जो जल कपड़े पर गिरे वह पत्थर के स्थान से गिरे। इस धार के नीचे चाँदी अथवा मिट्टी के बर्तन में उस जल को एकत्रित करलो। यह जल अत्यन्त हल्का, बलदायक तथा रसायन होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो जल बदबूदार हो, अथवा जिसमें कीचड़ हो उसे न पीना चाहिये। गन्दे जल को साफ करने की विधि यह है—(१) निर्मली की गिरी पानी में पीसकर गन्दे पानी में मिलादो और थोड़ी देर रखा रहने दो। सब गाद नीचे बैठ जायगी और पानी साफ हो जायगा। (२) कमल की जड़, शिवाल की जड़ या मरकत मणि पानी में डाल देने से भी पानी साफ हो जाता है। (३) घड़े में छेद करके या पौधे लगाने के गमले के छेद को रूई रखकर बन्द कर दो और तह पर दो इञ्च बालू, ४ इञ्च कोयला बिछाकर व ऊपर से पत्थर के टुकड़े डाल दो। फिर उसको पानी से भर दो उससे छनकर जो पानी आयेगा वह साफ होगा। (४) पानी सूरज की किरणों में तपाने से या उबालने से या सोना, लोहा या पत्थर आग में खूब गरम करके पानी में बुझा देने से पानी साफ हो जाता है। ऐसा करने से पानी के अन्दर की खराब हवा निकल जाती है, कीटाणु जो दिखाई नहीं देते मर जाते हैं और जल साफ तथा दोष रहित हो जाता है। (५) एक बर्तन में अंगीठी पर पानी औटाया जाता है। इस में से भाप नली में पहुँचकर दूसरे बर्तन में ठंडी होकर जमा हो जाती है। ध्यान रहे गरम जल से भाप जब नली द्वारा बाहर निकलती है तो ठंडे पानी में होकर जाती है इसी कारण वह भाप पानी की शक्ल में दूसरे बर्तन में जाकर शुद्ध जल बन जाती है।

पानी सदैव छानकर थोड़ा-थोड़ा करके घूंट-घूंट पीना चाहिए। एकदम पानी पीने से अन्न नहीं पचता। यदि कोई बीमारी फैल रही हो तो जल औटाकर ठंडा करके पीना चाहिये। भोजन के पहिले जल पीने से कमजोरी होती है। बाद में पीने से शरीर मोटा हो जाता है। भोजन के बीच-बीच में जल पीना अच्छा है किन्तु खाने को गले से नीचे उतारने के लिये नहीं। भोजन कर चुकने के पीछे पानी शीघ्र ही न पीकर घण्टे आध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घण्टे बाद पीना चाहिये। निहार मुंह जल पीना अच्छा नहीं होता। यदि बिना खाना खाए प्यास लगे तो शर्बत पीना चाहिये। सूरज निकलने से पहिले तारों की छाया में जल पीना आयु को बढ़ाने वाला होता है। रात में जागना हो अथवा मेहनत व्यायाम, मैथुन तथा स्नान करके खरबूज, तरबूज या तर फल खाकर तत्काल ही पानी न पीना चाहिये। जल पीकर शीघ्र ही पढ़ना, पढ़ाना, चलना, दौड़ना, बोझ उठाना, सवारी करना या वाद-विवाद करना अच्छा नहीं। जल पीते समय चित्त प्रसन्न होना चाहिए। भूख, शोक अथवा क्रोध की दशा में पिया हुआ जल रोग पैदा करता है।

आदमी का शरीर सात धातुओं का संयोग हैं रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। इनमें एक के बिना भी हमारा जीवन नहीं टिक सकता। इन धातुओं का पोषण रस से होता है। रस भोजन से बनता है अतः भोजन ही हमारा प्राण रक्षक व पोषक है। भोजन में मुख्यतः तीन तरह के द्रव्य रस बनाने के काम आते हैं शेष रसहीन भाग मल-मूत्र के रूप में शरीर के बाहर निकल जाता है। यह तीन द्रव्य १-प्रोटोटिड (मांस बनाने वाला भाग) २-कार्बोहाइड्रेट्स (गरमी देने वाला भाग) और ३-चर्बी (शक्ति देने वाला भाग) है।

आदर्श भोजन गाय का दूध है। शरीर को जो पदार्थ जिस मात्रा में आवश्यक हैं, गाय के दूध में ठीक मात्रा में मौजूद हैं। गाय के दूध के समान गुणकारी और पौष्टिक अन्य कोई वस्तु नहीं है। गाय का दूध बालकों का जीवनदाता, बूढ़ों को बल देने वाला है। गाय का दूध सेवन करने से दीर्घजीवी होता है। गायों में काली गाय का दूध विशेष गुणकारी होता है।

दूध हमेशा जवान गाय का पीना चाहिये, बूढ़ी गाय के दूध में ताकत नहीं होती। अन्य दूधों में भैंस, बकरी का दूध अच्छा होता है। भैंस का दूध मीठा, चिकना और ठंडा होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। बकरी का कसैला, ठंडा और हलका तथा खांसी बुखार को आराम करता है। बकरी आक, नीम आदि अनेक तरह की वनस्पति खाती है, इसलिए सब रोगों का नाश करने वाला होता है। गर्मी के रोगों तथा गरम मिजाज के लोगों को विशेष लाभदायक होता है।

गाय का दूध ताजा पीना अति श्रेष्ठ होता है। दूध दुहने के बाद ठंडा होने पर बिना गरम किये न पीना चाहिये। भैंस तथा बकरी का दूध बिना गरम किये न पीना चाहिए, धरोष्ण नहीं। दूध ताजा ही पीना ठीक है। जिसका रंग बदल गया हो, स्वाद बिगड़ गया हो वह कदापि नहीं पीना चाहिये। दूध अमृत है किन्तु बाजारू दूध साक्षात् विष है।

हलवाइयों की दुकानों पर बिकने वाला दूध महा निकम्मा और रोगों का भण्डार होता है। जैसे दूध मनुष्य शरीर का सबसे अधिक पोषण करता है उसी तरह रोग के कीटाओं को पुष्ट करता है। क्षयी आदि रोगों के कीड़े दूध में शीघ्र फैलते हैं। दूध बेचने वाले तो गाय भैंसों का आहार व स्वास्थ्य की तरफ ध्यान नहीं देते। रोगी जानवरों का दूध गन्दे बर्तनों में दुहकर जैसा पानी मिलता है मिला देते हैं। फिर हलवाई उसे खुले बर्तनों में सड़क के सहारे औटाते व ठंडा करते हैं, सड़क पर मल मूत्र तथा थूक आदि रेत में मिले होते हैं वही मोटर तांगों और राहगीरों द्वारा उड़ उड़कर दूध तथा दूसरे पदार्थों में मिल जाता है तथा मक्खी व मच्छरों का दूध व मिठाइयों में घुल जाना या मिल जाना तो नित्य की मामूली बात है। यदि किसी साधारण दुकान के आगे खड़े होकर देखें तो ज्ञात हो जायगा कि हलवाई का दूध व अन्य पदार्थ बहुत दूषित व गंदे होते हैं, वह काम में लाने योग्य नहीं होते।

दूध के समान गाय का दही भी बढ़िया होता है। मदनपाल निघण्टु में लिखा है—"सर्वेषु दधिषु श्रेष्ठं गव्यमेव गुणावहम्"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यानी सब तरह के दहियों में गाय का दही गुणदायक होता है। यह मीठा, रुचिकारक, पवित्र, अग्निदीपक, हृदय को प्रिय, पुष्टिकारक होता है। भैंस का दही चिकना, कफकारक, मीठा, भारी व रक्त विकार करने वाला है। बकरी का दही हल्का, त्रिदोषनाशक और अग्निदीपक होता है और श्वांश, खाँसी, बवासीर व क्षय रोग में हितकारी होता है। दही बिलोकर जब घी निकाल लेते हैं तो छाछ रह जाती है। छाछ त्रिदोष नाशक, बहुत हितकारी और हल्की होती है। किन्तु छाछ में जितना घी रहने दिया जाता है वह उतनी ही पुष्टिकारक व कफकारक हो जाती है। अलावा घी व मक्खन के दूध से मलाई, मावा और दूध फेन तैयार होता है। मलाई भारी, शीतल, वीर्य पैदा करने वाली, तृप्ति करने वाली, पुष्टिदायक, चिकनी, कफ और बल को बढ़ाने वाली होती है। मावा पुष्टिकारक, बल वर्द्धक, कफकारक तथा हृदय को प्रिय होता है। जिन्हें नींद न आये और आग तेज हो उनको लाभ करता है। दूध फेन गाय या बकरी के दूध को उलटने पलटने से जो झाग उठते हैं एकत्रित करने से तैयार होता है। यह झाग त्रिदोष नाशक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, अग्निदीपक, तृप्तिकारक तथा हल्के होते हैं और मन्दाग्नि, अतिसार, जीर्ण ज्वर में बहुत लाभ करते हैं। विदेशों में इसका एक और प्रयोग होता है जिसे सूमिक कहते हैं। शाम को इसे ठीक तरह औटाकर ठंडा कर एक बोतल में भर डाट लगाकर ठंडे स्थान में रख देते हैं। हमारे देश में दूध के खट्टा होने की सम्भावना है इसलिये कोरे घड़े में भरकर बोतल को घड़े में डालकर रख देना चाहिए। सुबह को उस बोतल में मिश्री या बताशे डालकर खूब हिलाना चाहिये, फिर उसे किसी वर्तन में पलट कर स्वाद से हौले २ पीना चाहिये। इस तरह तैयार किया हुआ दूध शरीर को जल्द मोटा ताजा बना देता है और स्वादिष्ट हो जाता है। दूध से निकाला हुआ क्रीम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा मक्खन रसायन, आंखों के लिए उपकारी और अग्नि, वीर्य, कान्ति, बल, तेज और लावण्य को बढ़ाने वाला होता है। आवाज साफ करता है, स्मरण शक्ति और बुद्धि के लिए बहुत हितकारी होता है और उमर बढ़ाता है तथा कुरूपता, वात, पित्त, दाह, रक्त विकार, मूर्च्छा, भ्रम और बादी का नाश करता है।

घी भी मक्खन के समान किन्तु कुछ कम गुणकारी होता है। कारण यह कि आग पर गरम होने में विटेमिन भाग में न्यूनता आ जाती है। आंखों के रोग में गाय का घी अत्यन्त गुणकारी होता है और अग्निदीपक, पुष्टिकारक, बुद्धि, ओज और सुन्दरता को बढ़ाता है। भैंस का घी मीठा, ठंडा, कफकारक भारी तथा ताकतवर होता है। बकरी का घी आंखों के लिए हितकर, बल बढ़ानेवाला, खांसी, श्वांस और क्षय रोग में लाभदायक होता है। बाजारू दूध के समान बाजारू घी भी अत्यन्त निकृष्ट होता है। बाजारू घी में मरे हुए पशुओं की चर्बी, वनास्पति घी, मूंगफली, विनौले आदि का तेल मिला हुआ रहता है। कभी कभी तो बाजारू घी इतना खराब होता है कि वह खाने योग्य नहीं रहता। चर्बी की दृष्टि से तेलों में कोई अन्तर नहीं है किन्तु घी और मक्खन में विटेमिन भाग अधिक होता है विशेषकर विटेमिन ए और डी में तेलों के अंश अत्यन्त न्यून होते हैं अथवा बिल्कुल ही नहीं होते। यहां हम विटेमिन के पाठकों को सूक्ष्म रूप से कुछ बता देना चाहते हैं। प्रोटीन, चर्बी नमक आदि के अलावा विटेमिन एक ऐसे सूक्ष्म पदार्थों को कहते हैं जिससे बीमारियां तथा मौत तक हो जाती है जैसे मशीन के पालिश किए हुए चावल खाने से बैरी बैरी हो जाती है। पहले पहल वैज्ञानिक तरीकों से एक चीज चावलों के पालिश किए हुए बुरादे में से निकाली जिसमें विशेषकर नाइट्रोजन था किन्तु बाद में उसका नाम विटेमिन रक्खा गया। इन विटेमिनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की जानकारी कितनी नूतन है यह इस बात से ज्ञात होगा कि सन् १९२८ ई० में ही एक विशेषज्ञ डाक्टर मैकेरीसन ने लिखा था कि यद्यपि यह पदार्थ जीवन के लिए आवश्यक है और हमारे शरीर का पोषक है किन्तु हम इस सूक्ष्म द्रव्य को प्रोटीन, चर्बी, स्टार्च, शक्कर, नमक, पानी आदि खाद्य द्रव्य के समान न बना सकते हैं, न देख सकते हैं, किन्तु अब ऐसी स्थिति नहीं है। ज्यूरिज केमीकल इन्स्टीट्यूट के डाक्टर करेर तथा उनके साथी वान मूलर आदि की खोजों से अब जिनमें से चार विटेमिन अलग कर ली गई हैं और उनकी जांच तथा केमीकल फार्मूले निश्चय कर लिये गये हैं। इनमें पहली विटेमिन है, जो मछली तथा पशुओं की चर्बी में घुली रहती है जो शरीर में बढ़ने तथा आँख, नाक, कान और दांतों के लिये जरूरी है। दूसरी विटेमिन है जो दिमाग के लिये जरूरी है। तीसरी खून साफ़ करने के लिए जरूरी है। चौथी पेट के लिये जरूरी है। और पांचवीं उत्पत्ति करने की ताकत से सम्बन्ध रखती है। शेष के बारे में ज्ञान इतना पूर्ण नहीं जितना उपरोक्त के बारे में है।

जिनको साग सब्जी या साफ दूध आदि नहीं मिलते उनको रतौंधी आने लगती है। यदि उन्हें कुछ दिन तक कॉडलिवर ऑयल दिया जाय तो उनको आराम हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि कॉडलिवर ऑयल में चर्बी के सिवाय कोई चीज होती है जो रतौंधी को फायदा करती है। इस पदार्थ के बिना प्राणियों की बढ़वार रुक जाती है इसी का नाम विटेमिन ए रखा गया है। यह पदार्थ कॉडलिवर आयल में कितनी कम मात्रा में होती है इसका पता इस बात से लगाया जा सकता है कि कॉडलिवर ऑयल में १०० में ९९ भाग चर्बी और शेष एक भाग में नाममात्र की विटेमिन ए की मौजूदगी होती है। इससे ज्ञात हो जायगा कि विटेमिन की कितनी कम मात्रा ही ठीक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वास्थ्य के लिये कितनी आवश्यक है। अब कुछ इस तरह की मछलियां मिल गई हैं कि जिनमें तिल्ली के तेल में कॉड के तेल की अपेक्षा दो सौ से दो हजार तक विटेमिन ए मौजूद रहता है। हैलीबट एक इसी तरह की मछली है इन मछलियों में गर्मियों में कहीं अधिक विटामिन ए होता है, हैलीवट में ही सर्दी गर्मी में वीस फीसदी का अन्तर पड़ जाता है। इसका कारण सर्दी गर्मी की खुराक का अन्तर है। कैरोटीन हरी पत्ती के साग मटर, सेम, गाजर, नारंगी आदि फलों में होता है। शरीर में एक भाग कैरोटीन से दो भाग विटामिन ए बन जाते हैं। विटामिन ए मछली का तेल, अंडा, मक्खन और गाय के दूध में है। दूध में विटेमिन ए की मिकदार गाय की खुराक पर निर्भर है। बाजारू गायों के दूध में जिनको सब्ज चारे कम मिलते हैं, विटेमिन ए वहुत कम होता है। विटेमिन ए के लिए शलजम, चुकन्दर, गाजर, सेम, बथुआ, पालक, मेथी आदि का सेवन सस्ते साधन हैं। आम, पपीता आदि पीले फलों में भी कैरोटीन काफी मात्रा में होता है। चूंकि हम लोग शाक भाजी आम तौर से पकाकर ही खाते हैं इसलिये विटेमिन सी जो आग पर पकाने में शीघ्र नष्ट हो जाता है हमको पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता। इसलिये खुन खराब होकर तरह २ की बीमारियां हो जाती हैं। इसलिये विटामिन सी प्राप्त करने के लिये टमाटर, हरा धनियाँ, मूली आदि कच्चे ही खाने चाहियें। विटामिन डी दूध, मक्खन, अंगूर, सेव, सन्तरे में होता है। जिन लोगों को यह चीज नहीं मिलती वह दूध मक्खन की बजाय तेल आदि ही सेवन करें। उनके लिये डी विटामिन प्राप्त करने का उत्तम साधन है। मनुष्य की खाल में स्थित अरगोस्टेरौल सूर्य का प्रकाश पड़ने से विटेमिन सी में परिणत हो जाता है और तेल को सूर्य के प्रकाश में रख दिया जाय तो उसमें विटामिन ए पैदा हो जाता है क्योंकि तेलों में भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्गोस्टेरौल होता है। तेलों को उथली रकाबियों या थालियों को धूप में रखना चाहिए ताकि तेल के अधिक से अधिक भाग पर प्रकाश पड़ सके। शरीर को तेल लगाकर धूप दिखाने से दोनों बातें हल हो जाती हैं और शरीर को अति उत्तम और सस्ती रीति से विटेमिन डी प्राप्त हो जाता है। धूप में तेल लगाने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है।

सरसों, मूंगफली, तिल, नारियल आदि के तेल जो खाने के काम में आते हैं, वह चर्बी की दृष्टि से तो समान हैं सब में ९८ या ९९ फीसदी चर्बी होती है किन्तु शेष भाग में थोड़ा २ अन्तर होता है। यह अन्तर लोहा, मेंगनीज, निकिल, कोवाल्ट आदि धातुओं की अत्यन्त अल्प मात्रा में मौजूद होने के कारण है जिसकी भौतिक विज्ञान भली प्रकार जांच नहीं कर पाया है। तेलों से जो बनस्पति घी बनाया जाता है वह मेदा के लिये भी बिल्कुल नष्ट हो जाता है इसलिये ऐसे घी का कदापि सेवन न करना चाहिये।

ऊपर के वक्तव्य से गरीब आदमियों को जिन्हें दूध, मक्खन, फल सब्जी आदि नसीब नहीं होते घबराना नहीं चाहिये। अव्वल तो बथुआ, मेथी, पालक आदि सब्जी घरों में भी बोई जा सकती हैं, तथा प्रत्येक किसान के खेतों में भी मुफ्त बतौर मिल सकती हैं इसके अलवा नीम जैसे साधारण वृक्ष की पत्तियां बहुत से सागों से खुराक तथा विटेमिन की दृष्टि से अधिक मूल्यवान होती हैं और वह बिना किसी मूल्य के मिल सकती हैं। हम यहां की जांच के अनुसार नीम की पत्तियों में स्थित पदार्थों का नकशा देते हैं—

पदार्थ	बड़ी और सख्त पत्तियों में प्रतिशत	कोमल नवीन पत्तियों में प्रतिशत
पानी	५९·४४ ग्राम	५९·५६ ग्राम
प्रोटीन	७०·९ ,,	११·५६ ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदार्थ	बड़ी और सख्त पत्तियों में प्रतिशत	कोमल नवीन पत्तियों में प्रतिशत
चर्बी	१·०४ ग्राम	२·६७ ग्राम
क्षार	३·३६ ,,	२·६१ ,,
कार्बो हाइड्रेट	२६·०७ ,,	२३·५० ,,
चूना	१.०६ ,,	०·१२७ ,,
फास्फोरस	०·०५६ ,,	०·१८६ ,,
लोहा	०·०३६ ,,	०·०३० ,,
क्षति	१५४ कैलोरी	१६७ कैलोरी
कैरोटीन	०·४५६ मिली ग्राम प्रति ग्राम में	०·४५६ मिली ग्राम प्रति ग्राम में

ऊपर के नक्शे से ज्ञात होगा कि जिन्हें दूध सब्जी फल आदि न मिलें वे नीम की पत्ती जैसे मुफ्त प्राप्त होने वाले पदार्थों का सेवन कर सकते हैं और अपने भोजन की कमी ऐसे मुफ्त के पदार्थों से थोड़ी मात्रा के सेवन से ही पूरी कर सकते हैं। इसी प्रकार इमली, नींबू, नरंगी की पत्तियां भी गुणकारी होती हैं तथा नींबू, नरंगी में विटेमिन सी की विशेषता होती है।

गरीब मनुष्यों के लिये नीम की पत्ती, मूंगफली की खली आदि के अलावा एक और अत्यन्त उत्तम खाद्य पदार्थ है जिसका प्रचार हमारे देश की गरीबी और आवश्यक खुराक की समस्या को आसानी से हल कर सकता है, वह पदार्थ सोयाबीन है। खुराक की दृष्टि से यह गोश्त, अण्डा, गेहूँ, चना, दाल, सब्जी आदि सबसे बढ़कर है। इसमें चालीस फीसदी प्रोटीन, २०·३ फीसदी चर्बी होती है जबकि अण्डे में १४८ फीसदी प्रोटीन और १०५ फीसदी चर्बी होती है। इसमें प्रोटीन चना उर्द से दूनी, गेहूँ से तिगुनी और चावल से पांच

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुनी अधिक होती है और क्वालिटी इनसे बढ़कर गाय के दूध, गोश्त, अंडे आदि के समान होती है क्योंकि इसमें समस्त आवश्यक होती है विशेषकर ग्लाईसीन ट्राईप्टोफेन और लाईसीन होती है। सोयाबीन के तेल में लिसीथिन और विटेमिन ए तथा डी मक्खन के समान होते हैं और इसकी लिसीथिन अंडे की जर्दी के समान होती है। असल में यह सब अनाजों से बढ़कर इसलिये है कि इसमें तीनों विटेमिन ए, बी तथा डी जो स्वास्थ्य के लिये आवश्यक हैं काफी मात्रा में मौजूद हैं। इसमें फासफेट्स और कैलशियम होने की वजह से कमजोर आदमी के लिये विशेष गुणकारी है। स्टार्च इसमें कम होता है इससे यह डाईबिटीज के मरीजों को अत्यन्त उपकारी है। अमेरिका सरकार की जांच के अनुसार सोयाबीन में निम्न द्रव्य होते हैं—

एश	४·८
चर्बी	१८·५
पैन्टोसैन	५·०
इनवर्ट शूगर तथा रेफीनोज	१·२
पानी	८·५
मोम	८·२
गौंद	३·२
प्रोटीन	३९·५
शकर	३·०
सेलूलोज	३·०
गेलेक्टन	५·०

सोयाबीन का दाना बड़ी मटर की तरह पीला, हरा, काला, चितकबरा तथा अन्य अनेक रंगों का होता है, किन्तु इसमें पीले रंग का उत्तम होता है। इसका पौधा एक या सवा फुट ऊंचा होता है। एक फली में तीन दाने होते हैं। यह हर तरह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की भूमि में उग आता है, किन्तु जो भूमि बन के लिए उपयोगी है वही इसके लिये है। इसके बोने से जमीन मजबूत हो जाती है क्योंकि इसका पौधा वायु से खुराक लेता है, जमीन से नहीं। यह ऐसी जगह होता है जहां मौसम सम हो और वर्षा ४० इञ्च से कम। ऐसी भूमि में जहां पानी भरता हो इसे न बोना चाहिए। इसके बोने का समय पहली बारिश के बाद ठीक है। यद्यपि यह किसी भी समय उग आता है। खुश्की के समय सप्ताह में एक बार पानी की आवश्यकता है। इसका बीज डेढ़ या दो इंच गहरा दो या तीन फीट की दूरी पर बोया जाता है। बीज एक दूसरे से ३, ४ इँच रहना चाहिये। एक एकड़ में १० या १५ सेर बीज बोने की आवश्यकता है। यह चार माह में पक जाता है। जब पत्तियां पीली पड़कर गिरें तो फली तोड़ लो वरना बीज निकल पड़ेंगे।

सोयाबीन के दाने मटर की तरह भूनकर या साग बनाकर खाते हैं। इसको सुखाकर तेल निकलवाकर खली या बिना तेल निकाले बीजों को पिसवाकर आटा तैयार होता है। यह गेहूँ के पांच भाग आटे में एक भाग मिलाकर रोटी बनाकर खाया जाता है। भीगे बीजों को दाल की पिट्ठी की तरह पीसकर पानी के साथ कपड़े में छान और औटाकर इसका दूध तैयार होता है जो दूध के बदले प्रयोग में लाया जा सकता है। जहां दूध न हो वहां बच्चों के लिये सोयाबीन का दूध ही एकमात्र दूध का बदल और आवश्यक खुराक है। फ्रांस और इङ्गलैण्ड में सोयाबीन का दूध अत्यधिक प्रयोग में लाया जाता है। अमेरिका के खाद्य पदार्थ बेचने वाले कारखानों में सोयाबीन के दूध का पाउडर भी तैयार करते हैं। सोयाबीन के दूध में सब पदार्थ गाय के दूध के समान होते हैं, चर्बी कुछ कम होती है, कैलशियम गाय के दूध का छठा भाग होता है और लैक्टोज (दूध की शकर) नहीं होती। सोयाबीन काफी या चाय की तरह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उबालकर भी पिया जाता है इसके अतिरिक्त इससे चने के समान सैंकड़ों किस्म के खाने भी तैयार किये जा सकते हैं। सोयाबीन के अंकुर में विटेमिनों की अधिकता रहती है। यह अंकुर कच्चे या सब्जी की भांति पकाकर सेवन किये जा सकते हैं। अंकुर निकालने के लिए गमले में या किसी बर्तन में जिसमें पानी निकलने के लिए छेद हों, दाने रखकर ऊपर से एक तह मिट्टी से ढक दिए जाते हैं और दिन में दो बार पानी से तर कर दिए जाते हैं। बर्तन बड़ा होना चाहिये क्योंकि दाने फूल कर पांच-छः गुनी जगह घेरते हैं। यह बर्तन गरम स्थान में रखना चाहिए इस प्रकार अंकुर एक सप्ताह में निकल आते हैं और दो सप्ताह में काफी बड़े २ हो जाते हैं।

बेकरी का व्यापार

बटर बिस्कुट, अण्डों वाले बिस्कुट, डबल रोटी, नान खताई, ट्राफी बनाना, चाकलेट बनाना, मिल्करोज बनाना आदि बहुत सी चीजें बनाना इसमें बताया गया है। बाजार की गन्दी चीजें न मंगाकर घर में बनी खाइए। कीमत ३) डाक० अलग।

अचार चटनी मुरब्बा बनाना

इस किताब में अचार, चटनी, मुरब्बे इत्यादि बनाने का विस्तार से वर्णन किया गया है। आम, नीबू, मिर्च, शलजम आदि का अचार कई तरह से डालने का ढंग, आम, आंवला, सेव, हरड़, बेलगिरी, गुलकन्द आदि सभी प्रकार के मुरब्बे बनाना और आम, नाशपाती, गोभी आदि अनेक प्रकार की चटनी बनाना इसमें सरलता से लिखा है। कीमत ३) रुपये डाक व्यय अलग।

पता—गर्ग एण्ड को०, खारी बावली, दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किस २ खाद्य में क्या २ चीज कितनी-कितनी मात्रा में होती है, निम्नलिखित चार्ट से मालूम हो सकती है :—

नाम पदार्थ	प्रोटीन प्रतिशत	चर्बी फीसदी	कुल कार्बोहाईड्रेड फीसदी	कैलौरी फी पौंड
मक्खन	१००	८५०		३६०५
दूध	३·४	००३	५·१	१७०
हाथीचक	१८	०·२	३३	१०५
सेम सूखी	२·२५	१·८	५९·६	१६०५
करमकल्ला	१·६	०·३	५·६	१४५
गाजर	१·१	०·४	९·३	२१०
गोभी	१·८	०·५	४·७	१४०
खीरा	०·८	०·२	३·१	८०
लीक(वि० प्याज)	१·२	०·५	५·८	१५०
काहू	१·२	०·३	२·९	९९
मटर हरी	७·०	०·१	२०·९	४४०
मूली	१·३	०·१	५·८	१३५
पालक	२·१	०·३	३·२	११०
टमाटर	०·९	०·४	३·९	१०५
सेव ताजा	०·४	०·५	१४·२	२९०
प्याज ताजा	१·६	०·३	९·९	२२५
आलू उबलाहुआ	२·५	०·१	२०·९	४४०
अंगूर	१·३	१·६	१९·२	४५०
नींबू	१·०	०·७	८·५	२०५
खरबूजा	०·४	०·२	६·७	१४०
नारंगी	०·८	०·२	११·६	२४०
नाशपाती	०·६	०·५	१४·१	२९५
बेर	१·०	—	२०·१	३९५
रोटी गेहूँ की	९·२	१·३	५५·१	१२१५

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

निम्नांकित विटामिनों का नक्शा है जिसमें × का मतलब है कि विटामिन [illegible] मौजूद हैं। ×× का मतलब है कि विटामिन काफी मात्रा में हैं और ××× का मतलब है कि विटामिन अधिक मात्रा में है और — से मतलब है कि विटामिन बिल्कुल नहीं है।

	A	B	B1	B2	C	D	E
क्रीम	× to ××	××	××	—	— to ×	×	—
जैतून का तेल	— to ×	—	—	—	—	— to ×	×
जौ साबुत	×	×	××	—	—	—	—
मक्का दूधर	—	—	×××	×	—	—	—
मक्का पीली	— to ×	×××	×	—	—	—	×××
चावल पालिश किया हुआ	—	—	—	—	—	—	to ×
चावल साबुत	×	—	××	×	—	—	—
गेहूँ कच्चा (दूधर)	××	×××	××	—	—	—	×××
मैदा गेहूँ बिना	—	—	—	—	—	—	×××
आटा गेहूँ छना	— to ×	—	×	×	—	—	—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	A	B	B1	B2	C	D	E
सेंम हरी	—	—	—	—	× to × ×	—	—
मटर सूखी	×	—	xx	xx	×	—	—
मटर हरी	xx	xx	—	—	xxx	—	—
बादाम	×	×	×	—	—	—	—
हाथीचक	xx	xx	—	—	—	—	—
चुकन्दर	—ot×	×	—	—	—	—	—
करमकल्ला पकाया हुआ		×	—	—	×	—	—
गाजर छोटी	×	—	xx	×	xx	—	—
गोभी	×	×	—	—	xxx	—	—
काहू हरा	xx	—	xx	×	xxx	—	xxx
प्याज	ot×	—	×	×	× toxx	—	—
आलू उबला हुआ	×	—	—	—	× toxx	—	—
मूली	— to ×	×	—	—	xx	—	—
पालक पकाया हुआ	xx	—	×	xx	× toxx	—	—
शलजम	to ×	—	×	xx	× to xx	—	—
सेव	×	×	×	×	xtoxx	—	—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	A	B	B1	B2	C	D	E
खजूर	×	—	×	—	—	—	—
अंजीर	×	—	—	—	—	—	—
अंगूर	×	×	—	—	×××	—	—
नींबू	×	×	—	—	×××	—	—
रस नींबू	×	×	—	—	×××	—	—
सन्तरा	×	×	—	—	×××	—	—
नाशपाती	—	×	—	—	×	—	—
केला	× to ××	—	×	×	××	Low	××
टमाटर	××	××	—	×	×××	—	—
गाय का ताजा दूध	×	—	×	××	×	—to×	—
	Varies	—	×	—	—	Varies	—
नारियल	×	—	—	—	—	× to ××	—
शहद	—	—	—	—	Vorylow	—	—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) शरीर को पुष्ट तथा स्वस्थ बनाने को व्यायाम परम आवश्यक है। प्रकृति ने हमारे शरीर की रचना ऐसी की है कि हम अपने लिए खुद काम करें और हाथ पैर की मेहनत कर रोटी खाँय, किन्तु ऐसा नहीं होता। हम जोंक के समान दूसरों की पैदा की हुई सामग्री को अपने हथकण्डों से छीन लेते हैं। प्रकृति के रोटी के लिए हाथ पैर हिलाने के नियम का उलंघन होने से हम अस्वस्थ हो जाते हैं इसीलिये व्यायाम की आवश्यकता है। व्यायाम ऐसा होना चाहिये कि केवल हाथ पांव की कसरत न हो भीतरी अवयवों पर भी जोर पड़े और सबकी समान कसरत हो। किसी एक अङ्ग की कसरत करने और शेष अङ्ग का ध्यान न देने से शरीर एक ऐसी जंजीर के समान हो जाता है जिसकी कुछ कड़ी बहुत मोटी व मजबूत, बाकी अत्यन्त पतली और कमजोर। ऐसी जंजीर झटका लगते ही टूट जाती है। बहुत से पहलवानों की अस्वस्थ दशा तथा समय से पहिले मृत्यु का यही कारण है। स्वास्थ्य के लिए सूर्य नमस्कार व्यायाम का ठीक ढंग है। हम यहां कुछ साधारण से तरीके बतलाते हैं जो आसानी तथा थोड़े समय में किए जा सकें।

[१] सीधे खड़े हो जाओ एड़ी मिली रहे पञ्जों में फासला (४५ ऐंगिल का) बांह लटकी रहें। मुट्ठी बांधो और धीरे-धीरे स्वांस भरना शुरू करो। जैसे २ स्वांस भरो वैसे २ एड़ी और बांह ऊपर उठाते जाओ सांस नाक से ही भरो। यहां तक कि पन्जे ही जमीन पर रहें और एड़ी पूरी ऊँचाई तक उठ जावें। बाहें कन्धों के बराबर बदन की सीध में जावें। फिर मुंह से सांस निकालो घुटनों को झुकाओ और बांह गिराओ। चूतड़ एड़ियों पर टिक जांय, बांह गिर जांय और सांस खाली हो जाय। फिर नाक से सांस भरना आरम्भ करो, बाहें उठाओ, घुटने सीधे करो और पञ्जों पर खड़े होने को दशा में आजाओ। यह स्वांस की कसरत शुरू में बाद में और बीच में सांस ठीक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने के लिये कई बार करनी चाहिए।

[२] सीधे खड़े हो पैरों के बीच एक फुट का फासला और बांह कन्धों के ऊपर सीधी दोनों तरफ हों, अब शरीर को झुकाओ फिर आगे झुकाकर हाथ से पैर छुओ फिर ऊपर उठाकर पीछे झुको, इसी तरह दस बार करो। आगे की ओर झुकते समय सांस बाहर निकालो। ऊपर उठते तथा पीछे झुकते समय अन्दर लो फिर इसी पोजीशन से कमर पर से शरीर को चारों ओर झुकाते हुए चक्कर लगाओ। यदि बांह कानों से न मिलें तो दोनों हाथों की उँगली एक दूसरे से फंसा लो। इस तरह एक दायरा बनादे। पीछे आधे चक्कर में स्वांस बाहर करो यह ८ सीधी तरफ से और ८ बाईं तरफ से चक्कर शुरू करके करो। शरीर कमर से ही झुके, टांगें सीधी रहें।

[३] खड़े की हालत में पैरों के बीच फासला बांहों को कंधों की सीध में फैलाओ और कुहनी से झुकाकर हाथों को छाती के आगे लाओ, हथेली नीचे की ओर उँगली सीधी हों अब हाथों को जितने पीछे जा सकें फेंको और फौरन सीने के आगे ले जाओ। इस तरह १२ बार करो, फिर जिस तरह शुरू में बांह बाहर को कन्धों की सीध में फैलाकर खड़े थे उसी तरह बदन को दाईं ओर घुमाकर दाईं टांग पर झुकाओ, छाती और मुख जमीन की तरफ रहें। अब एकदम हाथों और बदन को इस तरह घुमाओ कि शरीर दाईं टांग पर ही झुका रहे किंतु छाती और मुख आसमान की ओर हो जावें। अब शरीर को उठा कर बाईं टांग पर झुकाओ और पहले की तरह घुमादो, इस तरह १२ बार करो। झुकने में श्वांस बाहर और शरीर घुमाने में अन्दर लो।

[४] सीधे चित लेट जाओ, बांह सिर के ऊपर सीधी फैला दो। पैर के पंजे दीवार से या किसी डेस्क के नीचे लगाओ। अब शरीर को ऊपर उठाकर बैठ जाओ, फिर लेटो और शरीर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को उठाकर बैठे हो जाओ। बांह सीधी रहें। उठते समय सांस बाहर और लेटते समय अन्दर लो। इस तरह बारह बार करके फिर लेट जाओ और दोनों टांगें सीधी उठाकर दोनों टांगों से इस तरह चक्कर लगाओ कि दोनों पैर दो गोल दायरे बनायें। इस तरह पहले एक तरफ से फिर दूसरी तरफ से आठ २ चक्कर लगाओ और चक्रासन, पश्चिमोत्तासन, ऊर्ध्व सर्वांगासन, सर्वांगासन, कर्ण पीड़नासन तथा उष्ट्रासन, बनाते हुये खड़े होकर श्वांस ठीक करने की कसरत करो।

[५] खड़े होकर हाथों को पैरों के दोनों तरफ जमीन पर हथेली जमाकर रखो टांगे न झुकें, फिर पैरों को पीछे फेंक दो पैर मिले रहें, बदन को सीधा रखो, कुहनी बाहर की तरफ झुकाओ, साँस अन्दर लो फिर कुहनी सीधी कर इसे निकालो। इस तरह १२ दण्ड करो, बदन सिर से एड़ी तक एकसा रहे। फिर शलभासन, मयूरासन, सुप्तउष्ट्रासन, हस्तपादासन, करते हुए खड़े हो जाओ और कसरत कर नहा डालो अथवा गीली या सूखी तौलिया से शरीर को रगड़कर पसीना साफ कर दो। हमारी समझ में यह बात अति उपयोगी है। व्यायाम करने में शरीर का मल पसीने के रूप में बाहर निकलता है यदि यह साफ न कर दिया जाय तो फिर जज्ब हो जाता है। कसरत के बाद नहाकर सूखी तौलिया से शरीर पोंछो। गरम कपड़े पहिन कर तेज टहलो ताकि शरीर गर्म रहे, ऐसा न करने से हानि हो सकती है।

आसन सात्विक व्यायाम है। आसनों में किसी अंग विशेष पर तनाव पड़ता है जिससे नाड़ियां खिंच कर रबड़ की नली के समान सिकुड़ती हैं और ढीला छोड़ने से रक्त प्रवाह होता है। इससे नाड़ियों में जो मैल जमा हो जाता है और रक्त के प्रवाह में रुकावट डालकर बुढ़ापा ला देता है वह साफ हो जाता है। आसन इस तरह शरीर को शुद्ध कर ताजा बनाते हैं और बुढ़ापा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं आने देते।

(५) ब्रह्मचर्य बिना तन्दुरुस्ती और आरोग्यता नहीं रह सकती। यहां ब्रह्मचर्य से तात्पर्य वीर्य रक्षा है। वीर्य ही शरीर का राजा है, जैसे राजा के कमजोर होते ही दुश्मन चढ़ाई करते हैं उसी तरह वीर्य शक्ति क्षीण होने से अनेकों रोग आ घेरते हैं। इसलिए इसका गंवाना आत्मघात के बराबर है। अपना बलिदान केवल संतान उत्पन्न करने के हेतु से ही किया जा सकता है। इन्द्रिय प्रसन्नता के लिये वीर्य नाश करना अत्यन्त मूर्खता है। स्वस्त्री प्रसंग के सिवाय अन्य किसी भी तरह वीर्य पात करना महा हानिकारक है। विलासी पुरुषों को भी सन्यासिनी, गुरू की स्त्री, लावारिस, अपने गोत्र की, हीनांगी, बूढ़ी, गर्भिणी, रोगिणी, मलीना, दुर्बला, रजस्वला और बांझ स्त्री से मैथुन न करना चाहिये।

१—खाना खाने के बाद, भूख में, प्यास में, पाखाने पेशाब की हाजत में अथवा किसी रोग या दुःख या रंज होने की दशा में मैथुन न करना चाहिये। चौदह वर्ष से छोटी स्त्री, व १८ वर्ष से कम उम्र बालक को मैथुन करना घातक है।

मैथुन स्त्री के मासिक धर्म शुरू होने से ४ दिन छोड़ केवल १५ दिन में एक बार करना उचित है और जब गर्भ रह जाय तो बन्द कर देना चाहिये। सम्भोग का ठीक समय वह है जबकि पेट हल्का हो जाय, दिल में इच्छा हो, तबियत साफ हो, भूख, थकान, खुमारी, पीड़ा, सुस्ती वा रंज न हो। स्त्री प्रसंग के बाद शर्बत या जल न पीना चाहिए। गाय या भैंस का मीठा दूध हितकर होता है। शीघ्र इन्द्री को धोना या पोंछना भी ठीक नहीं, कारण यह है कि सम्भोग के समय स्त्री के अंग से ऐसा द्रव निकलता है जो इन्द्री में जज्ब होकर सम्भोग से हुई कमी पूरी करता है। इसलिये स्वस्थ और नवीन स्त्री से सम्भोग होने से कम की बजाय शक्ति बढ़ती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२—अधिक स्त्री-प्रसंग से हृदय में जलन, अवयवों में सुस्ती मालूम होती है, सांस की दशा बदल जाती है, वीर्य स्वभाव से पीछे निकलता है। ऐसी दशा में यह बिल्कुल त्याग देना चाहिये। सन्तान निग्रह के लिये नवीन ईजादें रबर की टोपी, थैली तथा औषधियों को महा हानिकर और घृणित समझना चाहिए। सन्तान निग्रह ब्रह्मचर्य से उचित है।

३—सम्भोग से औरत को खुश करने को तथा बस में रखने को औरत का काम चैतन्य किये बिना सम्भोग न करना चाहिए। डाक्टर मेरी स्टोप्स ने बड़े अनुभव के बाद एक चार्ट तैयार किया है जिससे ज्ञाता होता है कि औरत को हर रोज कामेच्छा नहीं रहती, बल्कि घटती बढ़ती रहती है और तीन चार दिन में एक बार कम व अधिक होती है। जिन दिनों उसकी इच्छा कमी पर हो उन दिनों समागम न होने तथा जब अधिकता पर हो उन दिनों समागम न होने से न तो सन्तान ही अच्छी उत्पन्न होगी और न औरत ही खुश रहेगी। अतः यह आवश्यक है कि या तो समागम उन दिनों किया जाय जब औरत की इच्छा अधिकता पर हो अथवा उसके काम का निवास स्थान का ज्ञान प्राप्त कर कामशक्ति को उत्तेजित कर लेना चाहिए। कोकशास्त्र के अनुसार विशेष तिथियों में कामदेव स्त्री के विशेष अङ्गों में रहता है। जिस दिन जिस अङ्ग में कामदेव का निवास हो उस दिन औरत के उसी अङ्ग को मलना छूना व चुम्बन करना चाहिये। उस अङ्ग को छेड़ने से उसके नेत्र लाल हो जाते हैं सांस तेज चलता है और वह सिसकियां भरने लगती है तथा थोड़ी ही देर में लज्जा छोड़ देती है तभी सम्भोग का समय है। ओठ, माथा, गाल, आंख, ठोड़ी और माल इन स्थानों का चुम्बन करना चाहिये। पीठ, जांघ, कंठ, कमर, पेट, बगल, नाभि गरदन तथा योनि सहलाना मलना और हलके २ दबाना चाहिये। स्त्री के कुचों की घुंडियों को अंगूठे और पास की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उँगली से हल्के २ मलना चाहिये जोर से नहीं, अथवा हथेली या छाती से धीरे २ मलना चाहिये तो वह कामांध हो जाती है।

काम निवास की तिथियाँ

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष	काम निवास
१	१५	शीश व मस्तक
२	१४	नेत्र
३	१३	होंठ के नीचे
४	१२	गाल
५	११	कण्ठ
६	१०	बगल
७	९	कुच या स्तन
८	८	छाती
९	७	नाभि
१०	६	कमर
११	५	गुप्त अंग
१२	४	जांघ
१३	३	पिंडली
१४	२	पैर के तलवों में
३०	१	बायें पैर की उँगली के तले

इस नक्शे में जिस दिन से औरत रजस्वला हो उस दिन को कृष्ण पक्ष की पड़वा मान लेना चाहिये।

४—सम्भोग के समय शरीर और मन की जैसी हालत होती है उसका असर सन्तान पर अधिकतर पड़ता है। माता-पिता यदि उस समय सबल और प्रसन्न दशा में होते हैं तो सन्तान उनसे अधिक सुन्दर होती है, किन्तु यदि अस्वस्थ, खेदयुक्त, पीड़ित या दुखित अवस्था में सम्भोग हो तो सन्तान माता-पिता की अपेक्षा बदशक्ल और भद्दी होगी। यदि बच्चे का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर सुडौल और सुन्दर बनाना है तो उस समय आपके शरीर की ठीक दशा होनी चाहिए। अन्यथा किसी भी अंग के अंश भाग की वीर्य में कमी होने पर अंग भंग सन्तान पैदा होगी।

५—जिस प्रकार स्वस्थ, अस्वस्थ, रूपवान या कुरूप सन्तान पैदा करना अपने हाथ में है, उसी प्रकार अपनी इच्छानुसार सन्तान नर-मादा भी बनाई जा सकती है। इस सम्बन्ध में कुछ डाक्टर यह मानते हैं कि आदमी के दाहिने अण्डकोष से जो वीर्य-कण निकलते हैं वह नर-सन्तान और जो बायें से निकलते हैं वह मादा सन्तान उत्पन्न करते हैं। किन्तु अनुभव से ज्ञात हुआ है कि एक अण्डकोष वाले पुरुष के लड़के लड़की दोनों हो जाते हैं तब कुछ का विचार यह हुआ कि सन्तान का नर या मादा होना वीर्य कणों से सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु औरत के रज कण पर निर्भर है। इस विचार की पुष्टि एक जर्मन डाक्टर ने की है। उसे एक ऐसी औरत मिली जिसके नौ लड़के पैदा हुए थे और लड़की कोई नहीं हुई थी। डाक्टरों ने उसकी मृत्यु के बाद जो आखरी बच्चा पैदा होने में मर गई थी उसके शरीर को चीरा तो देखा कि उसकी सीधी ओवरी पुष्ट और पूर्ण था, डाक्टर ट्राल ने कुछ नर खरगोशों के बायें अण्डकोष निकाल दिये और उन्हें मादा खरगोशों के साथ बन्द कर दिया इनके हर पांच छै हफ्ते में बच्चे पैदा होते और सबही नर होते थे जबसे यह मत होगया कि पुरुष के सीधे अण्डकोष से जो वीर्य बनता है उससे यदि औरत को सीधी ओवरी के रजकण का संयोग हो तो लड़का और बाईं से बाईं का संयोग हो तो लड़की पैदा होती है पुरुष के सीधे अण्डकोष के वीर्यकण औरत के बांये के रज कण को या तो गर्भित ही नहीं करते, यदि ऐसा हो जाए तो सन्तान हिजड़ी होती है इस मत के अनुसार बहुत से तजुर्बे जानवरों पर किये गये और ठीक बैठे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः इस मत के अनुसार यदि पुत्र उत्पन्न करना हो तो पुरुष को अपना वीर्य अण्डकोष रेशम के डोरे से बांध देना चाहिये। जिससे बाएँ अण्डकोष से वीर्य बहने में रुकावट हो जावे। स्त्री को सम्भोग के बाद फौरन सीधे करवट से लेट जाना चाहिये। आयुर्वेदिक ग्रन्थ में तथा स्त्री में यह विचार पाया जाता है कि यदि स्त्री के रजस्वला होने के दिन से पूरे दिनों में सहवास हो तो लड़का होता है। अनुभव से पता लगा है कि औरत की रज ऊने दिनों में अधिक गिरती है- किन्तु पूरे में कम। इसी से स्त्री को सहवास से पहले व्रत कराते हैं।

यदि पुरुष स्त्री से बड़ा हो और स्त्री जोशीली, कामी और मेहनती हो तो लड़का होता है। यदि पुरुष छोटा हो या स्त्री धार्मिक हो जो सम्भोग को पाप समझे तो लड़की होती है।

गर्भ पर चन्द्रमा का भी असर होता है। कृष्ण पक्ष में गर्भ रहने से लड़का और शुक्ल पक्ष में गर्भ रहने से लड़की होती है। योगी इच्छा-शक्ति द्वारा लड़की या लड़का पैदा कर सकते हैं। यदि सम्भोग के समय मनुष्य का दायाँ और औरत का बायाँ स्वर चलता हो तो लड़का होगा। स्वर का इच्छानुसार बदलना आगे बताया जायगा।

औषधि सेवन से भी सन्तान इच्छानुसार पैदा की जा सकती है। लक्ष्मण बूटी जो सर्दियों में पहाड़ों पर होती है यदि औरत गर्भ रहने के तीन माह तक नाक से हुलास की तरह सूंघे तो लड़का होगा। इस बूटी की जड़ को दूध में पीसकर पीने से लड़का होता है। सफेद कटेली की जड़ को पीसकर औरत के दाहिने नथने में डालने से लड़का और बांये में डालने से लड़की होती है। बड़ का दूध दाहिने नथने में डालने से लड़का होता है। बड़ की ३ या ४ कोमल पत्तियां दूध में पीसकर मासिक धर्म बन्द होने के बाद ३ माह तक रोज पीने से अवश्य लड़का होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६—तन्दुरुस्ती में विकार को रोग कहते हैं। रोग के बारे में अनेकों विचार हैं और उन्हीं के अनुसार इलाज या निवारण विधि है। अपनी प्रकृति के अनुकूल आहार-विहार न होने से शरीर में वात पित्त कफ में विकार पैदा हो जाते हैं और आहार विहार व औषधि से रोग शान्त हो जाते हैं।

डा० शुसलर शरीर में मौजूद बारह नमकों में अपनी उचित मात्रा से कमी-वेशी आने को रोग कहते हैं और उनके बायकैमिक इलाज में उन्हीं बारह नमकों को खिलाकर अथवा ऊपर लगाकर हर रोग को आराम करते हैं।

एलोपैथिक इलाज का कोई उसूल नहीं। किसी रोग को कीटाणुओं से हुआ मानते हैं और जहरीले पदार्थ खिलाकर या शरीर में सुई से पहुँचाकर कीटाणुओं को मारते हैं। किसी रोग में अटकल से निश्चित हुई दवा देते हैं। ऐसी दवायें लाभ के बदले हानि भी कर देती हैं। हमारी समझ में चीर-फाड़ के सिवाय यह इलाज हानिकारक है।

होमियोपैथी वाले कहते हैं कि जहर को जहर मारता है जो चीज साधारण दशा में जिस रोग को शरीर में पैदा कर सकती है वह ही अत्यन्त अल्प मात्रा में देने से उस रोग को दूर भी कर देती है। ऐसी अल्प मात्रा में औषधि (अथवा रोग पैदा करने वाला जहर) शरीर में पहुँचने से शरीर में स्थित रोग दूर करने की शक्ति जिसके शान्त रहने से रोग हो गया था, चैतन्य हो जाती है और रोग को शरीर से निकाल देती है। इस तरह के इलाज में खूबी यह है कि दवाई की मात्रा कम रहती है जिससे हानि नहीं होती।

कोमोपैथी में तरह २ के रंगों की बोतलों में जल या तेल भरकर सूर्य की धूप दी जाती है और पिलाकर या मालिश कर इलाज होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डाक्टर लुईकुने की हाईड्रोपैथिक का दुनियां में खूब प्रचार हुआ है। उनका मत है कि रोग मूल में एक ही चीज है उसके रूप भिन्न-भिन्न भले ही हों। अतः उनका इलाज भी एक है। अनेकों रोग मानकर तरह २ के इलाज करना जड़ का ध्यान न रख पत्तों को सींचने के समान है। इसके अनुसार रोग शत्रु नहीं जिसे दवा रूपी गोले से भगाया जाय। वह एक मित्र के समान है जो शरीर की सफाई करके उसे साफ और मलरहित बनाता है। अतः एक दवा से रोग को दवाना प्रकृति के काम में बाधा डालना है। इस तरह रोग कुछ समय दबकर फिर उठ खड़ा होता है या किसी और रूप में फूट पड़ता है।

हम सभ्यता के नाम पर प्रकृति के विरुद्ध पदार्थों को तरह २ से दूषित कर सेवन करते हैं, दूसरे हम यह नहीं जानते कि हमें क्या २ वस्तु किस मात्रा में चाहिये। हमारे भोजन में अनेक पदार्थ ऐसे हैं जो शरीर के लिये अनावश्यक हैं। प्रकृति उनको मल-मूत्र, नाक, थूक, पसीना आदि के रूप में बाहर निकालती है किन्तु फिर भी कुछ बाह्य पदार्थ जो हमारे शरीर के लिये अनावश्यक पदार्थ होने के कारण जहर होता है शरीर में बाकी रह जाता है जो रुधिर के साथ शरीर के भिन्न स्थानों में फैल जाता है और सड़कर जिस जगह को कमजोर पाता है फूट पड़ता है। जगह या रूप के भेद से उसके अनेक नाम रखकर डाक्टर डरा भले ही दें किन्तु रोग एक ही चीज है और वह है शरीर में बाह्य पदार्थ या कूड़ा एकत्रित होने के कारण प्रकृति की उसे निकालने की चेष्टा।

अतः दवा लेकर कूड़े को शरीर में ही दबाने की कोशिश करना प्रकृति के काम में बाधा डालना बुद्धिमानी नहीं, भूल है। इसी से जो डाक्टर की शरण लेता है जीवनपर्यन्त रोगी बना रहता है। रोग बार २ नये रूप से मल निकालने की कोशिश करता है और वह शीशी पर शीशी चढ़ाकर उसे दबाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दवा खुद एक अनावश्यक पदार्थ है जिसे प्रकृति को शरीर से निकालने के लिए और यत्न करना पड़ता है। इस तरह शरीर पर इतना बोझ पड़ता है कि उसकी मल निकालने की शक्ति क्षीण हो जाती है। रोगी समझता है कि वह दवा से अच्छा हो गया किन्तु उसने अपनी कब्र अपने हाथ तैयार कर ली है, जिसे प्राप्त कर वह सदैव को रोगमुक्त हो जाता है। डा० कुने के यह सिद्धान्त बिल्कुल ठीक हैं आयुर्वेद से मिलते हैं। उन्होंने पानी और भाप का इलाज निकाला है जिसे हाइड्रोपैथी कहते हैं।

इस चिकित्सा में रोगी को दवा न देकर प्रकृति के सफाई के काम में पूरी २ सहायता दी जाती है। मल पहले पेड़ू के इर्द-गिर्द जमा होता है और वहीं से शरीर में फैलता है। अतः मल निकालने के लिये भी यही जगह ठीक है। एक टब में ऐसा बैठा जाता है कि पेट और चूतड़ पानी में रहें, शेष शरीर पानी के बाहर रहे, उस साफ शीतल जल में पेड़ू को खद्दर के तौलिया से दस पन्द्रह मिनट तक हल्के २ रगड़ते हैं फिर गरम कपड़े पहन कर अथवा टहल कर शरीर को गरम करते हैं जिससे शरीर की शक्ति बनी रहे, प्रकृति की सहायता के लिये खाना पीना हल्का तथा प्रकृति के अनुकूल (जैसा प्रकृति ने पैदा किया वैसा) ही सेवन किया जाता है जैसे साबुत दानों की या बिना छिलका उतरी दाल, बिना छने आटे की रोटी, बिना छिले हुए फल आदि। कड़े रोगों में जिनमें शीघ्र शरीर का मल निकालने की जरूरत है भाप स्नान किया जाता है। एक तरह का इलाज टिन बाथ है जिससे शरीर के किसी भाग को न भिगोकर जनेन्द्रिय के आगे की त्वचा को धोते हैं। इस तरह जल चिकित्सा से सैकड़ों ऐसे रोगियों का इलाज होते देखा गया है जिन्हें डाक्टरों ने असाध्य समझ कर छोड़ दिया था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टर वरनर मैकफैडिन कई तरह से बिना दवाई के इलाज करते थे उनमें मुख्य इलात व्रत है। इस इलाज का सिद्धान्त यह है कि शरीर को यदि बिल्कुल ही भोजन न मिले तो वह वाह्य पदार्थ को खाने लगता है। जब वाह्य पदार्थ खत्म हो जाता है तब अन्त में एक ऐसी हालत आती है कि शरीर भूख से तो कमजोर परन्तु निरोग हो जाता है और बिना कुछ खाये हुए भी अपने आप तन्दुरुस्त मालूम पड़ता है। मुँह का जायका साफ हो जाता है फिर रोगी को फलों का (नींबू या नारंगी आदि का) थोड़ा सा रस खाने को देते हैं। इसके बाद फलों पर या दूध पर निर्वाह कराते हैं। रोग न रहने के कारण दिन प्रतिदिन शक्ति बढ़ती जाती है और एक तरह से नया शरीर और जीवन हो जाता है। इससे पूर्व जब तक निरोग हालत और मुँह का स्वाद ठीक नहीं हो जाता तब तक बिल्कुल कोई भी चीज खाने को नहीं दी जाती फिर खाना शुरू करने पर भूख एकदम सताती और बढ़ती है किन्तु रोगी को धीरे २ खाना बढ़ाया जाता है और बहुत सावधानी की जाती है। इस समय थोड़ी भी असावधानी होने से रोगी की मृत्यु तक हो जाती है।

एक और इलाज दुग्ध चिकित्सा है इसमें पहले चार पांच दिन व्रत कराकर दूध दिया जाता है और कुछ नहीं दिया जाता। दूध की मात्रा आवश्यकतानुसार बढ़ाई जाती है। यहां तक कि रोगी चंगा हो जावे, आयुर्वेद में कायाकल्प आदि इसी तरह की चिकित्सा हैं। व्रत के शुरू में खाना बन्द होने से दस्त ठीक नहीं होता यद्यपि आंखों में मल रहता है ऐसी दशा में रोगी के सिर में दर्द, जी मिचलाना उल्टी होना आदि शिकायतें शुरू हो जाते हैं इस समय कोई दस्तावर दवा देना भयंकर भूल होगी। डाक्टर केसिल का अन्तर स्नान का तरीका उत्तम होगा। इस सादे यन्त्र से वही काम आसानी से हो जाता है जिसे योगी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़े अभ्यास के बाद नदी के जल में खड़े होकर उदरस्थ वायु को घुमाकर गुदा से जल पेट में भरते थे और उसे पेट में घुमाकर बाहर निकालते थे। यह यन्त्र रबर की एक थैली होती है जिसके बीच में एक टोंटी होती है। थैली में शरीर के समान गरम जल भर दिया जाता है जिसमें थोड़ा नमक या बोरिक एसिड या साबुन घोल देते हैं बस थैली को कुर्सी पर रखकर गुदा द्वार में टोंटी लगाकर थैली पर बैठ जाते हैं अतएव शरीर के दबाव से थैली का पानी पेट में चढ़ जाता है। जब पानी और न चढ़े तब थोड़ी देर उसे पेट में ठहरा कर निकाल दिया जाता है। यह तरीका ऐनीमा से अच्छा है तथा इसमें दूसरे आदमी की सहायता की जरूरत नहीं होती। यह अन्तर स्नान कब्ज में दस्त रुकने पर सिर दर्द में मुफीद होता है, किन्तु ऐसा प्रयोग कभी-कभी करना ठीक है रोज नहीं।

एक पुराना तरीका जिससे लोग अनभिज्ञ हैं स्वर विधि है। हमारा सांस हर समय दोनों नथनों से समान नहीं चलती; वह दाँए बाँए से चलती है। दांए को सूर्य और बांए को चन्द्र स्वर कहते हैं। जब एक से दूसरा बदलता है तो दोनों धीमें हो जाते हैं। सांस नाक के भीतर रहती है और आती-जाती है इसे सुष्मना स्वर कहते हैं। इसके समय ईश्वर भजन ठीक बनता है सांसारिक काम ठीक नहीं होता। यह दो २ घण्टे में बदलते रहते हैं। इनमें भिन्न २ तत्व समय २ पर चलते रहते हैं। इनका ज्ञान उनके रूप रंग स्वाद और सांस की लम्बाई आदि से होता है। जैसे यदि पृथ्वी तत्व चल रहा हो तो साधारण सांस १३ अंगुल तक हाथ पर मालूम होगी। एक साफ दर्पण रखकर उस पर सांस साधारण जैसे चल रहा हो छोड़ें तो भाप की शकल चौकोर होगी, मुंह का जायका ठीक होगा। आसमान में या आंख बन्द करने पर पीला रंग दीख पड़ेगा। बदन भारी मालूम होगा। इसका बोध हो जाने पर घड़ी की आवश्यकता नहीं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहती। आप अपने स्वर और तत्व से ही समय आदि बता सकते हैं कि फलां दिन और फलां समय कौन सा स्वर और तत्व चलेगा। नीचे स्वर के चलने और तत्वों की पहचान के लिए नकशे दिए जाते हैं। मनुष्य शरीर घड़ी से बारीक और सही यन्त्र है और तन्दुरुस्त आदमी के स्वर तथा तत्व ठीक नीचे के नकशों के अनुसार चलते हैं अन्तर नहीं पड़ता। जहां फर्क पड़े वहीं शरीर में खराबी समझनी चाहिये। सांस ठीक चलाने से शरीर के सब रोग दूर हो जाते हैं इसे बदलने और इच्छानुसार चलाने की विधि यह है—

पहली विधि—जो स्वर चलाना चाहो उसके विपरीत करवट बदलकर लेट जाओ, थोड़ी देर में वह बदल जायगा। उदाहरणार्थ यदि सूर्य चल रहा है और चन्द्र चलाना हो तो दाहिनी करवट लेट जाओ।

दूसरी विधि—पुरानी रूई की बत्ती बनाकर नासिका में लगा दो, जो स्वर चलाना हो, खुला रखो।

तीसरी विधि—लेटकर तीसरी पसली के पास तकिया दबा दो, स्वर बदल जायगा।

चौथी विधि—एकाएक दौड़ने से या परिश्रम या कसरत से भी यह बदल जाता है। बीमार को भी इसी नियम का पाबन्द बनावे। बहुत शीघ्र औषधि का सुपरिणाम मालूम होगा तथा रोग भाग जायगा।

प्रातःकाल का समय सूर्योदय से लेकर ५ घड़ी तक।

	दाहिना सूर्य	बांया चन्द्र
कृष्णपक्ष	१,२,३,७,८,९,१३,१४,१५	४,५,६,१०,११,१२
शुक्लपक्ष	४,५,६,१०,११,१२	१,२,३,७,८,९,१३,१४,१५

पांच घड़ी समाप्त होने पर स्वर आप से आप बदल जाता है। यह दशा केवल स्वस्थ मनुष्यों की होती है। यदि शरीर में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ गड़बड़ हो तो निःसन्देह स्वर में फर्क पड़ जावेगा। यदि कोई मनुष्य केवल स्वर ठीक कर सके, तो कम से कम बहुत कम बीमार रहेगा।

॥ नकशा प्रत्येक तत्व के रंग स्वाद रूप चाल आदि का ॥

नाम तत्व	रंग	स्वाद	स्वरूप	स्वभाव	चाल
१ आकाश	काला	कड़ुवा	कान के समान	शीतल	१ अंगुल अंदर ही अंदर चलता
२ वायु	हरा	खट्टा	गोल	चंचल	९ ,, तिरछा ,,
३ अग्नि	लाल	चर्परा	त्रिकोन	गरम	,, ,, ऊपर ,,
४ पृथ्वी	पीला	मीठा	चौकोन	भारी	१३ ,, सन्मुख ,,
५ जल	सफेद	मीठा से जराकम	चन्द्रकार	शीतल	१६ ,, नीचे ,,

आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी और जल, वे पांच तत्व हैं। हर एक नासिका-नथनों से एक स्वर पांच घड़ी तक चलता है फिर दूसरी नासिका-नथने से चलने लगता है। जब स्वर चलता है, तो उसमें तत्व भी एक एक घड़ी के हिसाब से चलते हैं तब से पहिली घड़ी में वायु तत्व चलता है फिर क्रमानुसार अग्नि, पृथ्वी आदि चला करते हैं। वायु तत्व इस प्रकार नहीं चलता। वह हर एक तत्व के साथ थोड़ी २ देर चलकर, अपनी एक घड़ी में से ले लेता है। इस तरह कुल २४ घण्टों में अर्थात् ६० घड़ी में पांच तत्व बारह बार चलते हैं।

दूसरा प्राचीन तरीका योग चिकित्सा है। प्रकृति से शक्ति खींचकर उस शक्ति से अपने को स्वस्थ तेजस्वी और बलवान् बनाने का मार्ग ठीक है। जब हमारे कहीं चोट लगती या दर्द होता है तो हम स्वभाव से ही उस पर हाथ फेरते या फूंक मारते हैं वास्तव में प्रकृति हमें एक गुप्त ताकत को काम में लाने के लिये उकसाती है किन्तु हम उस ताकत की ओर उदासीन बन गये हैं उस शक्ति का हमें ज्ञान नहीं है कि यह शक्ति क्या है?

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमको जल की जितनी जरूरत है उससे अधिक हवा की है। हवा से भी अधिक हमको प्रकृति की सूक्ष्म शक्ति की जरूरत होती है। हमारे सारे ज्ञात तथा अज्ञात कार्य शक्ति द्वारा ही होते हैं इसलिए प्रकृति ने भी हवा से भी अधिक उदारता के साथ विश्व को इस शक्ति से भरपूर कर दिया है। इस शक्ति का उपयोग न जानने वाले हम लोग अनेकों रोगों से इस प्रकार पीड़ित रहते हैं जैसे वायु के लाभ को न जानने वाला (ठीक प्रकार सांस न लेकर) क्षयी आदि रोगों से दुःखी होते हैं। इस शक्ति को खींचने का थोड़ा भी प्रयत्न या अभ्यास करें तो हमारे शरीर के विकार संकल्पमात्र से ही नष्ट हो जायं। यह शक्ति आकर्षण इच्छामात्र से हो जाती है। इच्छा हमारी आज्ञा के वश में है इसलिये यह काम सरल से भी सरल है फिर इतनी सहज बात को छोड़कर डाक्टर वैद्यों की खुशामद करना, पैसा गंवाना और विष के समान दवाई पीने की क्या जरूरत है? मन हमारे सारे काम कराता है। यह काम दो तरह के हैं एक आंतरिक, दूसरे वाह्य। आन्तरिक मन भीतर के अवयवों की गति को नियमित करता है और संस्कार ग्रहण करता है, वाह्य मन विचार करता, तर्क करता तथा हाथ पैर आदि अवयव और स्नायुओं को चलाता है। यदि इस मन की प्रक्रियाओं को समझ कर बुद्धि से काम लिया जाय तो तन्दुरुस्ती बदलने में देर न लगे।

वाह्य मन बन्दर जैसा अस्थिर व अचल है। वह कभी आज्ञा मान लेता है कभी तर्क करता है किन्तु आंतरिक मन छोटे बालक के समान है उसे जो कहो फौरन मान लेता है और बिना भूल के उसी तरह चलता है। आंतरिक क्रियाएं व स्वास्थ्य इसी के अधिकार में है किंतु हम इसे आज्ञा क्यों नहीं करवाते कि हमारी अमुक पीड़ित जगह को ठीक करे। इसका कारण यह है कि बीच में बाहरी मन है। यह हमारी बात को उस तक नहीं पहुँचने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देता। इसलिए जब तक इसे सुला दिया न जाय तब तक हमारी खबर भीतरी मन तक नहीं पहुँच सकती। बाहरी मन के ठहरने पर जो आज्ञा भीतरी मन को दी जावेगी जरूर सफल होगी। यही इस गुप्त चिकित्सा की कुंजी है। इसके लिए लगातार कुछ अभ्यास की जरूरत है। एक दो दिन थोड़ा करके अधीर हो जाना ऐसे बालकों के समान काम करना है जो बीज बोकर १० या १५ मिनिट बाद ही खोदकर देखता है कि बीज उगा या नहीं। इसलिये अभ्यास या साधन से पहिले दृढ़ता होनी चाहिए हम यहीं पर सरल से सरल साधन बताते हैं।

जब अवकाश मिले आराम कुर्सी पर या फर्श पर सिर व पैरों के नीचे तकिया रखकर दस-पांच मिनिट को लेट जाओ। सारे शरीर को ढीला और कपड़े के समान नरम छोड़ दो। मन को शरीर पर हर एक भाग में फिराकर देखो कहीं तनाव तो नहीं है जहां तनाव हो निकाल दो। ऐसा दो-चार हफ्ते दिन में एक बार रोज अभ्यास करो। इससे थकावट दूर हो जायगी और आठ घण्टे का आराम पांच या सात मिनट में मिल जायगा फिर सांस को नियमित करो अर्थात् इस शरीर को शिथिल करने के अभ्यास के समय सांस कन्धे से नाभि तक धीरे भरो और गिनती से या ओ३म् को मन से ही उच्चारण द्वारा समय ठीक करलो (जैसे आठ या दस बार ओ३म्) फिर सांस को उठते ही समय अन्दर ही रोको, फिर उतने ही समय धीरे २ बाहर निकालदो। इसी तरह कुछ दिन में सांस नियमित होने पर मन से संसार को शरीर की तमाम क्रियाओं को भूल जाओ और यह विचार करो कि मैं शरीर का मालिक हूँ। मैं निरोग और बलवान हूँ। फिर शरीर के हर अंग को ध्यान से देखो कि उसका काम ठीक हो रहा है। यदि कहीं पीड़ा होती है तो हाथ फेर कर आज्ञा करो कि वह अपना काम ठीक करे। फिर हनुमान, भीम, राममूर्ति आदि के रूप का ध्यान करो, आंख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्द करके यह कल्पना करो कि मेरा शरीर अत्यन्त सुदृढ़ और शक्तिशाली है। हाथ पैर मजबूत हैं। कहीं रोग का नाम नहीं, सारा शरीर शक्ति से भरा हुआ है। ऐसा विचार मन में खूब जमादो। फिर ऐसी कल्पना करते हुए कि मैं अपनी कल्पित मूर्ति के समान बलवान हूँ, अपनी छाती हाथ पैर आदि पर हाथ फेरो। दस पन्द्रह मिनट इस क्रिया को कुछ दिन करके इसका प्रभाव देखो फिर किसी आसन पर (पद्मासन इसके लिये श्रेष्ठ है) या ऊपर की तरह लेटकर ऊपर की सांस की क्रिया करो, फिर ओ३म् का उच्चारण करके शरीर को बिल्कुल शिथिल करदो। अब ऐसी कल्पना करो कि मेरे चारों तरफ का वातावरण प्राणशक्ति से भरपूर है, मैं इस अनन्त शक्तिसागर के बीच में अकेला बैठा हूँ। सारे संसार में इस चेतन शक्ति के सिवाय और कुछ नहीं है। इस समय सब मनुष्यों को व सब चीजों को बिल्कुल भूल जाओ और ऐसा विचार करो कि मैं इस चेतन समुद्र में गोते लगा रहा हूँ, इस शक्ति से व्याप्त हो रहा हूँ। शरीर को बिल्कुल ढीला करदो और भुलादो, केवल कल्पना ही कल्पना रह जावे। इस कल्पना को तेज करो फिर कल्पना करो कि इस समुद्र से ताकत की लहरें चारों ओर से तुम्हारे शरीर में भर रही हैं। तुम्हारे शरीर का हर एक परमाणु इस ताकत से नया बन रहा है। यह ताकत तुम्हारे शरीर को बलवान बना रही है। इस अभ्यास से निश्चय ही तुम निरोग, बलवान, पुष्ट और दीर्घजीवी हो जाओगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दसवां अध्याय

शक्ति-संचय

जब हम आग पर पानी गर्म करते हैं तो पानी गर्म होकर उबलने लगता है और भाप निकलने लगती है। भाप में कोई अपार शक्ति है इसका हमको भान भी नहीं होता। लेकिन जब इसी भाप को सब ओर से रोककर एक विशेष जगह पर (पिस्टन के नीचे) केन्द्रित कर दिया जाता है तो उसी भाप में हजारों घोड़ों की शक्ति पैदा हो जाती है। बड़ी २ कलें चलने लगती हैं। हमारा चित्त जब खुली भाप के समान चारों ओर को भागता रहता है तो उसमें भी कोई शक्ति प्रतीत नहीं होती, किन्तु जब उसे सब ओर से निरोध करके एक जगह पर केन्द्रित कर दिया जाय तो उसकी शक्ति के सामने भाप की शक्ति पहाड़ के आगे राई के समान बल्कि इससे भी कहीं अधिक तुच्छ मालूम होगी। चित्त की वृत्तियों को सब ओर से निरोध करके एक जगह कर देने या जोड़ देने को योग कहते हैं। जिस तरह भाप की शक्ति का ज्ञान पहले पहल जेम्सवाट ने, विद्युत शक्ति का ध्यान फेरैड ने संसार को बतलाया इसी तरह योग की ताकत का ज्ञान महर्षि पतञ्जलि ने संसार को विदित कराया था। जैसे आजकल के लोग भाप तथा बिजली की ताकत का विश्वास करके उससे अनेकों अद्भुत काम करते और लाभ उठाते हैं, इसी तरह हमारे पूर्वज योग ताकत से इनसे भी अधिक काम करते थे।

यदि किसी मूर्ख से जो भाप के निरोध की शक्ति को जानता न हो कहा जाय कि उसकी पतीली की भाप बोझा ढो सकती

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, जमीन जोत सकती है, बुन सकती है तो वह यकीन न करेगा। इसी तरह योगशक्ति से अपरिचित हमारे पढ़े-लिखे सज्जनों से यह कहा जाय कि उनके चित्त के निरोध में बहुत ताकत है, तीनों काल जाने जा सकते हैं, लोक-लोकान्तरों को गमन किया जा सकता है तो वह मूर्ख की पतीली की भाप ढक्कन से बन्द करके दिखाया जा सकता है कि भाप में इसे उलटने की ताकत है। इसी तरह चित्त के निरोध की ताकत का हाल जानने को पतीली के ढक्कन के समान ही प्रयोग किये जा सकते हैं। यह मैस्मरेजम, हिपनोटिज्म, छाया पुरुष, सिद्धि आदि पुकारे जाते हैं। योग और इनमें एक इंजन व पतीली के ढक्कन के समान फर्क है।

जब हम वायु को बड़े वेग से चलते हुए और बड़े-बड़े पेड़ उखड़ते या नदी को गांव के गांव बहा ले जाते देखते हैं तो जल व वायु की ताकत पर आश्चर्य होता है। किन्तु जल और वायु को यह ताकत जमीन से मिलती है। पृथ्वी के आकर्षण से ही जल और वायु में प्रवाह पैदा होता है। यह आकर्षण शक्ति हर चीज में होती है। इसीसे सब पदार्थ स्थित हैं, बिखर नहीं जाते। इसी से दो पदार्थ मिलकर तीसरा बनता है। प्रकाश अग्नि तथा बिजली का मूल भी यही है। यह सब उसी के बाहरी रूप हैं। जमीन तथा पार्थिव पदार्थों को यह शक्ति सूर्य से मिलती है। असल में जमीन सूरज का टुकड़ा है जो किसी समय सूरज से अलग हो गया है।

हमारा सूरज तथा अनेकों सूरज एक अन्य सूरज के अणु-मात्र टुकड़े हैं। यह सूरज हमारे अन्तर में स्थित है। अतः जो ताकत अनेकों रूप से ब्रह्माण्ड में दीख पड़ती है, वह बीज रूप से हमारे पिण्ड में मौजूद है।

योग इसी अन्तर शक्ति को जागृत या विकसित करता है या यों कहिये कि योग उसका ज्ञान कराता है, अपना आपा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिखा देता है, पिंड शक्ति और ब्रह्मांड शक्ति के एक होने का भेद खोल देता है। चित्त की अनेकों वृत्तियों में भटकने वाले कमजोर आदमी को ये अपने रूप में ला ताकतवर बना देता है। ऐसे योगी की सब कामनाएं, हर्ष, शोक, रोग, भय, क्रोधाग्नि शांत हो जाते हैं। सृष्टियों की उत्पत्ति और विनाश उसके संकल्प मात्र से होने लगते हैं। समस्त विश्व उसकी हथेली पर राई के समान है, देश काल कार्य कारण भाव उसके लिये नष्ट हो जाते हैं। ऐसा योग अवश्य साधने योग्य है।

संसार का ज्ञान हमको पाँच इन्द्रियों द्वारा होता है—१-कान २-त्वचा, ३-आंख, ४-जीभ, ५-नाक। इन इन्द्रियों के विषय (अर्थात् जो कुछ यह इन्द्रियां ग्रहण करती हैं) क्रम से पांच हैं—शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।

इन्द्रियां अपने विषयों का असर मन पर डालती हैं। इसी प्रभाव को चित्तवृत्ति कहते हैं। मन की वृत्ति पांच होती हैं—१-प्रमाण (यथार्थ ज्ञान), २-विपर्याय (विपरीत ज्ञान जैसे रस्सी में सांप का), ३-विकल्प (वस्तु से शून्य ज्ञान जैसे आदमी के सिर पर सींग), ४-निद्रा (अभाव ज्ञान), ५. स्मृति (पिछले अनुभव का ज्ञान)। इन वृत्तियों के निरोध अर्थात् रोकने या वश में करने को योग कहते हैं। योग से निरोध काल* में जैसे आत्म साक्षात्कार अर्थात् अपने असली स्वरूप का ज्ञान होता है। व्युत्थान काल अर्थात् सांसारिक प्रकृति काल में उससे योगी को अनेकों सिद्धियां प्राप्त होती हैं। यह पिछली स्थिति ही हमारे इस अध्याय का विषय है।

योग के दो उपाय या साधन हैं—(१) अभ्यास (वृत्ति निरोध के यत्न में निरन्तर लगे रहना), (२) वैराग्य (देखे-सुने विषयों

---

*निरोधकाल—कछवे के अंगों की भांति वृत्तियों को समेट कर संसार से निवृत्त हो जाने के काल में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की तृष्णा अर्थात् चाह से चित्त को वश में रखना) और विक्षेप अर्थात् विघ्न डालने वाले नौ हैं—

(१) व्याधि—वात, पित्त, कफ के कोप से रोग होना।

(२) स्त्यान—इच्छा होने पर भी सामर्थ्य न होना।

(३) संशय—योग करूँ या न करूँ।

(४) प्रमाद—साधनों का न होना।

(५) आलस्य—तमोगुण की अधिकता से प्रवृत्ति का न होना।

(६) अविरति—विषयों की इच्छा।

(७) भ्रान्ति दर्शन—कुछ का कुछ ज्ञात होना।

(८) अलब्ध भूयिकत्व—किसी प्रतिबन्ध+ का होना।

(९) अनवस्थित्व—योग लाभ होने पर भी उसमें निरन्तर स्थित न होना योग से गिर जाना।

विक्षेप के अभाव के लिये एक तत्व (जैसे प्रणव अर्थात् ओम् या अहं ब्रह्मास्मि तत सोहम् शिवोहं आदि महावाक्य) का अभ्यास करना आवश्यक है।

चित्त के निरोध या वश में करने के लिये चित्त का स्थिर या एकाग्र करना जरूरी है। राग द्वेषादि से मलिन हुआ चित्त स्थिर नहीं होता। चित्त प्रसाद इस मल को दूर कर उसे एकाग्र होने योग्य बनाता है। चित्त प्रसाद मैत्री (अर्थात् सबसे मित्र भाव) करुणा (अर्थात् सब पर दया करना),, मुदिता (सदैव खुश रहना) और उदासीनता (हर्ष शोक दुःख सुख मानापमान का ध्यान न करना) इन चार भावनाओं से मिलता है। चित्त

+प्रतिबन्ध पांच हैं—(१) दुःख (अध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक)। (२) दौर्मनस्य (इच्छित वस्तु न मिलने से क्षोभ होना)। (३) अंगजवेपथु (शरीर की कमजोरी से कम्प होना)। (४) श्वास। (५) प्रश्वास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकाग्र करने के मुख्य चार साधन हैं—

प्राणायाम विषयों+ के उत्पन्न करने वाली वृत्तियों का अथवा चित्त या अहंकार का साक्षात्कार प्रिय वस्तु का ध्यान व निद्रा के अनुभव का आलम्बन।

स्थिर किया हुआ चित्त सूक्ष्म से सूक्ष्म परमाणु और महान् से महान् में आसानी से लगाया जा सकता है। चित्त को किसी विषय में लगाने को धारणा कहते हैं। धारणा यदि निरन्तर रहे तो ध्यान कहलाती है। ध्यान की परिपक्व दशा को समाधि कहते हैं। जैसे निर्मल मणि जिस रंग पर रखी जाय उसी रंग की प्रतीत होती है। इसी भांति समाधि में जिस विषय का ध्यान होता है चित्त उसी विषय के अनुकूल या ध्येयकर हो जाता है।

जब धारणा ध्यान व समाधि तीनों एक ही विषय के सम्बन्ध में हों यानी जिस विषय की धारणा की जाय उसी का ध्यान व उसी के प्रति समाधि हो तो इसे संयम कहते हैं। संयम से अनेकों शक्तियाँ सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

समाधि सवितर्क-निर्वितर्क, सविचार-निर्विचार चार भेद से चार प्रकार की होती है—

सवितर्का—में कण्ठ में स्थिति शब्द, संसार में स्थिति अर्थ और मन में स्थित ज्ञान तीनों अभेद रूप हो जाते हैं किन्तु उनका भाव (अभेद रूप से मिला हुआ) बना रहता है।

+विषवती वृत्तियों आदि का साक्षात्कार इस तरह होता है कि नाक के अग्रभाग पर संयम (चित्त के रोकने) करने से दिव्य गन्ध का, जीभ के अग्रभाग में दिव्य रस का, तालू स्थल में संयम करने से दिव्य रूप का, जीव के बीच भाग में दिव्य स्पर्श का, अन्तिम भाग में दिव्य शब्द का और हृदय में संयम करने से चित्त का साक्षात्कार हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्विकर्ता—में शब्द का स्मरण नहीं रहता और चित्त वृत्ति स्वरूपशून्य अर्थात् अपने ग्रहण होने वाले ज्ञानात्मक रूप से रहित होकर ध्येयकार हो जाती है अर्थात् इसमें शब्द और ज्ञान दोनों की निवृत्ति हो जाती हैं, मन केवल ग्राह्य वस्तु का आकार धारण कर लेता है, परन्तु सवितर्का में शब्द, ज्ञान और अर्थ तीनों का भाव बना रहता है।

सविचार—में कार्य कारण भाव जैसे महत्तत्व कारण हैं और अहंकार उसका कार्य ऐसा विचार और विकल्प बना रहता है, किन्तु निर्विचार में कारण का विचार नहीं रहता, केवल अहंकार का ही रह जाता है। पहला (सवितर्क और निर्वितर्क भेद) स्थूल विषयक (ग्रहीत, ग्रहण और ग्रह्य के सम्बन्ध में) है और यह (सविचार-निर्विचार भेद) सूक्ष्म (कार्य कारण भाव) विषयक।

संयम का भूमियों में विनियोग होता है अर्थात् जब तक पहली भूमि सिद्ध न हो आगे की भूमि सिद्ध नहीं होती, अतः पहिले सवितर्का समाधि सिद्ध कर लेनी चाहिये जब उसमें पूर्ण रूप से बुद्धि स्थिर हो जावे निर्वित की समाप्ति में संयम करना चाहिये।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि योग के बहिरंग साधन हैं—[१] अहिंसा [२] सत्य [३] अस्तेय [४] ब्रह्मचर्य [५] अपरिग्रह ये पांच यम★ हैं।

★(१) अहिंसा—किसी को कष्ट न देना। (२) सत्य—जो मन में हो वही कहना जो कहें वही करना, कभी झूठ व्यवहार न करना। (३) अस्तेय—बिना बदला चुकाये कोई वस्तु ग्रहण न करना तथा अन्याय से या अनुचित तरीके से या जरूरत से ज्यादा कुछ न लेना। (४) ब्रह्मचर्य—समस्त इन्द्रियों का संयम करना (रोकना)। (५) अपरिग्रह—किसी भी वस्तु को चाहे वह उचित प्रकार से ही प्राप्त क्यों न हुई हो सम्मान न करना विषयों की स्मृति और अनावश्यक विचार भी अपरिग्रह हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पांच ही नियम हैं—(१) शौच। (२) सन्तोष। (३) तप। (४) स्वाध्याय। (५) ईश्वर प्रणिधान।+ जिसमें शरीर की स्थिरता सिद्ध हो वही आसन कहलाता है। आसन में स्थित होने के बाद श्वास प्रश्वास की स्वाभाविक गति का अभाव प्राणायाम है। जब इन्द्रियों का अपने विषयों से योग न हो और वह मन के अनुसार ही हो जावें तो ऐसी गति को प्रत्याहार कहते हैं। इस तरह योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि आठ अंग हैं। जिनसे अभ्यास और वैराग्य सरल हो जाते हैं और शीघ्र योग प्राप्त होता है। अहिंसा सिद्ध होने से योगी का अथवा योगी के समीप आने वालों का योगी के प्रति अथवा एक दूसरे में वैठ निवृत हो जाते हैं। सत्य से योगी के मन, वचन, कर्म सफल हो जाते हैं अर्थात् जो वह विचारता है वा कह देता है या जिसमें हाथ लगा देता है वह पूरा हो जाता है। अस्तेय से योगी को समस्त रत्न मिल जाते हैं लक्ष्मी उसके इशारे पर चलती है। ब्रह्मचर्य सिद्ध होने से अत्यधिक सामर्थ्य पैदा हो जाती है। अपरिग्रह से तीनों काल का बोध हो जाता है। शौच सिद्धि होने से अपने

+(१) शौच—भीतर बाहर की पवित्रता अर्थात् शुद्धि। (२) सन्तोष—जो प्रारब्ध से प्राप्त हो उसी में सन्तुष्ट रहना, अधिक कुछ भी न चाहना। (३) तप—भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, सुख आदि सहन करना। (४) स्वाध्याय—वेद शास्त्रों का पढ़ना और उनके अनुसार आचरण करना। (५) ईश्वर प्रणिधान—सब काम ईश्वराधीन कर फलाशा त्याग कर केवल अपने को ईश्वर का एक यन्त्र समझकर आसक्ति रहित होकर निष्काम भाव से करना, अपने को ईश्वर के आधीन, सेवा कार्य के आधीन, सेवा कार्य के लिए टहलुआ जैसा जानना। जैसे ईश्वर असंग है ऐसे ही मैं भी असंग और शुद्ध हूँ ऐसा समझना।

धारणा, ध्यान, समाधि का वर्णन पहले आ चुका है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर से ग्लानि हो जाती है और अन्य शरीर के संसर्ग की इच्छा कतई नष्ट हो जाती है। सन्तोष से अति अनुपम सुखमय होता है। तप से अणिमादि सिद्धियां प्राप्त होती हैं। स्वाध्याय से इष्ट का साक्षात्कार हो जाता है। ईश्वर प्रणिधान से समाधि प्राप्त होती है।

योग के आठ अंगों में से प्राणायाम एक मुख्य क्रिया है। विश्व की सारी क्रियाएँ जिस शक्ति के द्वारा होती हैं उस शक्ति को प्राण कहते हैं। वही शक्ति हमारे शरीर में भी मौजूद है, उसी से हमारे सारे काम होते हैं अथवा यों समझिए कि जो ताकत संसार में अलग २ रूप से दीख पड़ती है, वह मूल में एक ही है उसी को प्राण आदि कहते हैं। प्राणायाम अपने शरीर में स्थित प्राण को विश्व में फैले हुए प्राण से मिला देते हैं, प्राण को वश में करने का एक अनमोल साधन है। प्राणायाम अभ्यासी के लिए अगम्य शक्ति का द्वार खोल देता है। प्राण को वश में करने से सारे संसार पर जय मिल जाती है क्योंकि प्राण ही विश्व शक्ति का समष्टि रूप है। फिर सूर्य, चन्द्र तारागण आदि अपना ही अंग बतलाते हैं। प्राणायाम से अपना मन ही नहीं वश में होता बल्कि विश्व को हिलाने का एक केन्द्र बन जाता है।

यदि आपके मन में प्राणायाम का अभ्यास आरम्भ करने की इच्छा हो तो आपको भाग्यवान समझना चाहिए। हम यहां शुरू की विधि बताते हैं। जब आप आगे बढ़ेंगे तो इसकी जानकारी होती जायेगी। कोई गुरु न मिले तो भी अज्ञात हाथों से आपको सहायता मिलेगी, ऐसा यकीन करके आज ही से आरम्भ कर दीजिए। आपका खून साफ होकर शरीर निरोग होगा। आंखों का तेज, बल और वीर्य आपको दिन २ बढ़ते प्रतीत होंगे। मन के विकार दूर होंगे। जन्म-जन्मान्तरों के पाप और संकल्प नष्ट हो जायेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह चार तरह का होता है—(१) वाह्यवृत्ति (रेचक सांस को बाहर करके रोकना), (२) आभ्यान्तर वृत्ति (पूरक सांस को भीतर लेकर रोकना, (३) स्तम्भवृत्ति (कुम्भक सांस को न बाहर न भीतर लेना, जहां का तहीं सब हालत में रोकना), (४) वाह्य और अभ्यान्तर दोनों की अपेक्षा रहित चौथा प्राणायाम है। इसमें बाहर रोको, सांस भीतर आता है तो उसे रोको, और भीतर की भीतर रोको। इस तरह क्रमशः रेचक, कुम्भक आदि का साधन करो और जब तक यह भली प्रकार सिद्ध न हो आगे न बढ़ना चाहिये।

प्राणायाम के पहले एक आसन सिद्ध कर लेना आवश्यक है जिससे देर तक उस आसन पर सुखपूर्वक रह सकें। सिद्धासन सब में सुगम है।

सुबह तथा शाम को नहा धोकर या हाथ मुँह धोकर किसी साफ ऊँचे निर्जन स्थान में कोमल आसन बिछाकर इस तरह बैठिये जैसे पाल्थी मारकर बैठते हैं किन्तु बांये पैर की एड़ी गुदा व जननेन्द्रिय के बीच में जो जगह है दबा रखो और सीधे पैर की एड़ी जननेन्द्रिय के ऊपर। इस तरह पैर पर पैर आ जाता है, घुटने पाल्थी से चौड़े होते हैं। हाथ घुटनों पर हथेली ऊपर को रहे। हाथ के अंगूठे उँगली इस तरह मुड़ी हो कि अंगूठा सबसे बड़ी और सबसे छोटी उंगली के बीच की उंगली को छूता रहे। सिर, पीठ, गरदन व कमर सब बिल्कुल एक सीध में रहें। इस तरह रीढ़ की हड्डी को नीचे से ऊपर तक सीधा कर शरीर को ढीला छोड़ दीजिए जिससे शरीर बिल्कुल भूल जाय।

प्राणायाम शुरू करने के पहले गायत्री मन्त्र[1] के साथ चोटी में गांठ लगा लीजिये जिससे हवा में हिलकर चोटी विक्षेप न

---

[1]गायत्री मन्त्र—प्रस्तावना में देखें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डाले। फिर आचमन मन्त्र[२] के साथ आचमन कीजिये जिससे गला आदि साफ हो जाय और सांस आने जाने या रोकने में कष्ट या खुश्की मालूम न हो। आचमन के बाद जीभ को उलट कर तालु से लगा लीजिये, जिससे जप मन से हो सके जीभ न हिले। फिर दो चार सांस लम्बी लीजिये। लम्बी सांस लेने का तरीका यह है पहले पेट फुलाकर फेफड़ों के नीचे का भाग खूब भरलो। फिर बीच का भाग भरते हुए ऊपर को सांस भरते लाइये इसके बाद थोड़े कंधे उचका कर फेफड़ों के सबसे ऊपर के भाग को कंधों तक पूरा भर दीजिये फिर धीरे-धीरे ऊपर की ओर से फेफड़ों को खाली करते हुए सांस बाहर निकालना शुरू करो और पेट को पिचका कर कुल वायु निकाल दो। नाभि की हड्डी तक मिल जाये। इसी तरह चार-पांच सांस लीजिये। सांस हमेशा बहुत धीरे-धीरे लेनी या निकालनी चाहिए। एकदम यानी जोर से एक साथ ऐसा करने से हानि होने की सम्भावना है।

जब ४-५ सांस ले चुकें और पेट पिचकाकर बाहर करदें तो उसी हालत में सांस को बाहर ही रोक दीजिये। गुदा और मूल नाड़ी ऊपर को खींचिये और समस्त इन्द्रियों□ को इकट्ठा कर प्राणवायु+ के साथ ब्रह्मांड में स्थापित कर दो। मन को एकाग्र

---

[२]आचमन मन्त्र—ओ३म् शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

□ इन्द्रियों का अर्थ आंख नाक कान या हाथ पैर नहीं, वह तो शरीर के अंग हैं। इन्द्रियां तो इनके पीछे सूक्ष्म शक्तियां हैं जो शरीर में स्थित भिन्न २ वायुओं से चलित होती हैं।

+ नोट—यहां प्राणवायु और प्राणशक्ति का भेद समझ लेना चाहिए। प्राणशक्ति सारी शक्ति का मूल रूप आधार है, प्राणवायु शरीर में स्थित दस वायुओं में मुख्य वायु है और मुख्य होने के कारण तथा इस कारण से कि यह वायु के साथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर मन ही मन बिना जीभ या होठ का ध्यान किये हुए ओ३म् की जप संख्या (ओ३म् १ ओ३म् २ ओ३म् ३ ओ३म् ४ ओ३म् ५

हमारे शरीर को प्राण शक्ति लाती है इसका नाम प्राण है। वायु का अर्थ भी यहां कुछ भिन्न है। हम वायु से अर्थ केवल हवा समझते हैं परन्तु यहां वायु का अर्थ एक सूक्ष्म वायु शक्ति मान कर ओ३म् का अर्थ कहिए। फिर सांस निकालकर उसी प्रकार समझना चाहिये। शरीर के सब काम इन वायुओं से होते हैं। यह वायु शरीर में स्थान भेद से दस हैं : प्राण, अपान, समान, उदान, बयान, कूर्म, कृकल, नाग, देवदत्त और धनंजय ये सभी वायु प्राणवायु के आधार हैं। प्राणवायु का स्थान हृदय कमल है और राज्य ब्रह्माण्ड तक प्राणायाम जिस देश में धारण की जाती है उसी देश की वायु से काम लिया जाता है। जो वायु प्राणशक्ति लेकर हमारे शरीर के अन्दर नाक अथवा अन्य शरीर के छिद्रों से जाती है उसे प्राणवायु कहते हैं। जो हमारे शरीर का मल लेकर बाहर निकलती है उसे अपान वायु कहते हैं। सांस के आने जाने का काम प्राणवायु से ही होता है।

अपान वायु का स्थान मूलाधार नाड़ी है। शरीर का मल बाहर करना इसका काम है। समान वायु नाभि में रहता है। इसका कार्य सारे शरीर में रसादि पहुँचाना है। कुण्डलिनी को जगाने में योगी इसी वायु से काम लेते हैं। उदान वायु का स्थान कण्ठ है त्रिकुटी तक इसका राज्य है इसका काम त्रिकुटी से शक्ति लेकर समान वायु तक पहुँचाना है। बयान वायु सारे शरीर में है। कूर्म का स्थान नेत्र है। कृकल मेदे में रहती है। नाग का स्थान गला है कय डकार जंभाई यही वायु लाती है। देवदत्त हृदय के पास वास करती है। काम शक्ति इसी के द्वारा पैदा होती है। धनञ्जय का स्थान भी सारा शरीर है मृत्यु के पश्चात् शरीर को फुला देना और शरीर से अलग होना इसका काम है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यादि या ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् ओ३म् १ इत्यादि पांच पांच करके) गिनते हुए आरम्भ कर दीजिये। इससे काल का ज्ञान रहेगा। जप करते समय सिवाय ईश्वर के और किसी का ध्यान न आना चाहिये। यह आरम्भ में कठिन मालूम होगा परन्तु तीन महीने के बाद फिर कठिन न होगा। इस तरह आपको शरीर के अंगों की सुधि भी न रहेगी। प्राण वायु की गर्मी त्वचा इन्द्रिय द्वारा और ओ३म् शब्द श्रवणेन्द्रिय से (बिना कानों से सुनाई दिये या जीभ से शब्द निकले) ब्रह्माण्ड में ही प्रतीत होंगे जब गर्मी ब्रह्माण्ड में अधिक प्रतीत हो और घबराहट मालूम पड़े तो पूर्वोक्त विधि से सांस अन्दर भर ब्रह्मांड में ओ३म् का जाप कीजिये। इस प्रकार २१ बार प्राणायाम कीजिये और संख्या उत्तरोत्तर बढ़ाते जाइये।

ओ३म् का अर्थ इस प्रकार है—ओ३म् अ उ म तीनों अक्षरों से मिलकर बना है। इन तीन अक्षरों के तीन-तीन अर्थ हैं—

अ

विराट	अग्नि	विश्वादि
१	२	३

उ म

हिरण्यगर्भ	वायु	तेजसादि	ईश्वर	आदित्य	प्राज्ञ
१	२	३	१	२	३

पहले प्राणायाम के पश्चात् विराट अर्थ ध्यान सहित करिये। दूसरे के बाद अग्नि और इसी क्रम से हर बार अन्दर सांस लेने पर कहते रहिये।

विराट—जो बहु प्रकार से जगत् को प्रकाशित करता है।

अग्नि—जो ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ जानने और पूजने योग्य है।

विश्वादि—जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश करते हैं या जो इसमें व्याप्त होकर प्रविष्ट हो रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिरण्यगर्भ—जो सूर्योदय तेज वाले लोकों का गर्भ नाम उत्पत्ति और विनाश स्थान है।

वायु—जो सब चराचर जगत् का उत्पन्न करने वाला पालने वाला तथा प्रलय करने वाला है और सब बलवानों से बलवान है।

तेजसादि—स्वयं रोशनी और सूर्यादि तेज वाले लोकों में रोशनी करने वाला है।

ईश्वर—जिसका सत्य विचार, शील ज्ञान और अनन्त ईश्वर है।

आदित्य—जिसका कभी विनाश न हो उस परमेश्वर की आदित्य संज्ञा है।

प्राज्ञ—जो निभ्रान्त ज्ञान युक्त सब चराचर जगत् के व्यवहारों को यथावत् जानता है।

विराट से प्राज्ञ तक नौ, फिर विराट से प्राज्ञ तक नौ, और फिर विराट से विश्वादि तक तीन, कुल २१ प्राणायाम होंगे इससे संख्या का भी ज्ञान रहेगा। इस तरह जब ब्रह्माण्ड में प्राणायाम सिद्ध हो जावे अर्थात् चित्त एकाग्र हो जावे तो फिर भ्रू मध्य* में। जब यहां सिद्ध हो जावे तो उसके बाद नासाग्र (नाक के फुदने में) धारण करिये। यदि निरन्तर ठीक तरह अभ्यास करेंगे तो एक साल में सिद्ध हो जांवेगा और ओं३म् जाप की संख्या एक बार श्वास रोकने में १०० पंचकों तक पहुँच जावेगी किन्तु आगे बढ़ने में शीघ्रता कभी न कीजिये और धीरे २ ही अभ्यास बढ़ाइये। अधिक खींच-तान न करिये।

प्रणव का जाप पहले एक मात्रा का अर्थात् जप करते हुए अर्थ विचार करते चलना, और फिर तीनों मात्रा का अर्थात्

---

*भवों के बीच में जहां यदि नाक की सीध में ऊपर को रेखा खींची जाय तो दोनों भौंवों को जोड़ने वाले रेखा से मिलेगी, जहाँ शिवजी का तीसरा नेत्र दिखाया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ विचारसहित जप सच्चिदानन्द के प्रकाश में निमग्न हो कर करना चाहिये। अगर ऐसे अभ्यास में निद्रा आने लगे तो सोने से पहले भृकुटी में ध्यान जमा कर नित्य सोते समय निद्रा के आने का ध्यान करना चाहिये इससे निद्रा के स्वरूप का ज्ञान होकर निद्रा पर जय होगी, और आपकी इच्छा होने पर ही आया करेगी, अन्यथा नहीं।

पहले प्राणायाम में प्राण वायु से काम लिया जाता है और धारणा भी हृदय कमल से ऊपर के देशों में ही की जाती है। जैसे जीभ के आदि मध्य में व तालु में इत्यादि। परन्तु नासाग्र पर ही यह प्राणायाम सिद्ध होता है। दूसरे प्राणायाम में अपान वायु से काम लिया जाता है। गुदा से चलने वाले अपान वायु से पेट को घड़े के समान भरते हैं। तीसरे में ऊपर के प्राणवायु और नीचे के अपान वायु को जहां का तहां रोककर ध्यान से समान वायु को रोककर थामा जाता है। अपान वायु की जगह नाभि से गुदा तक और समान की नाभि से हृदय तक है। चौथे प्राणायाम में प्राण को ब्रह्मांड में चढ़ाकर भौंहों के बीच में लाकर त्रिकुटी के नीचे स्थापित किया जाता है और नाभि के नीचे ठहरने वाले तथा भीतर से बाहर निकलने के स्वभाव वाले अपान वायु को नासिका में स्थापित कर युद्ध कराया जाता है। या यों समझिये कि पहले में भीतर जाने वाले प्राणवायु का अभाव होता है। तीसरे में प्राण और अपान दोनों की गति का अभाव किया जाता है और चौथे प्राणायाम में अन्दर जाने वाले प्राण को बाहर फेंककर और बाहर जाने वाले अपान को अन्दर ठेलकर दोनों वायुओं में धक्कमधक्का कराई जाती है।

आप इस विवेचन से समझ लेंगे कि यह विषय कितना कठिन है मगर शुरू कर देने से मार्ग मिलता ही चलता है इससे घबराना न चाहिये।

प्राणायाम के अभ्यास के लिये आहार, विहार, सोना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जागना तथा अन्य कर्मयुक्त होना चाहिये। न कम खाना न ज्यादा, न कम सोना न ज्यादा, न ज्यादा मेहनत करना और न आलस्य में पड़े रहना और ब्रह्मचर्य से रहना। यदि ऐसा न होगा तो प्राणायाम सिद्ध होना कठिन हो जायगा।

जिस प्रकार हमारा चित्त क्षण-क्षण में बदलता है उसी तरह भूत और इन्द्रियां भी क्षण २ परणागति होती रहती हैं। अपने शरीर को ही देखें तो जो शरीर कल (बीता हुआ दिन) हमारे पास था वह आज नहीं रहा। हमारे कल के शरीर के बहुत से कण मृत होकर बाहर फिंक गये और आज हमारे शरीर का अधिकांश भाग बिल्कुल नया है। इस तरह हमारा शरीर बढ़ती हुई नदी के समान है। अन्य सब पदार्थ भी इसी तरह क्षण-क्षण नाश या परिणाम को प्राप्त हो रहे हैं और नया रूप धारण कर रहे हैं। यह परिणाम तीन तरह के होते हैं—

१. धर्म परिणाम—जैसे खाद्य पदार्थों से शरीर का बनना महाभूतों से हर पदार्थ का बनना।

२. लक्षण परिणाम—जैसे बीज से पेड़ का रज वीर्य से शरीर का बनना।

३. अवस्था परिणाम—जैसे बरफ से पानी का बनना शरीर का बाल, युवा और जरा अवस्थाओं को प्राप्त होना।

जब योगी किसी चीज धर्मालक्ष्य और अवस्था परिणाम पर संयम करता है तो वह उस पदार्थ की भूत और भविष्यत गति जान जाता है। इस भिन्न २ पदार्थों के संयम× से भिन्न २ ज्ञान और सिद्धि प्राप्त होती है शब्द अर्थज्ञान के विभाग अन्तर

×संयम अर्थात् एक ही विषय में धारणा ध्यान और समाधि। इस समाधि में किसी ध्येय का (जिसमें चित्त लगाया जाय) आलम्बन (सहारा) रहता है इस तरह समाधि को सजीव या सम्यज्ञान समाधि कहते हैं। इस समाधि में विपक्षों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को निश्चय कर जो इनके विभाग में संयम करता है उसको समस्त जीवों की बोली का ज्ञान हो जाता है। संस्कारों में संयम करने से इनका साक्षात्कार होकर पूर्व जन्मों का ज्ञान होता है पर (दूसरे) चित्त में संयम करने से ग्रह शक्ति (इन्द्रादि शक्ति) रुक जाती है और देह की अन्तर आत्मा दिखाई देती मिल जाती है। सोम+ क्रम और निरुपक्रम कर्म में संयोग करने से मौत का ज्ञान होता है अर्थात् मौत कब किस तरह और किस स्थान में होगी। मैत्री भावना में संयम करने से दुखियों के दुःख निवृत्त करने की सामर्थ्य आ जाती है। मुदिता भावना में संयम करने से चिन्तामुक्त और हाथी आदि के बल में संयम करने से हाथी आदि का बल प्राप्त होता है।

चित्तवृत्ति के सात्विक प्रकाश को छोटा जैसे (जमीन तत्व) व्यवहृति (छिपा हुआ जैसे जमीन में रत्न), विप्रकृष्ट (दूर देश या लोक में) जिस चीज में संयम से लगाया जाय तो उसी का ज्ञान हो जाता है। सूरज में संयम से सब भुवनों का ज्ञान होता

अन्त होकर चित्त एकाग्र हो जाता है लेकिन समाधि के उत्थान होने पर विक्षेप फिर उदय हो जाते हैं। विक्षेप का पूर्ण अन्त असम्यग्ज्ञान या निर्जीव समाधि से होता है। ऐसी समाधि में ध्येय का अन्त हो जाता है, चित्त निरालम्ब और निर्विज्ञ हो जाता है। यह स्थिति ही योग की पराकाष्ठा है और हमारे इस अध्याय का विषय है। ऊपर बताये हुए समाधि के चार भेद सजीव वा सम्यग्ज्ञति समाधि के ही हैं। सिद्धियां नवीन समाधि से ही प्राप्त होती हैं निर्जीव से आत्मसाक्षात्कार। निर्जीव समाधि में सिद्धियां समाधि की दृढ़ता की विरोधी होने से विघ्न रूप होती हैं।

+कर्म जो फल दे रहे हैं सोम कहलाते हैं और जो कुछ काल बाद फल देंगे निरुप कहलाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। चन्द्र से व्यूह का और ध्रुव से तारागणों का ज्ञान होता है। नाभिचक्र में संयम से शरीर की बनावट का ज्ञान होता है। कंठ कूप संयम से भूख-प्यास नहीं रहती। मूर्द्ध ज्योति से सर्वज्ञता मिलती है। मन संयम करने से चित्त का ज्ञान होता है। स्वार्थ (चेतन शक्ति या पुरुष) में संयम करने से प्रतिभा श्रवण वेदन, आदर्श आस्वाद और वार्ता के जानने की सामर्थ्य होती है। उदान वायु में संयम करके उस पर विजय पाने पर जल कीचड़ और कष्टों में असंग रहता है। भूमि की तरह उन पर गमन किया जा सकता है और योगी उत्क्रान्ति को अपने आधीन कर लेता है अर्थात् अपनी इच्छानुसार जब चाहे जीवित रह सकता है और जब चाहे शरीर त्याग कर सकता है।

इसी तरह समान हवा पर जय पाने से योगी का तमोगुण जाता रहता है और वह तेजस्वी हो जाता है। देह और आकाश के सम्बन्ध में संयोग से वह आकाश में गमन कर सकता है। आकाशादि पंच महाभूतों की स्थूल तथा सूक्ष्म अवस्थाओं में संयम करने से इन भूतों पर विजय मिलती है और योगी इनसे मोहित नहीं होता। भूतों पर विजयी हो जाने पर अष्ट सिद्धियाँ मिलती हैं, कार्य सम्पत लाभ हो जाता है और भूतों के धर्म कोई बाधा या घात (जैसे आग का धर्म जलाना है तो जला न सकेगी) नहीं करते।

इन्द्रियों को कई रूपों में संयम करने से इन पर जय होती है और इनको विजय करने से मनोजयित्व विकरण भाव प्रधान पर विजय मिलती है।

सिद्धियाँ आठ हैं—(१) अणिमा—छोटा हो जाना, (२) लघिमा—हल्के हो जाना, (३) महिमा—बड़ा हो जाना, (४) प्राप्ति—इष्ट पदार्थों का निकट प्राप्त कर लेना, (५) प्राकम्य—इच्छाओं का पूरा कर लेना, (६) वशित्व—दूसरों को अपने आधीन कर लेना, (७) ईशित्व—उत्पत्ति, स्थिति और नाश

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सामर्थ्य हो जाना, (८) यन्त्रिका भाव सामीप्य—जो कुछ संकल्प उठे वही सिद्ध हो जावे।

कार्य सम्पत लाभ—शरीर का अति मनोहर, कान्तिवान बल वाला व वज्र के समान हो जाना।

मनोजयित्व—शरीर का इच्छानुसार गति पाना अर्थात् मनोवेग हो जाना।

विकरण भाव—करण पना न रहना यानी बिना शरीरादि के इन्द्रियों का इच्छित विषयों का अनुभव कराना।

प्रधान—प्रकृति पर जय अर्थात् कार्य कारण का वश में हो जाना, बिना कारण अथवा किसी भी कारण से इच्छित काम होना।

क्षण और क्षण के क्रम पर संयम करने से विवेकज ज्ञान होता है। विवेकज ज्ञान से जिन दो समान पदार्थों में जाति भेद, लक्षण भेद और देश भेद से भिन्नता निश्चय नहीं होती थी उनमें भी भिन्नता निश्चय हो जाती है और चौथी सब धर्मों का उल्लंघन कर जीवनमुक्त हो जाता है।

ऊपर का वर्णन अक्षरशः सत्य है इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं। अगर आपको विश्वास न हो तो उसका कारण आपको इस विषय से अपरिचित होना है। यदि आप धैर्यपूर्वक इस योग मार्ग पर अग्रसर होंगे तो आपको उत्तरोत्तर इस वर्णन की सत्यता साक्षात् मालूम होती चली जायगी। योगसिद्धि भी एक जन्म का काम नहीं, अगर आप थोड़ा भी इस मार्ग का अनुसरण करेंगे तो वह अनुभव फिर अगले जन्म में भी आपको इसी मार्ग में प्रेरित करेगा और अन्त में आप अवश्य सिद्धि प्राप्त करेंगे। आपका जन्म भी ऐसे ज्ञानवानों के कुल में होगा जहां आपका साधन सरल हो जायगा। कल्याण मार्ग पर चलने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता, यह भगवान् श्रीकृष्ण का वचन है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब हम आपको ऐसे साधन बतलाते हैं जो आप आसानी से इसी जीवन में अल्प काल में ही सिद्ध कर सकते हैं।

किसी शिक्षा से किसी ध्येय पर चित्त लगाने की ताकत को इच्छा-शक्ति कहते हैं। यह इच्छा-शक्ति बड़ी बलवान वस्तु है। बलवान इच्छा-शक्ति पहाड़ को भी एक क्षण में चूर्ण कर देती है। नजर लग जाना, राख अथवा फूँक से रोग चला जाना हाथ पैर पर हाथ या राख फेर देने से जहर उतर जाना यह सब इच्छा शक्ति के ही चमत्कार हैं। यह इच्छा-शक्ति नेत्रों से सञ्चलित की जाती है अर्थात् आंख इस ताकत का इंजन जैसी है। इस इच्छा शक्ति को बढ़ाने और उससे काम लेने के सरल साधन नीचे लिखते हैं। जिस साधन में आपकी रुचि हो उसे सिद्ध कर लें।

१. सेल्फ हिप्नोटिज्म—एक बड़ा साफ शीशा लेकर दक्षिण की ओर किसी चौकी पर इतना ऊंचा रखिये कि आपके चेहरे का प्रतिविम्ब साफ दिखाई दे और आपकी पीठ उत्तर को रहे शीशा में दो फीट के फासले पर सीधे पालती लगाकर बैठ जाइये। प्रतिबिम्ब की बांई आंख की पुतली पर टकटकी लगा कर देखना आरम्भ कीजिए कि आपके आंखों से आकर्षण ताकत निकल कर शीशा वाले आदमी की पुतली में घुसकर उसके दिल और दिमाग पर असर डाल रही है और शीशे वाला आदमी (उसे प्रतिबिम्ब न समझ कर आदमी ही समझिये) अभी २ बेहोश हुआ जाता है। अपने शरीर से ध्यान से ताकत निकाल कर इसी तरह शीशे के आदमी की पुतली से उसके अन्दर भेजते रहिए। जब आंख दुखने लगे तो हाथ से पलक दबाकर पानी निकाल दीजिये और इसी तरह बिना पलक मारे देखिये। इसी तरह १ घंटा रोज अभ्यास कीजिये एक माह के करीब में आपको ऐसा अभ्यास हो जायगा। इसी तरह नित्य करते रहने पर आप किसी न किसी दिन बेहोश हो जायंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुबह इस साधन को एकान्त स्थान या कमरे में करना चाहिए। कमरा साफ हो। उसे बन्द कर लेना चाहिए जिससे कोई बाधा न डाले और यदि लोगों की बातचीत या अन्य आवाज आती हो तो कानों में रूई लगा लीजिये। इससे टकटकी लगाने में आसानी होगी। वरना जरा शोर सुनते ही ध्यान हट जायगा और पलक गिर जायेंगे इसके तथा अन्य इसी प्रकार के साधनों के बाद धूप में निकलकर सूर्य के सामने आंख बन्द करके खड़ा होकर लम्बी २ सांस लेनी चाहिये और यह ध्यान करके कि सूर्य से प्राण शक्ति आ रही है उसे आप सांस के साथ अन्दर सारे शरीर में हाथ पैरों की उंगलियों तक भर रहे हैं। तीन चार मिनट ऐसा करने से जो शक्ति ह्रास आपके इस साधन में हुआ होगा वह पूरा हो जायगा और कमजोरी या थकावट आपको नहीं मालूम होगी। यदि आप ऐसा न करेंगे तो पीले और कमजोर हो जावेंगे।

इस तरह एक दो साल करने पर आपकी आंखों में इतना तेज आ जायगा कि आपकी दृष्टि से कोई दृष्टि न मिला सकेगा। यदि आपको किसी से काम निकालना है तो अपनी बात को दृढ़ता से उससे कहिए और टकटकी लगाकर बिना पलक मारे उसकी आंख में दृष्टि जमा दीजिए और साथ ही यह ध्यान र रहा है कि आप अपनी ताकत से उसे प्रवाहित कर रहे हैं वह रो कि मूर्ति से [illegible]न रहा है और आप जैसे कह रहे हैं वह उसे रवों से तुम्हारे शरी[illegible]सी तरह कर रहा है। आप देखेंगे कि वह बिना थके हुए इस साधन से प्रवाहित होकर अवश्य आपकी बात

(ब) इच्छा शक्ति का असर

उससे कुछ काम कराना—ऊपर बतो[illegible]को बुलाना)—अपने कमरे को [illegible]ो। चौकी के पास बैठकर कागज के [illegible]ह भी नीले डाल दीजिए [illegible]ाओ कि कागज के पास हाथ पहुँच जाव[illegible] काली स्याही से पैसे की फिर कागज पर नजर जमाकर हाथ को धीरे-धीरे कागज को दक्षिण दृढ़ता से ऐसा विचार करो कि कागज तुम्हारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की ओर दीवार पर इतना ऊंचा लगाइये कि उसके सामने जब आप बैठें तो काला बिन्दु आपके नेत्रों की सीध में रहे। अब आप बिन्दु के सामने नीले आसन पर बैठकर उस काले बिन्दु की ओर पूर्व रीति से टकटकी लगाकर देखिवे पलक न झपकें। इस तरह नित्य एक घण्टा अभ्यास कीजिए। फिर अभ्यास बढ़ाते जाइए कुछ दिनों के अभ्यास के बाद बिन्दु छोटा होता चला जायगा और फिर बिल्कुल सफेद हो जायगा फिर कुछ और अभ्यास के बाद वह बिन्दु रंग बिरंगा दिखाई देने लगेगा अब आप इस बिन्दु की ओर टकटकी लगाये हुए जिस मृत आत्मा को बिन्दु पर आने के लिये कहेंगे (मुंह से शब्द न हो) वह आत्मा आकर आपको अवश्य दर्शन देगी। इष्टदेव के दर्शन भी इस तरह किये जा सकते हैं।

एक और साधन आवाहन का सर्किल या चक्र बैठाना है। नीले या काले पोते हुए कमरे में चार-पाँच आदमी नीले या काले आसनों पर एक चौकी के चारों ओर बैठते हैं। चौकी में लोहे की कील इत्यादि न हो चक्र में बैठने वाले तीन से कम और ग्यारह से अधिक न होने चाहिए। चक्र में बैठने वालों को मेस्मेरेजम के आगे बताए जाने वाले साधनों को परिपक्व करके ही चक्र में बैठना चाहिए।

चौकी पर एक मीडियम (कोई लड़का या लड़की र शीशे अन्य शुद्ध हृदय और सीधा आदमी जिस पर आदमी ही सम-आ सके) को बिठाओ और पहिले एक पद स्शरीर से ध्यान से इसमें बात करना मना है। यदि कोई करआदमी की पुतली से तो उसे इशारे ही में ही कर लो इशारेख दुखने लगे तो हाथ से लेना चाहिए फिर सर्किल का सजये और इसी तरह बिना पलक हो मीडियम को बेहोश करे टा रोज अभ्यास कीजिये एक माह हाथ चौकी पर इस तरह रअभ्यास हो जायगा। इसी तरह नित्य अंगूठा दूसरे पुरुष के वशं न किसी दिन बेहोश हो जायंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह विचार करें कि कोई अच्छी आत्मा आवे। और इच्छा-शक्ति को जगाओ कि आत्मा तिपाई में आकर तिपाई को हिला रही है। जब तिपाई हिलने लगे तो जान लो आत्मा आ गई फिर सभापति उससे प्रश्न करे। जो २ सवाल किया जायगा आत्मा उसका मीडियम से उत्तर देगी। सवाल किसी स्वार्थ सम्बन्धी अथवा बुरी भावना से उत्पन्न हुए न हों ताकि कोई बुरी आत्मा आकर मीडियम को हानि न पहुँचा दे। अगर आप इस साधन को करेंगे तो अद्भुत चमत्कार देखेंगे और मृत्यु लोक का हाल मालूम कर सकेंगे। सर्किल में बैठने वालों को जो साधन पक्के कर लेने चाहिये वह यह हैं—

(अ) पास करना—अपने सामने एक बुत एक चौकी पर स्थापित करो। मूर्ति के गले पर अथवा आंख अथवा नाक की जड़ में कोई बिन्दु नियत करके एकटक बिना पलक झपकाये हुए देखो, जब एक घन्टे का अभ्यास पूरा हो जावे तो अपने हाथों को मूर्ति की तरफ बढ़ाओ। उँगलियों के पोरे मूर्ति के पास पहुँच जावें, किन्तु उसको छुओ नहीं। इस तरह हाथ को मूर्ति के ऊपर फिराओ और विचार करो कि तुम्हारे हाथों से आकर्षण ताकत सफेद धुएँ के समान निकल कर मूर्ति में प्रवेश कर रही है और मूर्ति उसमें भरी जा रही है। फिर उल्टा विचार करो कि मूर्ति से आकर्षण ताकत निकल कर तुम्हारे हाथों के पौरवों से तुम्हारे शरीर में आ रही है। इस तरह एक घन्टे बिना थके हुए इस साधन को करो।

(ब) इच्छा शक्ति का असर किसी दूसरी वस्तु पर डालकर उससे कुछ काम कराना—ऊपर बताई हुई चौकी पर कागज रख लो। चौकी के पास बैठकर कागज के ऊपर हाथ इस तरह ले जाओ कि कागज के पास हाथ पहुँच जावे पर कागज न छुए। फिर कागज पर नजर जमाकर हाथ को धीरे-धीरे उठाओ और दृढ़ता से ऐसा विचार करो कि कागज तुम्हारे हाथ के साथ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उठता चला आ रहा है। थोड़े दिन के अभ्यास के बाद तुम देखोगे कि कागज वास्तव में तुम्हारी इच्छा शक्ति के प्रभाव से तुम्हारे हाथ के साथ उठने लगेगा।

फिर एक निर्जन स्थान में एक कोरा मिट्टी का घड़ा लेकर जाओ और घड़े को किसी पेड़ से इस तरह लटकाओ कि घड़ा पृथ्वी से दो गज ऊँचा रहे और मुख घड़े का नीचे की ओर रहे। घड़े से पांच गज दूर खड़े होकर घड़े में कोई निशान नियत करके उसकी ओर टकटकी लगाओ और हाथ घड़े की ओर लम्बे करके दृढ़ता से विचार करो कि तुम्हारी आकर्षण शक्ति तुम्हारे हाथों से घड़े में आ रही है तथा घड़े को खींच रही है और घड़ा तुम्हारी ओर आ रहा है। यदि ऊपर के अभ्यास ठीक कर लिए होंगे तो एक या दो हफ्ते में ही घड़ा तुम्हारे पास आ जायेगा। घड़ा पास आते ही उसमें घूंसा मारो यदि मुक्का घड़े में न लगे तो फिर घड़े को आकर्षण करके और जोर से मारो। इस तरह कुछ ही दिनों में घड़ा चकनाचूर हो जायेगा अतः यह साधन सिद्ध हो गया। अब एक और साधन कीजिये कि एक नया घड़ा मिट्टी का लाकर बन्द कमरे में उपरोक्त चौकी पर उल्टा रख लीजिये, घड़े के ऊपर दोनों हाथ इस तरह रखिये कि आपके दाहिने हाथ के अंगूठे बायें हाथ के ऊपर रहें। घड़े पर दबाव न डालिये आंखें बन्द कर लीजिये और यदि शोर आता हो तो कान में रुई लगा लीजिये जिससे चित्त एकाग्र हो जाय। अब विचार करो कि आपकी आकर्षण शक्ति घड़े में भर रही है और उसे दाएँ से बाएँ को घुमा रही है। यदि वह हिले या धीरे घूमे तो उसे जोर से घूमने की आज्ञा दो उसमें अधिक शक्ति भरो। जब तेज हो जाय तो फिर बाएँ अंगूठे को दाएँ पर रखकर घड़े को बाएँ से दाहिने हाथ की ओर घूमने की आज्ञा करो और विचार कीजिये कि आपकी ताकत इसको दाहिनी ओर घुमा रही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब इस तरह घड़ा घूमे तो हाथ न रखकर केवल रस्सी इस पर रखिये। फिर इसको पकड़ कर रस्सी से ताकत भेज घड़े को घुमाइये, फिर इसको भी हटा दो और आज्ञा करते रहो घुमाने का अभ्यास करो। जब ये सिद्ध हो जाये तो हजारों आदमियों के सामने अपनी आज्ञा से घड़ा घुमाने का चमत्कार दिखा उनको चकित कर सकेंगे।

एक गमले में जौ बो लो, जब वह उग आयें तो गमले में एक एक लकीर बनाकर उन पौधों को दो भागों में बांट दो। पानी उनकी आवश्यकतानुसार दो। किन्तु रोज आधे पौधों को हुक्म दीजिये (इच्छाशक्ति से मुँह से नहीं) कि वह नहीं उगेंगे या सूख रहे हैं या मुर्झा रहे हैं। फिर शेष को हुक्म दो कि वह बढ़ेंगे, वह हरे व तेज निकल रहे हैं। इसी तरह रोज १ या दो घन्टे करो। आप देखेंगे कि आपकी शक्ति इतनी प्रभावशाली होगई है कि आधे पौधे सूखे और बाकी हरे हैं।

(३) मिस्मेरेजम—एक खाली मकान में एक मीडियम को इस तरह बठाओ कि उसकी पीठ उत्तर की ओर मुँह दक्षिण को हो। फिर इसको जमी हुई आवाज में धीरे २ कहो कि तुम ऐसा विचार करो कि मैं बेसुध होजाऊँ और एक मीठी नींद आजाय फिर इसको अपनी बाईं आंख की पुतली पर बिना पलक मारे नजर जमाने का आदेश दो। अब अपनी नजर उसकी बाईं आंख की पुतली में जमा और हाथ बढ़ा एकाग्रमन से विचार करो कि आपकी शक्ति आपके हृदय से उड़ मीडियम के शरीर में घुस रही है और उसको बेसुध कर रही है। जब उसकी आंख में सुस्ती दीख पड़े तो उसके दोनों हाथ के अंगूठे अपने हाथों में थाम लो और अपने हाथों के अंगूठे उसके हाथों में मिला दो। अब ये विचार करो कि मडियम की ताकत उससे निकल कर आरही है और आप उसको मिस्मेरेजम करके शरीर में वापिस भेज रहे हैं। इस तरह तीन-चार मिनट में वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जरूर बेहोश होकर गिरता चला जायगा। जब इस तरह पीछे गिर जाय तो जिस तरह पास करने में आपने मूर्ति पर हाथ फेर कर ताकत भरने का अभ्यास किया था उसी प्रकार अब बेहोश मीडियम पर हाथ फेर करके यह विचार कीजिये कि मीडियम के मस्तक में भरी हुई मेस्मेराइज्ड शक्ति आप उसके सारे शरीर में फैला रहे हैं। और अधिक शक्ति अपनी आंखों और हाथों से भर रहे हैं। जब मीडियम बहुत बेसुध हो जाय तो उसको बुलाइये। यदि न बोले तो और अधिक जोर और बहुत दृढ़ता से आवाज दो। वह अवश्य ही बोलेगा। बेहोशी में मीडियम को हाथ न लगाना चाहिये, हाथ लगाना बड़ी भूल है। अगर वह अवाज देने पर किसी प्रकार न बोले तो किसी लकड़ी से उसका हाथ ऊँचा कर दीजिये और उसको हुक्म दीजिये कि हाथ ऊँचा ही रक्खे। यदि वह हाथ उठाये रहेगा तो समझ लीजिए कि कामयाबी होगई फिर यह आपके प्रश्नों का उत्तर देने लगेगा। यदि हाथ गिरादे तो मीडियम अधिक बेसुध होगया है फिर उसे कुछ चेत में लाने की दूसरी विधि से चेष्टा कीजिये एक कोरा कागज उसके मुंह के सामने ले जाइये और उससे कहिये कि देखो रोशनी दीख रही है जल्दी होश में आ जाओ। ऐसा करने से वह होश में आकर बोलने लगेगा फिर उससे प्रश्न कीजिये। जब मीडियम होश में लाना हो तो पहिले दूर से हाथ फेर शक्ति उसके अन्दर से खींचिये। जब कुछ चैतन्यता आने लगे तो हाथ पकड़कर उसको उठाते जाइये और ताकत उसके अन्दर से खींचने और उसे चैतन्य बनाने का विचार करते जाइये। जब मीडियम होश में आकर शरीर हिलाने लगे तो कुछ उसकी हवा कर दीजिये और पूछ लीजिये कि वह बिलकुल ठीक है। इन साधन के पश्चात् सूर्य से ताकत जरूर लेनी चाहिये।

इन अभ्यासों से आपको इच्छा से प्राण अपने अन्दर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भरने तथा निकलने की ताकत आजायगी। हम बता चुके हैं कि संसार की मूल ताकत प्राण हैं समस्त काम इस ताकत से होते हैं। यदि विचार करने या हाथ पैर चलाते हैं तो हम इसी ताकत का ह्रास करते हैं। किसी आदमी का अन्य आदमी पर यदि अधिक प्रभाव पड़ता है अर्थात् यह सबको प्रिय मालूम होता है तो उसका कारण यही है कि उसमें प्राण ताकत अधिक है। इस ताकत का परिचय आप इन साधनों से कर सकते हैं कमरे में रात्रि को मीठे तेल का चिराग जला लीजिये और एक लाल रंग का परदा लटका दीजिये। परदे के आगे खड़े होकर दोनों हाथों को फैलाकर उँगलियों को इस प्रकार मोड़ लीजिये कि एक हाथ की चारों उँगलियों के पोरे दूसरे हाथ की उँगलियों के पोरों को करीब २ छू जायें फिर मजबूती से विचार करके अपनी सारी ताकत को उँगलियों के पोरों में केन्द्रित कीजिये। अब धीरे २ और ताकत लगाते हुए हाथों को एक दूसरे से अलग कीजिये और नजर को पोरों के बीच में जमा कर देखिये आपको पोरों से निकलते हुए मकड़ी के जाल के समान तार दीख पड़ेंगे। दूसरी विधि यह है कि एक काँच के गिलास में साफ पानी भर लीजिये और उसमें हाथ फेर कर अपनी ताकत भर दीजिये। कुछ देर तक तार भरने के बाद उस पानी को किसी को चखने दीजिये। पानी का स्वाद बदला हुआ जिस तरह गंगाजल का स्वाद अलग होता है मालूम होगा। इस प्रकार राख, पानी, बादाम, मिश्री आदि वस्तुओं पर प्रयोग करके हर प्रकार की बीमारी का इलाज आप कर सकेंगे। यह ध्यान रखिये कि ठंड के रोगों में वस्तुएँ सीधे हाथ से और गर्मी के रोगों में बांयें हाथ से ताकत भरनी चाहिये। अपनी बीमारी भी इसी तरह दूर की जा सकती है। यदि आपका रोगी किसी और देश में है और आप ऊपर की रीति से ताकत भरी चीज इसको सेवन नहीं करा सकते तो ऐसे प्रयोग कर सकते हैं यदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आपके रोगी को गरमी से पैदा हुई बीमारी है तो आप एक तालाब के किनारे जाइये, फिर तालाब के जल पर नजर जमाकर रोगी चित्त ताकत को आकर्षित करके जल में उसका ध्यान कराइये और विचार कीजिये कि जल तत्व रोगी के शरीर में प्रवेश करके इसका दुःख दूर करे फिर अपनी ताकत को मौज पर लाकर ईश्वर से उसके अच्छे होने की प्रार्थना कीजिये। इस तरह रोगी चाहे हजारों मील दूर ही क्यों न हो आपकी ताकत से अवश्य अच्छा हो जायगा। आकाश की लहरें, प्रकाश, रंग, पेड़, गर्मी अथवा रेडियो की लहरें एक सैकिंड में एक लाख ७५ हजार मील चलती हैं लेकिन चित्त शक्ति और प्राणशक्ति [जो आकाश तत्व से भी अधिक सूक्ष्म है] की लहरों का वेग आकाशी लहरों से लाखों गुना अधिक है। इनके लिये दस या बीस हजार मील का फासला न कुछ के बराबर है।

रोगी की मौत का हाल विराट पुरुष अथवा छाया पुरुष सिद्धि से जाना जाता है वह यह साधन हैं—

विराट दर्शन—एक बड़ा-सा शीशा लाइये जिसमें अपना पूरा शरीर खड़ा सर से पैर तक देख सकें। इस शीशे में अपनी नाक की नोक को बिना पलक झपकाये टकटकी लगाकर एक घंटे नित्य देखिये फिर आकाश की ओर आंखें गड़ाकर देखिये, जब आकाश पर सफेद रंग का विराट (आपके शरीर की छाया के समान) दीख पड़े तब समझिये कि साधन सिद्ध हो गया। इसी तरह तीन माह तक विराट को देखिये फिर आप हर मनुष्य यक्ष, पशु, पक्षी का विराट आकाश की ओर देखकर ध्यान करने से ही देख सकेंगे। जो कुछ आगे होना होगा इसका असर पहले विराट पर पड़ता है अतः विराट को देखने से हरएक के भले-बुरे का हाल ज्ञात हो जाता है। यदि रोगी के विराट का सर कटा हुआ अथवा छिन्न-भिन्न दिखाई पड़े तो समझ लो कि रोगी नहीं बचेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छाया पुरुष सिद्ध—रात को नौ बजे एक खाली कमरे में जाकर दरवाजा बन्द कर लजिये। एक चिराग जलाकर अपना तथा दीपक का इस तरह स्थान नियत कीजिये कि यदि आप उत्तर को पीठ करके खड़े हों तो आपके मुँह के सामने दीवार पर आपके वदन का साया साफ २ पड़े। अब आप कपड़े उतार कर बिल्कुल नंगे होकर दीवार के सामने खड़े हो जाइये और साये के बीच को अपनी निगाह का केन्द्र बनाकर बिना पलक मारे टकटकी लगाकर देखिये और यह मन्त्र धीरे २ जपते जाइये—

मन्त्र—ओं ही ब्रह्मणे नमः। यह मन्त्र इस साधन का प्रधान अंग है। इसमें ही मूल शब्द है बाकी सब उसकी स्तुति के लिए है ओम् शब्द हर मन्त्र में लगाया ही जाता है अतः ही को जोर देकर कहिये और इसी तरह ध्यान जमाइये। नित्य खड़े होकर एक-दो साधन को कीजिये। कुछ दिनों बाद टकटकी लगाने के स्थान पर प्रकाश दीखने लगेगा और फिर यह प्रकाश बढ़कर सूर्य के समान तेज वाला हो जायगा। इस तेज को देखकर आप कदापि भयभीत न हूजिये यह आपके छाया पुरुष का तेज है। उर्दू में इसको हमजाद कहते हैं। यह आपको कोई हानि न पहुँचावेगा। आपका भय ही आपको हानि करदे तो दूसरी बात है। हमजाद आप ही अकारण भयभीत होकर गायब हो जाता है लेकिन जिसने भय न करके छाया पुरुष को सिद्ध कर लिया अर्थात् जिसने हमजाद को तावे कर लिया तो समझिये उसने अलाउद्दीन की जादू की लालटेन प्राप्त करली। छाया पुरुष वास्तव में ऐसी ही चीज है किन्तु जब यह पहले पहल प्रकट होता है तो साधक को अपना तेज दिखाकर भयभीत करता है। यदि आपको भय प्रतीत हो तो उपरोक्त मन्त्र को ही मन पर जोर दे देकर जप करते जाइये। यह मन्त्र छाया पुरुष सिद्ध करने की (हमजाद को तावे करने की) कुञ्जी है। फिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ दिन की साधना के बाद छाया पुरुष की प्रसन्न मूर्ति आपके सामने उपस्थित हो जावेगी। यह मूर्ति नाना प्रकार के रंग बदलेगी किन्तु शान्तिप्रिय ही मालूम होगी फिर कम से कम एक वर्ष इस साधन को और करते रहिये तो यह छाया पुरुष आपको तीनों काल का हाल ज्ञात करावेगा। जिस चीज की आप इच्छा करेंगे वह फौरन लाकर उपस्थित करेगा। आपके मरने से छः महीने पहले इस छाया पुरुष का सिर कट जायगा। इस तरह आपको अपनी मृत्यु का हाल छः माह पूर्व ज्ञात हो जावेगा। पाठक ! इसे कोरी गप्प न समझें यह साधन जरा भी कठिन नहीं है और इसकी मन्त्र रूप कुञ्जी हमने आपके हवाले कर दी है। विश्वास रखकर इस साधन को कीजिये और इसका चमत्कार देखिये।

सूर्य्योपासना—सूर्य्योपासना से समस्त भूमण्डल का ज्ञान होता है, अन्धकार नष्ट होकर ज्ञान का प्रकाश होता है। थोड़े दिन के साधन के बाद आपको अपने भीतर प्रकाश प्रतीत होने लगेगा, काम क्रोध को भस्म कर देने की ताकत शीघ्र प्राप्त हो जायेगी। सब से बड़ी बात इस साधन की यह है कि इसमें अन्य छाया पुरुष मिस्मेरेजम आदि साधनों की तरह ताकत का खर्च नहीं होता, ताकत और उल्टी बढ़ती है। सूर्य तो समस्त ताकत का भंडार है चराचर जगत् उसी से ताकत संचय करता है। इस साधन से आप भी अपार ताकत आकर्षित कर सकेंगे। इस साधन में बहुत धीरे-धीरे बढ़ना चाहिए वरना नेत्रों को हानि पहुँचने की संभावना है। आप रोटी सहती २ आग पर सेकते हैं बिना देख-भाल मट्टी में डाल देने से तो जले बिना नहीं रहेगी। सहती २ आग (गर्मी) पाकर ही फल सुन्दर और रंग-बिरंगे होकर पकते हैं।

सूर्य का बीज मन्त्र यह है—'ओ३म् श्री आंग।' सूर्य भगवान् इसी मन्त्र से आकर्षित होते हैं प्रातःकाल स्नान आदि से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवृत्त होकर सूर्य के सामने खड़े हो जाइये और नेत्र खोलकर सूर्य की ओर टकटकी लगाइये मंत्र को धीरे-धीरे जपते जाइये होठ और जवान हिलें मंत्र का जपन हृदय पर रहे। यह ध्यान बनाये रखिये कि आप सूर्य से ताकत आकर्षित कर रहे हैं। आपका सारा शरीर (रोम २) उस ताकत से भर रहा है आपका हृदय प्रकाशित हो रहा है आपके शरीर में स्थित चक्र उस ताकत को इकट्ठा करके पूर्ण हो रहे हैं फिर मन्त्र पर तथा सूर्य पर ही ध्यान को जमाइये पहिले पहल दो चार मिनट ही आंख खोलकर रहिए फिर आंख बन्द करके पलकों में होकर देखिये फिर पीठ फेरकर आकाश की ओर देखिये इससे नेत्रों को शांति और शीतलता मिल जायगी रात्री को चन्द्रमा की ओर देखकर आकाश देखा कीजिए इस प्रकार धीरे २ अभ्यास बढ़ाते जाइये और कम से कम एक घंटा नित्य आंखें खोलकर टकटकी लगाने का अभ्यास डाल लीजिये। पहिले-पहिल सूर्य तेजवान् प्रतीत होता है फिर जब आंखें सहन कर लेती हैं तो निस्तेज होता है जब आँखें सहन नहीं कर सकतीं तो आंखों में पानी भर जाता है और सूर्य अन्धकार या एक काले बिन्दु से ढक जाता है तब तो नेत्र मूंद लेना चाहिए और नेत्र मूंद कर ही देखना चाहिए तथा मंत्र जाप व शक्ति आकर्षण का ध्यान भी करते रहना चाहिए। यह अभ्यास ज्यों २ बढ़ेगा त्यों २ आप तेजस्वी और बुद्धिमान होते जावेंगे। ऐसे योगी अब भी हैं जिन्होंने चौदह चौदह साल पर्यन्त सूर्योदय ये सूर्यास्त तक खड़े होकर निरन्तर टकटकी लगाकर सूर्य को देखा है। ऐसे योगी की दृष्टि पड़ जाने या शरीर से छू जाने भर से ही समाधि (बेहोशी) प्राप्त हो जाती है।

चन्द्रोपासना—सूर्योपासना रविवार से और चन्द्रोपासना सोमवार से आरम्भ करनी चाहिए। चन्द्रोपासना से शीतलता और आनन्द प्राप्त होता है। यह साधन सरल और भय रहित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है इसमें एक पाख में नौ बजे रात्रि को और दूसरे पाख में तीन बजे रात्रि को चन्द्र की ओर टकटकी लगाकर 'हंस' का उच्चारण त्रिकुटी (भौंओं के बीच) में करना होता है। ऐसा ध्यान दीजिये कि पूर्ण चन्द्र उदय हो रहा है। इस साधन में गर्म वस्तुओं का त्याग कर देना होता है। श्वेत वस्त्र ही धारण करने और श्वेत वस्तु जैसे चावल, मूली, दही, दूध आदि खाने होते हैं तथा मौन रहना या कम बोलना और शान्त चित्त रहना होता है। इस साधन से आप शीतलता, आनन्द और पवित्रता का अनुभव करेंगे। आपका शरीर निर्मल और कान्तिवान होता जायेगा। काला कोयला चन्द्रमा के प्रभाव से ही हीरा बनता है। जल इसी की शक्ति से तरंगें लेता और मौज पर आता है। चन्द्रोपासना से समस्त तारागणों का ज्ञान हो जाता है।

योग में शक्ति सञ्चय वही कर सकता है जोकि अथक श्रम करके निरन्तर अभ्यास करे। जो इतनी कठिनाइयां न उठा सके उनको लाभ कैसे हो ? आजकल मोटर, रेल, तार, रेडियो, ट्राली आदि मनुष्यों ने परिश्रम करके निकाले, और हर मनुष्य उनसे लाभ उठा सकता है। योग के सम्बन्ध में लोग इस तरह आक्षेप किया करते हैं। साधन का दरवाजा तो हर एक के लिये खुला है। साधन रहित मनुष्य भी योगी की शक्ति से लाभ उठा सकते हैं, इसके सञ्चय से दिव्य चक्षु, अर्जुन के विराट रूप दर्शन आदि जैसे अनेक उदाहरण हैं। इसके अलावा प्राचीन योगियों ने इस हेतु को पूरा करने के लिये मन्त्र शास्त्र का आविष्कार किया था। एक विशेष मन्त्र के एक विशेष रीति से उच्चारण मात्र से ही एक विशेष शक्ति आ जाती थी परन्तु अब उसका केवल नाममात्र ही बाकी रह रहा है तान्त्रिकों ने थोड़े से ऐसे यन्त्र निकाले हैं कि जिनमें विशेष शक्ति होती है। पाठकों के लाभार्थ यहां एक यन्त्र देकर इस अध्याय को समाप्त करते हैं।

यन्त्र बीस का—यह यन्त्र सब यन्त्रों में श्रेष्ठ है। रविवार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चतुर्दशी को अष्टगन्ध से भोज-पत्र पर लिखकर धूप दिखा पाग व टोपी में रखिये या भुजा में बांधिये। राज-दरबार या जिस स्थान में आप होंगे आपका सब मान करेंगे। आपको हर काम में सफलता मिलेगी।

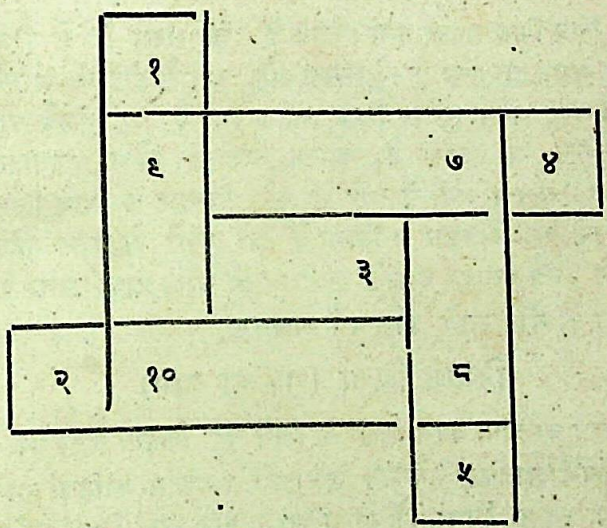

अष्टगन्ध—श्वेत चन्दन, लाल चन्दन, केसर, कस्तूरी, गोंइला, कपूर, गोरोचन, हींगलू।

मुद्रक—प्रताप प्रिंटिंग प्रेस, लाहौरी गेट, दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बांसुरी गाइड

बांसुरी पर उँगली का चलाना और धुन निकाल कर सुरीली आवाज सुनना, जिसे सुनकर राधा भी कृष्ण के पास दौड़ी चली आती थी। आप भी बांसुरी की मधुर धुन बजाकर मुरली वाले बन जायेंगे। कीमत ३) तीन रुपये, डाकखर्च अलग।

आधुनिक चित्रकारी शिक्षा

चित्र किस प्रकार बनाये जाते हैं, यह सरल ढंग से चित्रों द्वारा समझाया गया है। पेन्सिल और ब्रुश से कोई भी आदमी किस तरह अनेक सुन्दर चित्र बना सकता है यह इसके पढ़ने से तुरन्त आ जाता है, अनेक तरह के स्कैच, दृश्यावली (सीनरी) पशु-पक्षियों के बारे में पूरे विस्तार के साथ लिखी है। इसे ऐसे चित्रकार ने लिखा है जो पत्ती से लेकर महलों तक के चित्र बनाकर हजारों रुपया प्रति मास प्राप्त करता है। कीमत ३) तीन रुपये, डाकखर्च अलग।

मिमारी शिक्षा (राज का काम)

राज का काम करने वालों के लिये यह किताब बड़ी जरूरी है। इसमें आजकल नये-नये डिजाइनों के मकान, कोठियां बंगले बनाना, उन पर चित्रकारी करना आदि पूरी बातें चित्रों सहित समझाई गई हैं। पुस्तक ४०० डबल साइज के पृष्ठों की होते हुए भी कीमत १०) दस रुपये, डाकखर्च अलग।

बड़ा सामुद्रिक शास्त्र

इस पुस्तक में संसार भर के स्त्री पुरुषों के हाथ पैर और मस्तक की रेखाओं द्वारा उनके भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान बड़ी सुगमता पूर्वक लिखा गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५) पांच रुपया, डाकव्यय सहित।

गुप्ता एण्ड को०, थोक पुस्तकालय, खारी बावली, दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुगन्धित तेल व इत्र बनाना

अनेक प्रकार के देशी विलायती इत्र, ओटो बादाम रोगन हेयर मिक्शचर शैम्पू, लिपस्टिक, माथे के बिन्दी, कोल्डक्रीम, वैनिशिंग स्नफेस पाउडर, नाखून पालिश आदि सौन्दर्यवर्द्धक वस्तुएं बनाने वाली शिक्षा इस किताब में लिखी गई है। कीमत ३) तीन रुपये, डाकखर्च अलग।

परफ्युमरी मास्टर

बाजार में धड़ाधड़ बिकने वाले उत्तमोत्तम सभी सुगन्धित तेलों और भूतनाथ, हिम कल्याण, कामनियां आयल आदि लाखों रुपये के बिकने वाले पेटेन्ट तथा शास्त्रीय तेलों के बनाने के असली नुस्खे और पूर्ण विधि इस पुस्तक में छाप दी है। सबसे बढ़कर तो यह बात है कि तेल रंगने के देशी रंग व तेलों को सुगन्धित बनाने वाली सुगन्धियां सेंट बनाना भी इसमें बताया गया है। कीमत ३) तीन रुपये, डाक खर्च अलग।

साबुन तेल शिक्षा

पुस्तक क्या है यथा नाम तथा गुण है। इस पुस्तक में बीसियों प्रकार के देशी तथा विलायती रंगदार सुगन्धित तेल साबुन बनाने की समस्त गुप्त विधि लिखी गई है जिन्हें पढ़कर सभी मनुष्य घर बैठे बढ़िया तेल व साबुन बनाकर ८-१० रुपया रोजाना कमा सकते हैं। इसमें ठंडी व गर्म रीति से साबुन बनाना जैसे—कारबोलिक सोप, बाल उड़ाने का साबुन, नीमसोप आदि साबुन के खिलौने आदि बनाने की सरल रीति लिखी है। पृष्ठ १५० कीमत ३) तीन रुपये, डाकखर्च अलग।

मंगाने का पताः—

गुप्ता एण्ड कम्पनी, खारी बावली, दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेकरी का व्यापार

बटर बिस्कुट, अण्डों वाले बिस्कुट, डबल रोटी, नान खताई, ट्राफी बनाना, चाकलेट बनाना, मिल्करोज बनाना आदि बहुत सी चीजें बनाना इसमें बताया गया है। बाजार की गन्दी चीजें न मंगाकर घर में बनी खाइए। कीमत ३) डाक० अलग।

अचार चटनी मुरब्बा बनाना

इस किताब में अचार, चटनी, मुरब्बे इत्यादि बनाने का विस्तार से वर्णन किया गया है। आम, नीबू, मिर्च, शलजम आदि का अचार कई तरह से डालने का ढंग, आम, आंवला, सेव, हरड़, बेलगिरी, गुलकन्द आदि सभी प्रकार के मुरब्बे बनाना और आम, नाशपाती, गोभी आदि अनेक प्रकार की चटनी बनाना इसमें सरलता से लिखा है। कीमत ३) रुपये डाक व्यय अलग।

अपटूडेट फैशनबुक

अनेक प्रकार के नये-नये फैशनों के चित्र आर्ट पेपर पर छपवाये गये हैं। इसको दिखाकर ग्राहक की पसन्द का कपड़ा आप सीं सकते हैं। तथा कपड़ा सिलवाते समय आप अपने पसन्द की काट छांट बता सकते हैं। इस फैशन बुक में बच्चे, स्त्री, पुरुषों आदि के अमेरिकन इंगलिश व फ्रैंचकट, अलग-अलग चित्रों में दिखायें गये हैं। थोड़ी सी मेहनत करने से स्वयं घर में भी आप कपड़े सीं सकते हैं घरेलू व दर्जियों के बड़े काम की पुस्तक है। कीमत ४) चार रुपये, डाक व्यय अलग।

बुनाई शिक्षा

इस पुस्तक का हर घर में होना आवश्यक है, क्योंकि इसमें बच्चों की बनियान, टोपी, घेरदार कोट, बूट, जांघिया, स्वेटर, फ्राक, जम्फर, वास्कट, दस्ताने, जुर्राब, ब्लाउज, मफलर, शाल आदि कितनी ही वस्तुएँ बुनने के ढंग सचित्र समझाये गए हैं। कीमत ५) पांच रुपया डाक व्यय अलग।

पता—गुप्ता एण्ड को०, खारी बावली, दिल्ली-६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

आवश्यकता है चिह्न फण्ड एवं
ऑर्डनेंस कम्पनी के लिये दो फील्ड आफीसर
और तीन तकनीशियन मास्टर
सम्पर्क करें।

29-8-89 प्रातः 9 बजे 91 रेल गाड़ी
नई दिल्ली - 110015
(बी - 31968)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh
CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Gilti Roll

मगाने का पता

जर्जि एण्ड कम्पनी

थोक प्रस्तकालय

खारी बावली दिल्ली-६

दहीसी जाद ① सेन्ट्रेक्स ② जाद

R.S.

ब ३.। इन्द्र जा ③ 5555

Z 51

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh